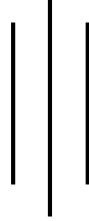


शोध निर्देशक  
श्री चन्देश्वर लाल कर्ण  
उप-प्रध्यापक

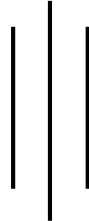
‘माइतघर उपन्यासमा पाइने सामाजिक भाषिक पक्षको अध्ययन’



त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्काय  
रा.रा. बहुमुखी क्याम्पसको स्नातकोत्तर तह  
नेपाली विषयको दोस्रो वर्षको दसौं (५१०-१) पत्रको पूरक प्रयोजनको लागि  
प्रस्तुत



शोध-प्रबन्ध



शोधार्थी

राजु राना मगर  
रा.रा. बहुमुखी क्याम्पस  
नेपाली शिक्षण विभाग जनकपुर  
त्रि.वि. द.नं. ९-२-४१२-१६-२००७  
परीक्षा रोल नं. १४०१४८/२०६७  
२०७१

## शोध निर्देशकको मन्तव्य

एम. ए. नेपाली द्वितीय वर्षका छात्र राजु रानाले माइतघर उपन्यासमा पाइने सामाजिक भाषिक पक्षको अध्ययन शीर्षकमा केन्द्रीत रहेर मेरो निर्देशनमा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध तयार पारेका हुन् । निज विद्यार्थीको मेहनत र लगनशीलताले तयार पारिएको यस शोधप्रबन्ध प्रति म पूर्ण सन्तुष्ट छु । अतः आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि सिफारिस गर्दछु ।

मिति:

(चन्द्रेश्वरलाल कर्ण)

शोध निर्देशक

त्रि.वि., रा.रा.व. क्याम्पस

नेपाली शिक्षण विभाग

जनकपुर

## कृतज्ञताज्ञापन

रा.रा.व. क्याम्पस जनकपुर नेपाली शिक्षण विभाग अन्तर्गत स्नातकोत्तर तह द्वितीय वर्षको दसौं पत्र (५१०-१) को पूरक प्रयोजनका लागि श्रद्धेय गुरु श्री चन्द्रेश्वरलाल कर्णको निर्देशनमा रही माइतघर उपन्यासमा पाइने सामाजिक भाषिक पक्षको अध्ययन शीर्षकको शोधप्रबन्ध तयार पारिएको हो । प्रस्तुत शोधप्रबन्ध तयार पार्ने क्रममा आफ्नो कार्यव्यस्तताका बावजूद पनि अमूल्य समय खर्चिएर मलाई शोध कार्यमा अभिप्रेरित गर्नुका साथै वस्तुगत निर्देशन दिनु हुने आदरणीय गुरुवर श्री चन्द्रेश्वरलाल कर्ण प्रति कृतज्ञताज्ञापन गर्दछु । मलाई यस शोध प्रस्तावलाई विभागीय स्वीकृति प्रदान गरी शोधकार्य गर्ने सुवर्ण अवसर प्रदान गर्नु भएकोमा विभागीय प्रमुख परम आदरणीय गुरु श्री चन्द्रेश्वर लाल कर्ण एवम् अनुसन्धान समितिका संयोजक समेत रहनु भएको उहाँ प्रति पनि अभारी छु । शोध शीर्षकको छनौट एवम् सो को तयारीका लागि उपयुक्त शैली तथा उपयोगी सामग्रीहरूको अध्ययन गरी सुमार्ग निर्देशन गरि दिनु हुने गुरु श्री चन्द्रेश्वर लाल कर्ण ज्यू प्रति पुनः कोटी कोटी कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु । शोधप्रबन्ध तयार पार्ने क्रममा सहयोग पुऱ्याउनु हुने नेपाली शिक्षण विभागका सम्पूर्ण श्रद्धेय गुरु ज्यूहरू प्रति समेत आभार व्यक्त गर्दछु ।

यसै गरी शोध सम्बन्धमा अनवरत रूपले मेरो जीवनलाई अग्रगति दिनु हुने तथा आर्थिक र व्यावहारिक पक्षको सामना गर्नु हुने परम पूज्य पिता श्री दिल बहादुर राना मगर तथा ममतामयी माता श्रीमती शोभा कुमारी राना मगर को चिर ऋणी छु । साथै यस शोध लेखनको सिलसिलामा आवश्यक सामग्री संलनमा सहयोग पुऱ्याउने स्नेही भाई अमृत मगर, डिल्ली रमण अधिकारी गीता मगरलाई पनि धन्यवाद नदिई रहन सकिदैन । शोध कार्यका सन्दर्भमा नै अध्ययन कार्यलाई सहयोग पुऱ्याउने तथा शोधप्रबन्ध लेखनमा हौसला प्रदान गर्नु हुने मित्र एवम् मेरो साथीहरू रामबाबु तथा उत्तम प्रति धन्यवाद व्यक्त गर्दछु । यस शोधप्रबन्धलाई शुद्धसँग यथाशीघ्र टंकण गरीदिनु हुने श्री राम कम्प्युटर प्रिन्टर्स, जनकपुरधामका सुशिल कुमार ठाकुरलाई पनि हार्दिक धन्यवाद दिन चाहन्छु । यसै गरी मेरो शुभचिन्तक तथा शुभेच्छुकहरूको सदा अभारी छु । अन्तमा प्रस्तुत शोध प्रबन्धको मूल्याङ्कनका लागि रा. रा. व. क्याम्पस नेपाली शिक्षण विभाग जनकपुरधाम समक्ष पेश गर्दछु ।

मिति

राजु राना मगर

स्नातकोत्तर तहक, दोस्रो वर्ष  
रा.रा.व. क्याम्पस जनकपुरधाम  
सि.नं. १४०१४८/२०६७

## विषय सूची

### अध्याय-एक

#### शोध परिचय

|                          | पृष्ठ |
|--------------------------|-------|
| १.१ शोध शीर्षक           | १     |
| १.२ शोधपत्रको प्रयोजन    | १     |
| १.३ विषय परिचय           | १     |
| १.४ समस्या कथन           | २     |
| १.५ शोधकार्यको उद्देश्य  | ३     |
| १.६ पूर्वकार्यको समीक्षा | ३     |
| १.७ अध्ययनको औचित्य      | ४     |
| १.८ शोधकार्यको सीमाङ्कन  | ५     |
| १.९ शोधविधि              | ५     |
| १.१० शोधकार्यको रूपरेखा  | ५     |

### अध्याय-दुई

#### साहित्यकार लैनसिंह वाङ्देलको साहित्यिक रचना धार्मिकताको परिचय

|   |    |
|---|----|
| २. पृष्ठभूमी  | ७  |
| २.२ मृत्यु  | ८  |
| २.३ पारिवारिक पृष्ठभूमी                             | ८  |
| २.४ वाल्यकाल र शिक्षादीक्षा                         | ८  |
| २.५ लैनसिंह वाङ्देलको शारीरिक व्यक्तित्व तथा स्वभाव | ९  |
| २.६ चित्रकार व्यक्तित्व                             | १० |
| २.७ लैनसिंह वाङ्देलको शारीरिक तथा स्वभाव            | १० |
| २.८ साहित्य सृजनाको प्रेरणा र प्रभाव                | ११ |
| २.९ उपन्यासकारका व्यक्तित्व                         | ११ |
| २.१० वाङ्देलका औपन्यासिक कृतिहरू                    | १२ |

|   |    |
|---|----|
| २.११ लैनसिंह वाडदेलका औपन्यासिक प्रवृत्तिहरू              | १५ |
| २.११.१ सामाजिक यथार्थवादी प्रवृत्ति                       | १५ |
| २.११.२ प्रवासी नेपालीहरूको चरित्र चित्रण गर्ने प्रवृत्ति  | १६ |
| २.११.३ प्रवृत्तिको यथार्थ र सुन्दर चित्रण गर्ने प्रवृत्ति | १७ |
| २.११.४ मानवतावादी प्रवृत्ति                               | १७ |
| २.११.५ कारुणिकताको चित्रण गर्ने प्रवृत्ति                 | १८ |
| २.११.६ पात्रको मनोविश्लेषण गर्ने प्रवृत्ति :              | १९ |
| २.११.७ अतियथार्थवादी प्रवृत्ति                            | १९ |
| २.११.८ निराशावादी जीवन दृष्टि प्रस्तुत गर्ने प्रवृत्ति    | २० |
| २.११.९ जीवनीपरक उपन्यासमा लेख्ने प्रवृत्ति                | २१ |
| २.११.१० उपन्यासमा चित्रकारी भाषाको प्रयोग गर्ने प्रवृत्ति | २१ |
| २.११.११ नयाँ नयाँ शैलीका प्रयोग गर्ने प्रवृत्ति           | २१ |
| २.१२ निष्कर्ष   | २२ |

### अध्ययन-तीन

#### नेपाली उपन्यासको विकास क्रममा लैनसिंह वाडदेलको स्थान

|   |    |
|---|----|
| ३.१ पृष्ठभूमी   | २४ |
| ३.१.१ प्राथमिक काल (१८२७ देखि १९४५ सम्म)                      | २५ |
| ३.१.२ माध्यमिक काल (१४४६-१९९०)                                | २५ |
| ३.१.३ आधुनिक काल (१९९१ देखि हाल सम्म)                         | २६ |
| ३.२ आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा देखापर्ने विभिन्न धाराहरू | २७ |
| ३.२.१ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारा                             | २७ |
| ३.२.२ स्वच्छन्दतावादी धारा                                    | २७ |
| ३.२.३ सामाजिक यथार्थवादी धारा                                 | २८ |
| ३.२.४ ऐतिहासिक यथार्थवादी धारा                                | २८ |
| ३.२.५ अति यथार्थवादी धारा                                     | २८ |
| ३.२.६ आलोचनात्मक यथार्थवादी धारा                              | २९ |
| ३.२.७ नारीवादी धारा   | २९ |

|  |    |
|--|----|
| ३.२.८ मनोविश्लेषणवादी धारा                   | २९ |
| ३.२.९ विसङ्गतीवादी धारा                      | ३० |
| ३.२.१० अस्तित्ववादी धारा                     | ३० |
| ३.२.११ प्रगतिवादी धारा                       | ३० |
| ३.२.१२ मिथकीय धारा                           | ३१ |
| ३.२.१३ प्रयोगवादी धारा                       | ३१ |
| ३.२.१४ नवचेतनावादी धारा                      | ३२ |
| ३.३ वाङ्मयका औपन्यासिक यात्राका चरणहरू स्थान | ३२ |
| ३.३.२ द्वितीय चरण (२००६-२०२२ सम्म)           | ३३ |
| ३.३.३ तृतीय चरण (२०२३-हालसम्म)               | ३४ |
| ३.३.४ निष्कर्ष                               | ३४ |
| ३.४ साहित्यका अन्य विधाका तुलनामा उपन्यास    | ३५ |
| ३.४.१ उपन्यास र कथा                          | ३५ |
| ३.४.१.१ समानता                               | ३६ |
| ३.४.१.२ असमानता                              | ३७ |
| ३.४.२ उपन्यास र आत्मकथा                      | ३८ |
| ३.४.२.१ समानता                               | ३८ |
| ३.४.२.२ असमानता                              | ३८ |
| ३.४.३ उपन्यास र नाटक                         | ३९ |
| ३.४.३.१ समानता                               | ३९ |
| ३.४.३.२ असमानता                              | ३९ |
| ३.४.४ उपन्यास र महाकाव्य                     | ४१ |
| ३.४.४.१ समानता                               | ४१ |
| ३.४.४.२ असमानता                              | ४१ |
| ३.५ निष्कर्ष                                 | ४२ |

## अध्याय-चार

### “उपन्यासको सैद्धान्तिक परिचय”

|      |  |    |
|------|--|----|
| ४.१  | उपन्यासको परिचय                                  | ४३ |
| ४.२  | “पूर्वीय मान्यतामा उपन्यासको व्युत्पत्तिगत अर्थ” | ४४ |
| ४.३  | उपन्यासका परिभाषाहरू                             | ४५ |
| ४.४  | उपन्यासका तत्वहरू                                | ४८ |
| ४.५  | कथानक  | ४८ |
| ४.६  | चरित्र वा पात्र विधान                            | ४८ |
| ४.७  | संवाद वा कथोपकथन                                 | ४९ |
| ४.८  | अन्तर्द्वन्द्व                                   | ५० |
| ४.९  | परिवेश   | ५० |
| ४.१० | उद्देश्य   | ५० |
| ४.११ | कौतुहलता   | ५१ |
| ४.१२ | दृष्टिविन्दु                                     | ५१ |
| ४.१३ | भाषाशैली   | ५२ |
| ४.१४ | प्रतीक र बिम्बाविधान                             | ५२ |
| ४.१५ | निष्कर्ष   | ५३ |

## अध्याय-पाँच

### “माइतघर उपन्यासको औपन्यासिक मानक तत्वका आधारमा विश्लेषण”

|       |  |    |
|-------|--|----|
| ५.१   | उपन्यासकार लैनसिंह वाड्देलको संक्षिप्त परिचय | ५४ |
| ५.२   | ‘माइतघर’ उपन्यासको विश्लेषण                  | ५५ |
| ५.२.१ | संरचना                                       | ५६ |
| ५.२.२ | कथानक/कथावस्तु                               | ५६ |
| ५.२.३ | चरित्र चित्रण                                | ५९ |
| ५.२.४ | पर्यावरण/परिवेश                              | ६४ |
| ५.२.५ | दृष्टिविन्दु                                 | ६५ |
| ५.२.६ | सारवस्तु                                     | ६६ |

|   |    |
|---|----|
| ५.२.६.१ असफल प्रेमलाई दर्साउछ                 | ६६ |
| ५.२.६.२ करूणा पक्ष वा त्रासद पक्षलाई दर्साउनु | ६६ |

### अध्याय-छैठौं

#### सामाजिक, भाषिक, सैद्धान्तिक आधारमा माइतघर उपन्यासको निरूपण

|   |    |
|---|----|
| ६.१ परिचय   | ६८ |
| ६.२ 'माइतघर' उपन्यासका प्रयुक्त समाज  | ६९ |
| ६.३ वर्गीय आधारमा 'माइतघर' उपन्यासका पात्रहरूले प्रयोग गरेको सामाजिक भाषाका विश्लेषण    | ७१ |
| ६.३.१ मध्यम वर्गीय पात्रहरूको सामाजिक भाषिक विश्लेषण                                    | ७१ |
| ६.३.२ निम्न वर्गीय पात्रहरूको भाषिक विश्लेषण  | ७४ |
| ६.३.३ उमेरका आधारमा 'माइतघर' उपन्यासमा रहेका पात्रहरूको वर्गीकरण                        | ७६ |
| ६.३.४ लैङ्गिक आधारमा 'माइतघर' उपन्यासका पात्रहरूले प्रयोग गरेको सामाजिक भाषाको विश्लेषण | ७८ |
| ६.३.५ शब्द भण्डारका दृष्टिले भाषाको लैङ्गिक विश्लेषण                                    | ८० |
| ६.६. शैक्षिक अवस्थाका आधारमा 'माइतघर' उपन्यासको भाषिक विश्लेषण                          | ८१ |
| ६.७ निष्कर्ष  | ८६ |

### अध्याय-सात

#### उपसंहार र निष्कर्ष

|                        |    |
|------------------------|----|
| ७.१ उपसंहार            | ८७ |
| ७.२ निष्कर्ष           | ८९ |
| ७.३ सम्भाव्य शीर्षकहरू | ९१ |

### सन्दर्भ ग्रन्थसूची

## संक्षेपीकृत शब्दसूची/चिन्ह सूची

| संक्षिप्त रूप | अर्थ                         |
|---------------|------------------------------|
| एम. ए.        | :- मास्टर अफ आर्ट्स          |
| क्र.सं.       | :- क्रम संख्या               |
| त्रि.वि.      | :- त्रिभुवन विश्वविद्यालय    |
| नं.           | :- नम्बर                     |
| पृ.           | :- पृष्ठ                     |
| प्रा.         | :- प्राध्यापक                |
| रा.रा.व.      | :- रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी |
| वि.सं.        | :- विक्रम सम्वत्             |
| सा.प्र.       | :- साभ्ना प्रकाशन            |
| वि.पी.        | :- विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला |
| ने.शि.वि.     | :- नेपाली शिक्षण विभाग       |

### चिन्हसूची:

|               |                                    |
|---------------|------------------------------------|
| संक्षिप्त रूप | .....केही अंश छुटको                |
| “ ”           | : प्रत्यक्ष कथनको कुरा             |
| -             | .....दुई शब्दहरूलाई जाडनु पर्दा    |
| १             | .....हर्ष, विस्मात, घृणा, आचर्य मा |
|               | .....वाक्य पूरा भएपछि              |

## अध्याय-एक

### शोध प्रबन्धको परिचय

#### १.१. शोधशीर्षक :

प्रस्तुत शोधपत्रको शीर्षक 'माइतघर' उपन्यासमा पाइने सामाजिक, भाषिक पक्षको विश्लेषात्मक अध्ययन' रहेको छ ।

#### १.२. शोधपत्रको प्रयोजन :

प्रस्तुत शोधपत्र त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्काय अन्तर्गत स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्ष नेपाली विषयको दसौ पत्र ५१०-१ को आंशिक परिपूर्तिका प्रयोजनका लागि तयार गरिएको छ ।

#### १.३. विषय परिचय :

प्रस्तुत शोधको विषय 'माइतघर' उपन्यासमा पाइने सामाजिक, भाषिक पक्षको विश्लेषात्मक अध्ययन हो । यस शोध प्रबन्धमा समाजप्रति सचेत भूमिका निर्वाह गर्ने सामाजिक उपन्यासकारका रूपमा परिचित लैनसिंह वाङ्देलका साभा प्रकाशन पुलचोक ललितपुरबाट प्रकाशित 'माइतघर' (२००५) उपन्यासका सामाजिक, भाषिक अध्ययन र विश्लेषण गरिएको छ । वाङ्देलको जन्म वि.सं. १९८० भारतको दार्जलिङमा भएको थियो भने मृत्यु वि.सं. २०५९ मा भएको थियो ।

लैनसिंह वाङ्देल चित्रकारिता र उपन्यासकारिताको क्षेत्रमा बहुचर्चित व्यक्तित्व थिए । उनको साहित्य तर्फको अत्यन्तै ठूलो योगदान रहेको छ । उनको 'मुलुक बाहिर' (२००४), 'माइतघर' (२००६), 'लङ्गडाको साथी' (२००८) र 'रेम्ब्रान्ट' (२०२३) गरी जम्मा चारवटा उपन्यास लेखेका छन् ।

#### १.४. समस्याकथन :

उपन्यासकार लैनसिंह वाङ्देल साहित्य जगतका बहुमुखी प्रतिभा हुन् । नेपाली साहित्यका विविध विधाहरू : उपन्यास, नियात्रा, जीवनी, अनुवाद, कथा आदिमा सशक्त

रूपमा कलम चलाउन सफल रहे । उनमा रहेको सामाजिक परिवेश साहित्यमा पनि परेको हुन्छ । साहित्यका विभिन्न विधामा समाजमा रहेको भाषा भाषिकाको छायाँ साहित्यमा देखिन्छ । समाजको सामाजिक, आर्थिक, परिवेशका साथै वर्ग, जाति, पैसा, लिङ्ग, उमेर, शैक्षिक अवस्था, सामाजिक भेद आदिको सङ्गमको रूपमा 'माइतघर' उपन्यास रहेको छ । 'माइतघर' उपन्यासको सामाजिक भाषिक अध्ययन गर्दा निम्नलिखित मूलभूत समस्या तेस्रिएका छन् ।

अतः ती समस्याहरूलाई निम्नवमोजिम राख्न सकिन्छ :

- क) औपन्यासिक उपकरणका आधारमा 'माइतघर' उपन्यासको सामाजिक पक्षका के कस्ता रहेका छन् ?
- ख) 'माइतघर' उपन्यासका पात्रहरूले प्रयोग गर्ने भाषाको वर्गगत, लिङ्गगत, उमेरगत र शैक्षिक अवस्थाका आधारमा भाषिक प्रयोगको स्थिति कस्तो छ ?
- ग) 'माइतघर' उपन्यासको सामाजिक मूल्य र मान्यताको के-कस्ता रहेका छन् ?

#### १.५ शोधकार्यको उद्देश्य :

शोधसमस्याका रूपमा देखिएका प्रश्नहरूको उत्तर वा समाधान निकाल्ने भन्ने कुरामा केन्द्रित रहेर अध्ययन गर्दा यस प्रकारको उद्देश्य राखिएको छ :

- क) औपन्यासिक उपकरणका आधारमा 'माइतघर' उपन्यासको सामाजिक पक्षको अध्ययन गर्नु ।
- ख) उपन्यासका पात्रहरूलाई वर्गीय, लैङ्गिक, उमेर, शैक्षिक अवस्थाका आधारमा वर्गीकरण गर्नु ।
- ग) 'माइतघर' उपन्यासका पात्रहरूले प्रयोग गर्ने भाषाको वर्गगत, लिङ्गगत, उमेरगत, शैक्षिक अवस्थाका आधारका भाषिक प्रयोगको स्थिति पत्ता लगाउनु ।
- घ) विविध सामाजिक भाषिक आधारमा 'माइतघर' उपन्यासको भाषिक विश्लेषण गर्नु ।

#### १.६ पूर्वकार्यको समीक्षा :

उपन्यासकार लैनसिंह वाड्देलको 'माइतघर' उपन्यास भित्र विभिन्न समालोचकहरूबाट पुस्तक , पत्रपत्रिकाहरूमा व्याख्या, विश्लेषण तथा टिप्पणी भएको पाइन्छ । सामाजिक भाषा

विज्ञानको इतिहास त्यति लामो छैन । त्यसकारण यस विषयमा धेरै अनुसन्धान पनि हुन सकेको छैन ।

- क) अधिकारी, रेसराज र घिमिरे, हरिहर (२०२६:२२) ले नेपाली समाज र संस्कृति नामक पुस्तकमा सरल र सरस प्रक्रियाबाट नेपाली समाज र संस्कृतिको सम्बन्धन तथा विकास, सामाजिक परिवर्तन, वसाई-सराई नेपाली अर्थतन्त्रको विकास संस्कृति र धर्मको अन्योन्याश्रित सम्बन्धलाई उजागर गर्ने कार्य गरेका छन् ।
- ख) अधिकारी, हेमाङ्गराज (२०६७) ले सामाजिक र प्रायोगिक भाषा विज्ञानमा भाषाका सामाजिक भेदहरू द्विविभाषिकता, बहुभाषिकता, भाषा योजना जस्ता पक्षसँगै नेपाली भाषाका समस्या र समाधानको माध्यमका रूपमा सामाजिक भाषा विज्ञानलाई उभ्याएका छन् ।
- ख) घिमिरे, वासुदेव (२०६५:४४) ले समाज भाषा र समाजको सम्बन्ध भाषा विज्ञानको परिचय, भाषा र समाजको सम्बन्ध, बहुभाषिकता, कोड छनोट, कोड परिवर्तन, कोड मिश्रण विषयमा व्यापक चर्चा गरेका छन् ।
- ग) अधिकारी, हेमाङ्गराज (२०६७:२६) ले सामाजिक र प्रायोगिक भाषा विज्ञानमा भाषाका सामाजिक भेदहरू द्विविभाषिकता, बहुभाषिकता, भाषायोजना जस्ता पक्षसँगै नेपाली भाषाका समस्या र समाधानको माध्यमका रूपमा सामाजिक भाषा विज्ञानलाई उभ्याएका छन् ।
- घ) भण्डारी, पारसमणि (२०६७:८) ले सामाजिक तथा मनोभाषा विज्ञानमा सामाजिक भाषा विज्ञान, भाषिक भेद, क्षेत्रीय भेद, द्वि-भाषिक, बहुभाषानीति र योजना नेपालको भाषिक स्थिति, सामाजिक भाषा विज्ञानको उपयोगिता आदि विषयको व्यापक चर्चा गरेका छन् ।
- ङ) धनमाया नेपाल (२०६७) ले सिन्धुपाल्चोक जिल्लामा अध्ययनरत कक्षा सातका विद्यार्थीहरूको कक्षागत समाज भाषिक अध्ययन शीर्षक शिक्षा शास्त्र संकाय अन्तर्गत शोध भएको छ ।

प्रस्तुत शोधकार्य यस 'माइतघर' उपन्यासमा अहिलेसम्म सामाजिक भाषिक अध्ययन नभएकोले यस शीर्षकमा अनुसन्धान गर्न आवश्यक ठानी उपयुक्त अनुसन्धानलाई आधार मानेर 'माइतघर' उपन्यासको अनुसन्धान गरिएको छ ।

### १.७ अध्ययनको औचित्य :

भाषाको समाजपरक अध्ययनलाई सामाजिक भाषा विज्ञान भनिन्छ । सामाजिक दृष्टिले भाषाको अध्ययन सामाजिक भाषा विज्ञानमा हुन्छ । नेपाली उपन्यास लेखन क्षेत्रमा लैनसिंह वाड्देल एउटा स्थापित नाम भएको कसैबाट छुटेको छैन । अतः प्रस्तुत शोध प्रस्तावमा विस्तृत र गहनाका दृष्टिले 'माइतघर' उपन्यासको सामाजिक भाषिक अध्ययन विश्लेषण गरिनु शोधकार्यको औचित्य रहेको छ । यसैगरी वस्तुपरक ढङ्गमा सामग्रीकर्ताका निम्ति समेत मार्गदर्शक बन्ने भएकोले यसको प्राज्ञिक तथा अनुसन्धानात्मक औचित्य र महत्व समेत रहेको छ ।

### १.८ शोधकार्यको सीमाङ्कन :

उपन्यासकार लैनसिंह वाड्देल बहुमुखी प्रतिभाका धनी भएकाले नेपाली साहित्य र साहित्येत्तर क्षेत्रमा शसक्त रूपमा देखा परेका छन् । समाज भाषिक आधारमा वर्ग, उमेर, लिङ्ग र शिक्षा पक्षलाई मात्र लिइएको छ । यस शोधकार्यलाई 'माइतघर' उपन्यास भित्रको भाषा शैलीको समाज भाषिक अध्ययनमा मात्र सीमित गरिएको छ । 'माइतघर' उपन्यासको समाज भाषिक अध्ययन र अनुसन्धान गरी निष्कर्ष प्रस्तुत गर्नुमा प्रस्तुत शोधकार्य सीमित रहेको छ ।

### १.९ शोधविधि :

'माइतघर' उपन्यासको शोधकार्य क्रममा प्राथमिक र द्वितीयक गौण सामग्री अवलोकन गरिएको छ । साथै आवश्यकता अनुसार विषय विशेषसँग सम्पर्क गरिएको छ । आवश्यकता अनुसार तालिकीकरण गरिएको छ । वर्णनात्मक विधि र व्याख्यात्मक विधिलाई प्रमुख आधार बनाई शोधकार्य विधि अपनाइएको छ ।

### १.१० शोधकार्यको रूपरेखा :

प्रस्तुत शोधपत्रलाई व्यवस्थित एवं सु-सङ्गठित रूप दिनका लागि निम्नलिखित सात परिच्छेदमा विभाजन गरी आवश्यकतानुसार शीर्षक-उपशीर्षकमा समेत विभाजन गरी अध्ययन गरिनेछ :

- क) अध्याय : एक  
यस अध्यायमा शोध परिचय रहेको छ ।
- ख) अध्याय : दुई  
साहित्यकार लैनसिंह वाड्देलको साहित्यिक रचना धार्मिताको परिचय
- ग) अध्याय : तीन  
नेपाली उपन्यासको विकासक्रम र लैनसिंह वाड्देलको स्थान
- घ) अध्याय : चौथो  
उपन्यासको सैद्धान्तिक परिचय
- ङ) अध्याय : पाँच  
'माइतघर' उपन्यासको औपन्यायिक मानक तत्वका आधारमा विश्लेषण
- च) अध्याय : छैठौं  
सामाजिक, भाषिक, सैद्धान्तिक आधारमा 'माइतघर' उपन्यासको निरूपण
- छ) अध्याय : सातौं  
उपसंहार र निष्कर्ष  
सन्दर्भ ग्रन्थसूची

## अध्याय-दुई

### साहित्यकार लैनसिंह वाड्देलको साहित्यिक रचना धार्मिताको परिचय

#### २. पृष्ठभूमी :

लैनसिंह वाड्देल कोलकताका गभर्नेन्ट कलेज अफ आर्ट्स एण्ड क्युप्टसमा चित्रकारिता विषयमा शिक्षा हासिल गरेका छन् । कविता, कथा, निबन्ध र उपन्यास विधामा विशिष्ट योगदान दिने उपन्यासकार वाड्देलका उपन्यास बैचारिक दृष्टिले निकै महत्वपूर्ण रहेका छन् । यिनका आधुनिक उपन्यास परम्परामा यथार्थवादी जीवन दृष्टि दिई नयाँ मोड प्रदान गर्ने उपन्यासकार लैनसिंह वाड्देलद्वारा लिखित 'माइतघर' यथार्थवादी पृष्ठभूमीमा लेखिएको उत्कृष्ट उपन्यास हो । यस उपन्यासमा गरिवी, दरिद्रता मानवीय व्यवहार, उपेक्षा तथा जीवनको अस्तित्व, अव्यक्त माया, प्रेम जस्ता कुरा यस उपन्यासमा पाइन्छ ।

#### २.१ जन्म स्थान र मिति :

लैनसिंह वाड्देलको जन्म वि.सं. १९७९ साल आइतवार पौष महिनाको कृष्णपक्षको दशमीका दिन दार्जिलिङको तकभर चियावगानमा भएको थियो । पुर्ख्यौली घर खोटाङ्ग जिल्लाको रावाखोलामा थियो । पछि बसाई सरेर उनका हजुरबुवा दार्जिलिङ्ग गएका थिए ।

#### २.२ मृत्यु :

लैनसिंह वाड्देलको मृत्यु वि.सं. २०५९ सालको असोज महिनाको १९ गते मंगलवार विजयादशमीको दिन विहान ५:३० बजे भएको थियो ।

#### २.३ पारिवारिक पृष्ठभूमी :

पिता रङ्गलाल राई र आमा विमला राईको कोखबाट लैनसिंह वाड्देल जन्मेका हुन् । लैनसिंह वाड्देल अठार महिना पुगेपछि उसको आमाको मृत्यु भयो र वाज्यै र कान्छी आमाको हेर विचारबाट उनको वाल्यकाल वितेको थियो । लैनसिंह वाड्देलको पुर्खाको आर्थिक स्थिति

कमजोरीको कारण ज्यालामा काम गर्नु पर्ने तथा केही राहत पाइएला कि भन्ने आशामा दार्जिलिङ पसेका थिए । लैनसिंह वाङ्देलको विवाह सन् १९५३ मा मान वाङ्देलसँग प्रेम विवाह गरी डिना नाम गरेकी एक मात्र छोरीको जन्म दिए । अन्तत् उनी पनि कलाकै क्षेत्रमा 'नेपाली बौद्धहरूको इतिहास' विषय लिएर विधावारिधि गर्ने डिना वाङ्देल नै पहिलो नेपाली हुन गइन् । पछि लैनसिंह वाङ्देलको सहयोगका रूपमा डिना वाङ्देल देखा परिन् ।

## २.४ वाल्यकाल र शिक्षादीक्षा :

लैनसिंह वाङ्देल जन्मेको अठार महिना पुगेपछि उसको आमाको मृत्यु भएको थियो । त्यसपछि सौतेनी कान्छी आमा र बाज्यैको रेखदेखबाट लैनसिंह वाङ्देलको वाल्यकाल वितेको थियो । पुख्र्यौली घर खोटाङ्ग भए पनि आर्थिक कमजोरीको कारण राहत पाउने आशामा उनको वाजे दार्जिलिङ बसाई सरेका थिए । उनको प्रथम गुरु बाबा रङ्गलाल राई थियो । स्कूल जान थालेपछि स्कूलमा यिनलाई घरकै छेउमा तकभर पढाइयो र वाल्यकालमा चारवर्षको प्राइमरी शिक्षा हासिल गरी पढ्न छोडेर बसेका वाङ्देल चौध वर्षको उमेरमा सात कक्षामा दार्जिलिङ हाइस्कूलमा भर्ना भएपछि माध्यमिक कक्षा उत्तीर्ण गरी कलकत्ता युनिभर्सिटीबाट प्रथम श्रेणीमा म्याट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण गरेका थिए । उच्च शिक्षा अध्ययन गर्न सन् १९५२ मा फ्रान्सको राजधानी पेरिसतर्फ प्रस्थान गरेर त्यहाँ पाँच वर्षसम्म कलाको उच्च अध्ययन गरे ।

पाश्चात्य ललितकलाको केन्द्र मानिने परिसमा कला र साहित्यको गहिरो अध्ययन गर्ने अवसर पाउँदा उनले पिकासो ब्राक जस्ता अर्मुत चित्रकारहरूलाई आफ्ना चित्रहरू देखाउन मौका पाए । यसबाट ब्राक निकै प्रभावित भएका थिए । त्यतिखेर वाङ्देल देश-विदेश घुम्ने मौका पाएकोले आफ्ना कलाकृतिहरू कुशलतापूर्वक प्रदर्शन गरे ।

## २.५ लैनसिंह वाङ्देलको शारीरिक व्यक्तित्व तथा स्वभाव

मानिसको पहिचान उसको व्यक्तित्वबाट भल्कन्छ । एकमात्र मानिससँग एक समान देखिदैन । यसको कारण व्यक्तित्वमा समानता नहुनु हो । व्यक्तित्व दुई किसिमको हुन्छ । प्रथम वाह्य तथा शारीरिक व्यक्तित्व र दोस्रो आन्तरिक व्यक्तित्व । शारीरिक व्यक्तित्वको परिचय दिँदा अनुहार जीउडाल, मोटो-दुब्लो, काम गर्ने बानी, भित्री स्वभाव आदिको रेखाङ्कन हुन्छ भने

आन्तरिक व्यक्तित्वमा कुनै पनि व्यक्तिको बौद्धिक क्षमता पनि कार्यगत योगदानलाई हेर्ने गरिन्छ । प्रस्तुत शोधपत्रमा 'माइतघर' उपन्यासमा पाइने सामाजिक र भाषिक पक्षको अध्ययन गर्ने र अभिप्राय रहेकोले वाइदेलको जीवन व्यक्तित्व र कृतित्व सम्बन्धी सामान्य परिचय मात्र दिन खोजिएको छ ।

लैनसिंह वाइदेलको अनुहार थ्याप्चो परेको, ठिक्कैको नाक, अनि आँखा पनि त्यही खालको, गहुँगोरो, पुङ्के खालको नेपाली स्तरको उचाई, गालामा घाउँका दाग आदि चिन्ह देखिने मंगोलियन टाइपको पुरुष देखिन्थे । युवा अवस्थामा उनी असाध्यै आकर्षक देखिन्थे भने वृद्धावस्थामा पनि भनै जोश, जागर कला क्षेत्रमा अत्यन्तै सफल व्यक्तित्व थिए ।

## २.६ चित्रकार व्यक्तित्व :

कला र साहित्यको साधनालाई आफ्नो जीवनको साध्य ठान्ने वाइदेल कुची समाउँदा समाउँदै थाकेको बेला कलम समाएर आफ्नो अमूल्य समय साहित्य सेवामा लगाएका थिए । फ्रान्सको पेरिसमा पाँच वर्षसम्म कलामा उच्च शिक्षा हासिल गरी कर्म क्षेत्रमा निकै सफलता हासिल गरेका वाइदेलको विश्वका प्रसिद्ध व्यक्तिहरूका चित्र, साहित्यकार एवं राजनीतिक व्यक्तित्वका चित्रहरू बनाएका छन् । उनले बनाएका चित्रहरू देखेर पिकासो र ब्राक जस्ता विश्वका महान् कलाकारहरूको पनि निकै प्रशंसा गरेका थिए । उनले पेरिस लण्डन बोडौ स्टुटवर्ग, म्यनिखब्रसेक्स आदि युरोपेली देशहरूमा भ्रमण गरी नेपाली जीवन र संस्कृतिको प्रतिनिधित्व गर्ने कला प्रदर्शनीमा पनि भाग लिएका थिए । फ्रान्स प्रस्थान पूर्ण मानवतावादी देखिएका चित्रकार तत्पश्चात अमूर्त चित्रकारका रूपमा देखा परे । वाइदेलको 'अकाल', 'शरद' र 'पर्वत' उनका अत्यन्तै चर्चित चित्रहरू हुन् ।

## २.७ लैनसिंह वाइदेलको शारीरिक तथा स्वभाव :

मानिसको पहिचान उसको व्यक्तित्वबाट भल्कन्छ । मानिसको व्यक्तित्वमा असमानता भएको कारण एक मानिस अर्को मानिससँग एक समान देखिदैन । व्यक्तित्व दुई किसिमको हुन्छ । प्रथम वाह्य तथा शारीरिक व्यक्तित्व र दोस्रो आन्तरिक व्यक्तित्व । शारीरिक व्यक्तित्वका परिचय दिँदा अनुहार, जीउडाल, मोटो-दुब्लो, काम गर्ने बानी, भिन्न स्वभाव

आदिको रेखाङ्कन हुन्छ, भन्ने आन्तरिक व्यक्तित्वमा कुनै पनि व्यक्तित्वमा कुनै पनि व्यक्तिको बौद्धिक क्षमता वा कुनै पनि कार्यगत योगदानलाई हेर्ने गरिन्छ ।

लैनसिंह वाडदेल होचो, पुङ्के खालको, थ्याप्चो अनुहार, गालामा घाउँको दाग, मंगोलियन टाइपको पुरुष देखिन्थे । वाडदेलको बाह्य व्यक्तित्व युवा अवस्थामा अत्यन्तै आकर्षक थियो ।

## २.८ साहित्य सृजनाको प्रेरणा र प्रभाव :

कुनै पनि साहित्यकारलाई साहित्य सिर्जनामा प्राकृतिक पर्यावरणले महत्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ । दार्जिलिङको परिवेशमा अलिकति शिक्षा हासिल गर्न पाएका वाडदेलले परिवारबाट पनि केही शिक्षा ग्रहण गर्ने सिके, किनकी उनका बुवा, बाजेले पनि नेपाली भाषा र साहित्यका पुस्तकहरू पढ्ने गर्दथे । बेलाबेलामा ठाउँ देखेर पुस्तकसम्म पढ्न सक्ने भएका वाडदेलका परिवारको प्रेरणाले उनलाई साहित्यतर्फ आकर्षित गरायो । उनले उपन्यास लेखनमा अत्यन्तै सफलता प्राप्त गरे । यसअघि उनले विश्वका धेरै नामुद उपन्यासका किताबहरू छानी पढ्ने मौका पाएका थिए । यसरी एकातिर प्रकृति पर्यावरणले सहयोग पायो भने अर्कातिर स्वदेशी साहित्यकार गुरु प्रसाद मैनाली, सूर्यविक्रम ज्ञवाली, रूपनारायण सिंह, बालकृष्ण सम् जस्ताका साहित्यिक व्यक्तित्वहरूबाट पनि प्रेरणा प्राप्त गरे ।

उनले सबैभन्दा ठूलो प्रेरणा फ्रेन्च उपन्यासकारहरूमा न्युटह्यामसन, तर्गननेभ, सिगिड अन्सेट जनातोने फ्रान्स, मोपाँसा, अल्बर्ट र आन्द्रेजिद प्रेरणाका स्रोत देखिन्छन् । रूसी साहित्यकार माइकेल स्लोकोभको प्रभाव परेको बताउने वाडदेलले विश्व साहित्यकै प्रेरणा प्राप्त गरेको अनुभव हुन्छ । स्कुले जीवनमा प्रधानाध्यापक लगायत शिक्षकहरू चित्रकार शमसेन र अभिभावकहरूबाट पनि ठूलो उत्साह प्राप्त गरेको गरे ।

## २.९ उपन्यासकारका व्यक्तित्व :

लैनसिंह वाडदेल चित्रकारिता र उपन्यासकारिताको क्षेत्रमा बहुचर्चित व्यक्तित्व थिए । साहित्य तर्फको अन्यन्तै ठूलो योगदान उनको उपन्यासकारिता थियो । उनले 'मुलुकबाहिर' ( २००४) 'माइतघर' (२००६) 'लङ्गडाको साथी' (२००८) र 'रेम्ब्रान्ट' (२०२३) गरी जम्मा

चारवटा उपन्यास लेखेका छन् । संख्याको दृष्टिले थोरै उपन्यास भए तापनि ती उपन्यासहरूले नेपाली समाजको धेरै कुराहरूलाई समेटेका छन् । उनको 'मुलुकबाहिर' उपन्यासले पाश्चात्य शैली र शिल्पलाई आत्मसात गरी सामाजिक यथार्थलाई नेपाली साहित्यमा भित्र्याएर कोशेढुंगाको काम गर्‍यो । उनको 'माइतघर' उपन्यास सामाजिक यथार्थवादलाई करूणाको माध्यमबाट उजागर गर्न अत्यन्तै सफल रह्यो । 'लङ्गडाको साथी' उपन्यास अत्यन्तै नौलो प्रस्तुतिको रूपमा मानिसका अन्तर्मनका भावहरूसँग डुबुल्की मार्दै स्वप्न र भारतगङ्गामा व्यक्तिका शब्दहरूलाई चित्रात्मक रूपले व्यक्त गर्न सफल भयो । यो उपन्यास यथार्थ प्रस्तुती भएकोले नेपाली साहित्य जगतमै नौलो मानिएको अतियथार्तवादी लेखन शैली बन्यो । रेब्रान्टले फेरी अत्यन्तै छुट्टै गोरेटो निर्माण गर्नमा सफल भयो । यसबाट जीवनीपरक उपन्यास लेखत परिपाटीको शुरूवात भयो । एउटा कलाकारको यथार्थ जीवनलाई कल्पनामा ढालेर औपन्यासिक रूप दिन नेपाली औपन्यासिक जगत्मा अत्यन्तै नौलो पाइला थियो । वाड्देल यसमा प्रथम भए ।

यसरी वाड्देल उपन्यासकार रचनाकार मात्र नभई छुट्टै धारा र रचनाशिल्पका प्रवक्ता समेत बने । साहित्यतर्फ भुकाव राख्ने सबैका लागि उनको उपन्यासकारिताले औपन्यासिक जगतको नयाँ क्षितिज उधारी दियो । खासगरी उपन्यास विधा नै उनको साहित्यकारिताको सफलतम् प्राप्त हो । यसमा उनको विशिष्ट स्थान रहेको पाइन्छ । लैनसिंह वाड्देलको व्यक्तित्वलाई मुख्य पाँच भागमा बाड्न सकिन्छ । जस्तै :

- १) औपन्यासिक कृति
- २) निबन्धात्मक कृति
- ३) जीवनी कृति
- ४) अनुदित र सम्पादित कृति
- ५) पुरातात्विक कृति

**२.१० वाड्देलका औपन्यासिक कृतिहरू :**

(क) 'मुलुकबाहिर' :

लैनसिंह वाड्देलको पहिलो उपन्यास 'मुलुकबाहिर' हो । यो नेपाली साहित्यको यथार्थवादी उपन्यास हो । नेपालबाट दुःख पाएर मुगलानमा पसेको जीवनकथालाई यस

उपन्यासले समेटेको छ । तत्कालिन नेपालको पूर्वाञ्चलीय परिवेशका अतिरिक्त मुगलानको वस्तुस्थितिलाई 'मुलुकबाहिर' उपन्यासले प्रस्तुत गरेको छ । नेपालीले दार्जिलिङलाई नेपालकै भावनाको शाखाका रूपमा अंगालेको विषयवस्तुहरूलाई यस उपन्यासले बोकेको छ । कामको खोजीमा दार्जिलिङ पसेका नेपालीहरू मध्ये कति दार्जिलिङमा नै बस्छन् र कतिचाहिँ नेपालमै फर्केर आउने गर्छन् । बसाईसराइ र माटोप्रेमको द्वन्द्वमा यस कृतिको विषयवस्तु गाँसिएको छ । नेपालीले आफ्नो देश छोडेर अनेक कष्ट, भन्फट र वेदना बोकेर एक पेट खान दार्जिलिङको सेरोफोरो लगायत घटनाको जीवन्त प्रस्तुति नै 'मुलुकबाहिर' को प्रमुख विशेषता हो । दुःखी गरिब र बेसहारा नेपालीको वास्तविक घटनाको छायाङ्कनमा 'मुलुकबाहिर' आधारित छ । एउटा नेपाली कसरी लड्ने, कसरी मातृभूमीमा फर्कन्छ र कसरी मर्छ भन्ने विषयलाई समाएर वाडदेल 'मुलुकबाहिर' को चित्रण गरेको देखिन्छ ।

वास्तवमा वाडदेललाई साहित्यमा सुपरचित बनाउने प्रथम कृति नै यही 'मुलुकबाहिर' हो । उनले यही कृतिको तर्फबाट आफ्नो औपन्यासिक व्यक्तित्वलाई नेपाली साहित्यको धरातलमा सफलतापूर्वक पुऱ्याएको देखिन्छ ।

(ख) 'माइतघर' :

लैनसिंह वाडदेलको दोस्रो उपन्यासका रूपमा 'माइतघर' उभिएको छ । वियोगान्त उपन्यासका रूपमा परिचित छ । 'माइतघर' प्रतीकात्मक छ र यसमा हरि दाजु र सानी बहिनी भनिने पात्रहरूको अत्यन्त, अदृश्य र अर्मूत प्रेम रहेको पाइन्छ । सानैदेखि हरि र सानी दुवै मिल्ये । हरि र सानी दुवै मिल्ये । हरि र सानीको वाल्यवस्थाको कलिलो माया ने क्रमशः गहन स्तरीय र परिपक्व प्रेममा अनुवाद हुन्छ । ती पात्रहरू एकअर्कासँग समर्पित छन् । तर यो समर्पण निष्ठा र प्रेम ती दुवैले दुवैसामु खोल्न सक्तैनन् । उनीहरू सम्मानित रूपमा प्रेम गर्छन् । त्यति मात्र होइत उनीहरूमा शारीरिक सम्पर्कको चाहना हुन्छ । तर उनीहरूले एकअर्काको शरीर छुन पाएका हुँदैनन् । अथवा ती प्रेमहरू त्यो स्तरमा पुग्न सक्तैनन् । यति हुँदा हुँदै पनि उनीहरू अत्यन्तै घनिष्ट हुन्छन् र अन्त्यमा चाही उनीहरूको विछोड हुन्छ ।

'माइतघर' इलामको जनजीवन, वस्तुस्थिति र परिवेशले ढाकेको उपन्यास हो । वाडदेलले इलाम नदेखे तापनि सुनेका आधारमा उनलाई इलाम प्यारो लाग्छ । आफूलाई मन

पर्ने आफ्नो जन्मस्थल दार्जिलिङ्ग र इलामलाई जोडेर उनले 'माइतघर' को स्वीकार गरेका हुन् ।

ग) **रेम्ब्रान्ट :**

वाङ्देलको औपन्यासिक यात्राका क्रममा 'रेम्ब्रान्ट' अन्तिम उपन्यास मानिन्छ । एउटा महान् कलाकारको दुःख जीवन पढेर वाङ्देल पनि रोएका थिए । अनि एउटा विश्वप्रख्यात कलाकारको भोकभोकै हिँडेर प्रसङ्गबाट वाङ्देलको कलात्मक शिर नै भाँचिएको अनुभूति भएको थियो त्यसैले धेरै सदन र रात रेम्ब्रान्टको सेरोफेरोमा नालीवेलीमा हिडे र उतारचढावमा वसे । रेम्ब्रान्टका जीवनका प्रत्येक बुँदाले वाङ्देलको छाती र मस्तिष्कसँग मितेरी लगाइदिए अनि त्यही परिणतीको संस्थापनका रूपमा 'रेम्ब्रान्ट' नामक उपन्यास देखा पर्यो ।

रेम्ब्रान्ट डेनमार्कका सुप्रसिद्ध चित्रकार थिए । उनका विषयमा खलेपेछि र लन्डनमा प्रशस्तै अध्ययन गरेका थिए । रेम्ब्रान्ट विश्वप्रसिद्ध चित्रकार हुन् भन्ने ज्ञान भएपछि वाङ्देल रेम्ब्रान्टको घर हेर्न डेनमार्क नै गए । त्यहाँ सरकारले रेम्ब्रान्ट संग्रहालय खोलेको थियो । त्यस संग्रहालयमा पुगेपछि वाङ्देलले आफ्नो कल्पनाबाहिरका रेम्ब्रान्टका चित्रहरू पनि देखे । फेरी त्यहाँ उनले रेम्ब्रान्टको जीवनी सुने पढे र देखे । त्यहाँ पनि वाङ्देल रेम्ब्रान्टको पीरमा रोए ।

रेम्ब्रान्ट जसरी विश्वप्रसिद्ध चित्रकार भए त्यसरी नै वाङ्देलको 'रेम्ब्रान्ट' उपन्यासले पनि जीवनीमा आधारित भएर नवीन स्थान पायो । 'रेम्ब्रान्ट' एउटा उल्लेखनीय ऐतिहासिक र उपलब्धीपूर्ण उपन्यासका रूपमा नेपाली साहित्य भण्डारमा रहन गयो ।

सम्ले यस कृतिका विषयमा उल्लेख गरेका छुन । "लैनसिंह वाङ्देलले आफूलाई चित्रकलाको सेवामा होमिदिनु भएको कुरा नेपाली जगत्मा प्रसिद्ध छ । उहाँ जन्मिनुभन्दा धेरै अघिदेखि म चित्र बनाउने गर्थे, तर संसारका प्रसिद्ध आधुनिक चित्रकारहरूपट्टि मेरो ध्यानार्पित गरिदिने सर्वप्रथम वाङ्देल जीवन नै हुन् ।

महान् चित्रकार रेम्ब्रान्टको जीवनीलाई स्वाभाविक रूपले लिएर वाङ्देलजीले यो राम्रो उपन्यास लेख्नुभएको छ । ठूला चित्रकार रेम्ब्रान्टजस्तालाई पनि दरिद्रको सामना गर्नु परेको थियो । उसको एउटा चित्र अहिले दुई करोड रूपियामा विक्री भएको छ । भन्ने कुरा वास्तविक हुँदाहुँदै पनि हामीलाई कल्पनाजस्तो लाग्छ ।

त्यति ठूला रेम्ब्रान्ट दुःख पाएरै मरे । मर्ने वेलामा पनि उनी एउटा चित्र कोर्दै थिए । त्यो चित्र आधा सकिएको थियो । त्यो चित्र कोर्दा रेम्ब्रान्ट एक टुक्रा पाउरोटी खाँदै थिए,

पाउरोटीको पनि आधा भाग बाँकी थियो र उनी मर्नु भन्दा अघि उनका छेउछाउमा रहेका भाँडाका रङ्गहरू पनि आधा पोखिएका थिए ।

## २.११ लैनसिंह वाडदेलका औपन्यासिक प्रवृत्तिहरू :

संख्यात्मक आधारमा उपन्यासकार लैनसिंह वाडदेलका उपन्यासहरू थोरै भए पनि यी चारवटा उपन्यासहरूले नयाँ-नयाँ प्रवृत्तिहरूलाई अपनाएका छन् । प्रत्येक उपन्यासका नयाँ औपन्यासिक प्रवृत्तिको छाप छोड्न चाहने वाडदेलका औपन्यासिक प्रवृत्तिहरू निम्नानुसार छन् :

### २.११.१ सामाजिक यथार्थवादी प्रवृत्ति :

लैनसिंह वाडदेल आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा प्रथम सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकार हुन् । उनको उपन्यास लेखनमा पाइने यो प्रमुख प्रवृत्ति हो । पेरिसमा यथार्थवादी कला र साहित्यको ६ वर्ष लामो अध्ययन गरेपछि वाडदेल त्यहाँको यथार्थवादी आन्दोलनबाट प्रभावित भए, 'प्रभात' पत्रिकामा प्रकाशित साहित्यिक यथार्थवाद लेखनबाट त उनी यस प्रकृतिका दार्शनिक नै बन्न पुगे । उपन्यासमा प्रथम पल्ट 'मुलुकवाहिर' (२००४) मा सामाजिक यथार्थवादको प्रयोग गर्ने वाडदेल साहित्यलाई ऐना मान्छन् र समाजमा समग्रमा जे घटना घट्छन् त्यसलाई उपन्यासमा फोटोकापी गर्न रूचाउँछन् । उनी उपन्यासमा समाजका बहुसंख्यक जनताको जीवनमा घट्ने घटनालाई आफ्नो उपन्यासको वस्तु बनाउँछन् । सम्भ्रान्त परिवारमा घट्ने घटनालाई अपवाद मान्न रूचाउने वाडदेल समाजको समग्र पक्षको चित्रण उपन्यासमा तस्वीर जस्तै उतार्ने चाहन्छन् । यथार्थवादी साहित्यका सम्बन्धमा उनी चन्छन् : हामीलाई यो नवीन युगमा गगनचुम्बी महलतिर होइन्, वरू युगकालीन भुप्रोतिर हेर्ने वृद्धि आओस् । हामीलाई सन्यासी पेटभित्र हुल्ने विचार आओस यस्तै वाडदेल आफूलाई यथार्थवादका प्रतिनिधि मान्दै भन्छन् यदि मैले माथिल्लो श्रेणीको चित्रण गर्न थाले भने त्यो मेरो अनाधिकार चेष्टा मात्र हुनेछ र हुनसक्छ असफल पनि हुनेछ ।

आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा यथार्थवादी धाराका प्रवर्तक लैनसिंह वाडदेलले 'मुलुकवाहिर' (२००४) मार्फत नेपाली उपन्यास परम्परामा सामाजिक यथार्थवादीको प्रवेश गराए । उनका चारवटै उपन्यास यथार्थवादी धारातलमा लेखिएका भए तापनि यस वादलाई

मूल शैली र प्रवृत्ति मान्ने दुई उपन्यास कृतिहरू 'मुलुकवाहिर' (२००४) र 'माइतघर' (२००५) हुन् । 'मुलुकवाहिर' उपन्यासमा प्रवासी नेपाली सामाजिक जीवनका आर्थिक स्तर तथा पारिवारिक समस्याहरू उपस्थित गरिएका छन् । यस्तै 'माइतघर' उपन्यासमा पनि प्रवासी नेपाली समाजमा स्थापित सामाजिक संस्कार, मूल्य र मान्यतालाई प्रस्तुत गरेको छ । चित्रकारी यथार्थवादबाट प्रभावित वाडदेलेले यी दुबै उपन्यासमा नेपालका विभिन्न भागबाट काम र मामको खोजीमा मुग्लान पसेर उतै घरजम गरेका नेपालीहरूमा सामाजिक तथा पारिवारिक घटनाहरूको यथार्थ चित्रण गरेका छन् । त्यसो त 'लङ्गडाको साथी' उपन्यासमा पनि प्रयाप्त यथार्थता भेटिन्छ । लैनसिंह वाडदेलेको औपन्यासिक विषयवस्तु, घटना, चरित्र, परिवेश, भाषा र उद्देश्य सबै सामाजिक यथार्थ धरातलबाट चुनिएका हुन्छ । सामाजिक नवजीवनका टड्कारो र जीवन्त समस्यालाई आफ्नो उपन्यासमा समेट्ने लैनसिंह सामाजिक यथार्थवादी प्रकृतिका उपन्यासकार हुन् ।

### २.११.२ प्रवासी नेपालीहरूको चरित्र चित्रण गर्ने प्रवृत्ति :

लैनसिंह वाडदेले स्वयं प्रवासी नेपाली हुन् । उनी कामको खोजीमा विदेसिएको नेपालीहरूलाई आफ्नो उपन्यासका पात्र बनाउँछन् । तिनको चरित्र-चित्रणमा सिमित राख्दछन् 'रेब्रान्ट' वाहेक उनका तीनै उपन्यासमा प्रवासी नेपाली समाजको चित्रण छ र त्यस समाजको व्यक्तिको चित्रण छ । नेपालीहरू प्रवासमा के कस्ता पेशा अँगालेर वसेका छन् । उनीहरूको जीवनस्तर कुन प्रकारको छ । भन्ने बुझ्न हामी वाडदेलेका उपन्यासचित्र पसे हुन्छ । संसार घुमेर त्यहाँको जनजीवन वाटा परिचित वाडदेलेले आफ्नो उपन्यासमा प्रवासी नेपालीको सामाजिक जीवन चरित्रलाई रोज्नु नै उनको प्रमुख विशेषता हो र औपन्यासिक प्रवृत्ति पनि हो । प्रवासी नेपाली दुःख-सुख, आचार, विचार, रूढी संस्कार, चेतनाको स्तर, आर्थिक स्तर र यसका पाटाहरू सबैलाई चित्रमा जस्तै उपन्यासमा उतार्ने वाडदेलेको प्रवासी नेपालीहरूको चित्रण गर्ने एक औपन्यासिक प्रवृत्ति हो ।

### २.११.३ प्रवृत्तिको यथार्थ र सुन्दर चित्रण गर्ने प्रवृत्ति :

आफ्ना उपन्यासका प्रकृतिको सुन्दर भित्र उतार्ने लैनसिंह वाडदेलेलाई स्वच्छन्दतवादी उपन्यासकार जस्तो जाग्छ तर त्यसभित्रको यथार्थ चित्रणको गर्दा हामी त्यो भ्रमलाई हटाउन

बाध्य हुन्छौं । उनी आफ्ना उपन्यासमा प्रवृत्तिको विविध रूपको चित्रण गर्दछन् । उनी उपन्यासमा यथार्थको अनौठो सौन्दर्य उद्घाटन भएको छ । उनी प्रकृतिको सौम्य रूपदेखि रौद्रहरू सवैको जीवन्त चित्र उपन्यासमा प्रस्तुत गर्दछन् । घाँमको झल्को छ्याङ्ग उधेको बहारलाग्दो दिन हिउँदका रातको सिरेटो ठन्डी तुसारो वर्षा हिलो मैले भलबाडी, हुरी बतास सवैको उपन्यासको कथावस्तुहरू अनुसार प्रस्तुत गर्दछन् । उनी आफ्ना उपन्यासमा प्रकृतिसँग समाज, वातावरण परिवेश र व्यक्ति बीचको द्वन्द्वलाई जीवन्त रूपमा प्रस्तुत गर्दछन् । उनका उपन्यासमा मानिसको मन दुःखी हुँदा प्रकृति पनि स्थिर हुन्छ । उनको यौ औपन्यासिक प्रवृत्ति सुरूका दुई उपन्यास भन्दा पनि 'माइतघर' उपन्यासमा ज्यादा जीवन्त छ । चरित्रको मनोस्तरसँग प्रकृतिलाई सँगै वर्णन गर्नु वाडदेलको सफल औपन्यासिक प्रवृत्ति हो । मानवीय सुख दुःखसँग प्रकृतिलाई साथै हिडाउनु उपन्यासकार लैनसिंह वाडदेलको अर्को औपन्यासिक प्रवृत्ति हो ।

#### २.११.४ मानवतावादी प्रवृत्ति :

मानवलाई मानवताले हेर्नु नै मानवतावादी प्रवृत्ति हो । यसमा मानवीय मूल्य र मान्यता, स्वतन्त्रता, स्वाभिमानता र विश्व भातृत्वजस्ता कुराहरू पर्दछन् । लैनसिंह वाडदेलका चारैवटा उपन्यासमा यो प्रवृत्ति पाइन्छ । तर "लङ्गडाको साथी" उपन्यासमा भने मानवतावादी प्रवृत्ति ज्यादा छ । आजका व्यक्तिहरू स्वार्थमा वेगका विश्वमा अलिकति भएपनि मानवीय यस प्रवृत्तिका आलोचना गर्दै मानवीय मूल्य र मान्यतालाई चित्रण गर्दै एउटा सभ्य संस्कारमा यसको नितान्त आवश्यकता देखाउनु वाडदेलको औपन्यासिक प्रवृत्ति हो । वाडदेलको 'मुलुकबाहिर' मा साँघुरो व्यक्तिको सोचका कारण अमानवीय व्यवहार भएको छ । र अन्त्यमा त्यस्तो हार खाएको छ । व्यक्तिका शंका, स्वार्थ र चेतनास्तरले मानवतावादी सिद्धान्तमा आँच आउने कुरा देखाइएको छ । र जीवन्त यात्रामा जे-जस्ता आरोह अवरोह देखा परे पनि अन्नतः मानवतावादी प्रवृत्तिलाई यसको विजयी बनाइएको छ । 'माइतघर' मा पनि धर्म, कर्म रूढी संस्कार र कथित नैतिकताले मानवतावादमा आधार पारेको देखाइएको छ । यी दुवै उपन्यासमा मानवले मानवलाई मानवीय दृष्टिमा हेर्नु पर्ने आवश्यकता औल्याएको छ ।

वाडदेलको सबै उपन्यासमा भन्दा 'लङ्गडाको साथी' मा मानवतावादी सिद्धान्त वढी मुखारित भएको छ । आधुनिक मानवमा मानवता छदैछैन । सभ्यताका नाममा अरूलाई

मानिस नदेखे प्रवृत्तिले आज सबैलाई गाँजेको छ । वर्गीय भेदले पनि मानवीय सोचमा परिवर्तन भएको छ । हाम्रो उन्नत समाजका भलादमीहरू कुकुरलाई मासु र भात खुवाउँछन् । र सोफामा सुताउँछन् । तर घरमा सबै कार्य गर्न कारिन्दालाई जुठोपुठो खुवाइन्छन् । त्यस्तै नियतीले ठगेको मानिसलाई भुस्याहा कुकुर ठान्ने प्रवृत्तिले हाम्रो समाजमा आजसम्म कायम छ । गरिवीले मात्र गरिवीको पीडा बुझ्छ, भन्ने लङ्गडाको विचारबाट पनि मानवता कति दयनीय रहेछ, भन्ने स्पष्ट हुन्छ । ‘माइतघर’ उपन्यासमा मानवतावादी प्रवृत्ति ज्यादै प्रखर छ । ‘रेब्रान्ट’ मा पनि ‘रेब्रान्ट’ मानिसको अमानवीय व्यवहारको प्रत्यक्ष : अप्रत्यक्ष प्रभावित छ । वाडदेलको सामाजिक यथार्थवादी प्रवृत्तिपछि, मानवतावादी प्रवृत्ति अर्को सशक्त औपन्यासिक प्रवृत्ति हो ।

## २.११.५ कारूणिकताको चित्रण गर्ने प्रवृत्ति :

आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा लैनसिंह वाडदेल कारूणिक उपन्यासकार हुन् । वाडदेल समाजका उपेक्षित उत्पीडित, अपहेलित वर्गका मानिसका कारूणिक सम्बेदना पाठकसामु पसकेर सबैलाई त्यसमा सहभागी गराउने उपन्यासकार हुन् । उनका उपन्यास पात्रहरू आफूमात्र कारूणिक बन्ने होइन् । आफ्ना कारूणा पाठकलाई बाँडेर उनीहरूलाई पनि करूणामा डुबाउँछन् । उनका चारैवटा उपन्यासमा करूणाका पक्ष सफल भएकोले सुरुदेखि अन्तसम्म उनी कारूणिक प्रवृत्तिका उपन्यासकार छन् । उनी दार्शनिक अरस्तुले भनेजस्तै करूणाले पाठकको मनको कुदुषित पखाल्छन् ।

वाडदेलको प्रथम उपन्यास ‘मुलुकबाहिर’ का म्याउचीको हत्या, रनेको आत्महत्या र महिला भुजेलले मसिनीप्रति शंका गरेको व्यवहारजस्ता घटनाले कारूणिकता प्रस्तुत भएको छ । त्यस्तै ‘माइतघर’ उपन्यासको हरि र सानीप्रतिको सम्बन्धको कारूणिकता सिर्जना भएको छ । यस्तै ‘माइतघर’ उपन्यासको हरि सानीप्रतिको सम्बन्धको कारूणिकता सिर्जना भएको छ । ‘लङ्गडाको साथी’ उपन्यासको लङ्गडाको अवस्थाले कारूणिकता सिर्जना भएको छ र रेब्रान्टले जीवनमा गर्नु परेको संघर्षको कारूणिकता सिर्जना भएको छ । नेपाली उपन्यास परम्परामा करूणामयी वातावरणको चित्रण गर्ने काम वाडदेल अरू उपन्यासकार भन्दा धेरै सशक्त रूपमा प्रस्तुत गर्नु लैनसिंह वाडदेलको औपन्यासिक प्रवृत्ति हो ।

## २.११.६ पात्रको मनोविश्लेषण गर्ने प्रवृत्ति :

लैनसिंह वाडदेलको आफ्ना उपन्यासको सामाजिक जीवनको मात्र होइन आन्तरिक मनको पनि सफल चित्रण गरेका छन् । फ्रायडीय मनोविश्लेषणलाई प्रस्तुत गर्न वाडदेलको मूल उद्देश्य नरहेता पनि सामाजिक जीवन यापन गर्दा आइपर्ने घटना र दौरानमा देखापर्ने मात्र मनोवृत्ति उनका उपन्यासमा चित्रित छन् र वाडदेलको प्रथम उपन्यास 'मुलुकवाहिर' मा पात्रका इर्ष्या, शंका, पाश्चातापको चित्रण भएको छ । यस्तै 'माइतघर' उपन्यासमा पनि हरि र सानीका मनोआकांक्षाहरूलाई उपन्यासमा लङ्गडाको मनोकांक्षा अर्थात् लङ्गडाको मानसिकताको विश्लेषण र चित्रण गरेको छ । उसमा मानवसमाजका ढोंगीलाई तिरस्कार र घृणा गर्दा उसको मनमा आउने तरङ्गलाई मार्मिक ढंगमा विश्लेषण गरिएको छ । पात्रका मनमा हुने मानवीय प्रवृत्ति दया, प्रेम, करुणा, क्रोध, घृणा, शंकालाई यथार्थ रूपमा प्रस्तुत गर्नु वाडदेलको औपन्यासिक प्रवृत्ति हो । निष्कर्षमा आफ्ना उपन्यासमा पात्रहरूको मनोकांक्षा तथा इच्छा र चाहनाहरूको चित्रण र विश्लेषण गर्नु लैनसिंह वाडदेलको अर्को औपन्यासिक प्रवृत्ति हो ।

## २.११.७ अतियथार्थवादी प्रवृत्ति :

आधुनिक उपन्यास परम्परामा लैनसिंह वाडदेल प्रथम सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकार जस्तै प्रथम अतियथार्थवादी उपन्यासकार हुन् । उनको 'माइतघर' उपन्यासको यसै प्रवृत्तिलाई वहन गरेको छ । लैनसिंह वाडदेल आफ्नो उपन्यासका पात्रहरूमा असामान्य, अप्रत्यक्षित अनुभूतिहरूको स्वयंम प्रस्फुरित आवेगद्वारा अवचेतनको अन्धकारमा रूमलिरहेका आशंका कतिपय आयामहरू अभिव्यक्त गर्ने हुनाले उनी अतियथार्थवादी उपन्यासकार हुन् । लैनसिंह वाडदेलले 'माइतघर' 'लङ्गडाको साथी' उपन्यासमा अतियथार्थवादी प्रवृत्तिको चित्रण गरेकोले उनी आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामै प्रथम अतियथार्थवादी उपन्यासकारका रूपमा परिचित छन् ।

## २.११.८ निराशावादी जीवन दृष्टि प्रस्तुत गर्ने प्रवृत्ति :

लैनसिंह वाडदेलका सबै उपन्यासका पात्रहरू जीवन यात्रामा अनेक समस्या र भन्कटमा फस्दछन् । तिनीहरू संघर्ष गरेर सावधानीपूर्वक समस्याबाट किनारा नलागि आपत् विपत् परेका बेला आवेशमा अप्रिय निर्णय गर्छन् र संघर्षमय जीवनबाट पलायन हुन्छन् ।

उनका सबै पात्रहरू धेरै थोरै निराशा र व्यक्तिगत कुण्ठा छन् । 'मुलुकवाहिर' का रने र माइला भुजेल वास्तकिकता पत्ता लगाउनुको सट्टा निराशा भएर मुग्लान पलायन हुन्छन् । हरिमा सानीमा जतिको आशा पनि छैन । 'लङ्गडाको साथी' को लङ्गडाको त्यति लामो जीवनमा संघर्ष गर्दै बाँचेको छ, तर कुकुर हराएपछि निराश बन्छ र यताउता भौतारिदा-भौतारीदै भुप्रोमा समेत आइपुग्न सक्दैन । परिणामतः मृत्युवरण गर्छ । यस्तै रेम्ब्रान्टमा पनि जीवनका हरेक मोडमा असफता हात लागेपछि उ निराशो पराकाष्ठामा पुगेको छ । वाडदेलका सामाजिक यथार्थवादी बनेर उपन्यास नै दुःखान्तरि गएका छन् । यथार्थमा समाजका कैयौ व्यक्ति संघर्ष गरेर बाँच्दछन् र भविष्यप्रति आशावादी भएर जीवनलाई सही मार्गमा डोच्याउन सफल हुन्छन् । यहाँ लैनसिंह वाडदेल यथार्थवादी उपन्यास सुहाउँदा जुभारन र आशावादी पात्रको चयन गर्न असफल छन् । यो उनको अर्को औपन्यासिक प्रवृत्ति हो ।

### २.११.९ जीवनीपरक उपन्यासमा लेख्ने प्रवृत्ति :

आफ्ना उपन्यासमार्फत संसारका नवीन सन्देश दिने उपन्यासकार लैनसिंह वाडदेलले आफ्ना उपन्यास यात्राको अन्तिम उपन्यासले पनि आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा नयाँ मान्यता स्थापना गरेको छ । वाडदेल आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा जीवनमूलक उपन्यास लेख्ने पहिलो उपन्यासकार हुन् । उनी व्यक्तिका जीवनमा घटेका यथार्थ घटनालाई औपन्यासिक तत्वका आधारमा प्रस्तुत गरेर उपन्यासमा विश्व प्रसिद्ध स्पेनका महान चित्रकार रेब्रान्टका जीनवमा घटेका घटनालाई आधार बनाएर लेखिएको यस उपन्यासमा तत्कालिन युरोपेली संस्कृति र कलाको पृष्ठभूमिमा यथार्थ चित्रण गरिएको छ । जीवनमा घटेका संघर्षमय क्षणहरूलाई यथार्थ रूपमै राखेर त्यसमा उपन्यास शिल्प भर्न सक्ने उपन्यासकार लैनसिंह वाडदेल जीवनीलाई रोचक उपन्यास बनाउन सक्ने उपन्यासकार हुन् ।

### २.११.१० उपन्यासमा चित्रकारी भाषाको प्रयोग गर्ने प्रवृत्ति :

उपन्यासकार लैनसिंह वाडदेल एक सफल लेखकका साथै सफल चित्रकार पनि हुन् । उनी आफ्ना उपन्यासमा छायाँ चित्रमा जस्तै भाषामा पनि लेख्नु पर्ने कुरा खुलस्त पान सक्षम उपन्यासकार हुन् । उनी आफ्ना उपन्यासमा स्वभाविक, सरल र सुबोध भाषाको प्रयोग गर्न सक्षम मात्र होइनन् मानवीय समवेदनालाई समेत भाषामा उतार्न सक्षम उपन्यासकार छन् ।

उनी आफ्ना उपन्यासमा मात्र सुहाउँदो भाषाको प्रयोग गरेर सर्वसाधारणहरूका लागि उपन्यास लेख्ने उपन्यासकार छन् । सम्प्रेषण तथा विम्वात्मक भाषा प्रयोग गरेर पाठकलाई उपन्यासका पात्रसँग सामेल गर्ने वाड्देल आफ्ना उपन्यासमा चित्रकारी भाषाको प्रयोग गर्ने उपन्यासकार हुन् । जो भन्नु पर्ने हो त्यसलाई भाषामा दुरूस्त भन्न अर्थात् लेख्न सक्नु वाड्देलको औपन्यासिक प्रवृत्ति हो ।

### २.११.११ नयाँ नयाँ शैलीका प्रयोग गर्ने प्रवृत्ति :

आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा उपन्यास सौन्दर्यका नयाँ-नयाँ चरण र मोडहरूको सुरूवात गर्ने उपन्यासकार लैनसिंह वाड्देल एक प्रयोगवादी उपन्यासकार हुन् । 'मुलुकबाहिर' (२००४) मा सामाजिक यथार्थवादी धाराको प्रवेश गराउने उपन्यासकार वाड्देलले 'माइतघर' मा त्यसैलाई परिष्कृत गरी मनोवैज्ञानिक यथार्थवादलाई समेत समावेश गरेर अगाडि वढेका छन् । त्यस्तै 'लङ्गडाको साथी' मा क्षीण कथावस्तु भित्र घटना संयोजन गरेर आधुनिक नेपाली उपन्यासलाई अतियथार्थवादी मोडमा पुर्याएका छन् । यो वाड्देलको अर्को नौलो प्रयोग हो । आफ्नै उपन्यास यात्राको अन्तिम क्षणमा पुगेर पनि वाड्देलले आधुनिक नेपाली उपन्यासलाई नयाँ आयाम थपेका छन् र रेम्ब्रान्ट आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्पराको प्रथम जीवनीपरक उपन्यास बनेको छ । यसरी आफ्ना थोरै उपन्यासमा पनि हरेकले नयाँ मोड थप्ने सौभाग्य प्रदान गर्ने लैनसिंह वाड्देल आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा नयाँ शैली प्रयोग गर्ने प्रथम उपन्यासकार छन् । यो उनको अन्तिम औपन्यासिक प्रवृत्ति हो ।

### २.१२ निष्कर्ष :

लैनसिंह वाड्देलले एउटा सम्पादित 'विश्वकथा संग्रह' र अर्को अनुदित 'स्याउको रूख' सहित नेपाली भाषामा उनका जम्मा तेह्रवटा ग्रन्थ प्रकाशित भएका छन् । उनका कृतिहरू मध्ये मुख्य रूपमा उपन्यास नै आउँछन् । उनले विविध विधामा उभिएर आफ्ना सिर्जनाहरू प्रस्तुत गरेका छन् । वाड्देलको कृतिगत महिमाका लेखाजोखा गर्ने हो भने उपन्यासले उनको साहित्यिक व्यक्तित्वलाई बढाएको छ । किनभने नेपाली साहित्यमा यथार्थवादी उपन्यास लेख्ने

पहिलो स्रष्टा नै वाडदेल छन् । वाडदेल साहित्यकारका रूपमा र चित्रकलाको मूर्त स्वरूपमा पनि उनी त्यतिकै प्रसिद्ध छन् । उनको कृतित्वलाई औपन्यासिक कृति, निबन्धात्मक कृति, जीवनीकृति, अनुदित र सम्पादित कृति र पुरातात्विक कृति गरी पाँच भागमा बाड्न सकिन्छ ।

नेपाली औपन्यासिक जगत्मा चम्किला ताराका रूपमा स्थापित भएका लैनसिंह वाडदेल चारैवटा उपन्यासहरूबाट एक-एक गरी ऐतिहासिक महत्व राख्न सफल भएका छन् । सामाजिक यथार्थवादीको प्राप्ति शिखरको रूपमा अंग्रेजी साहित्यबाट ल्याइएको यथार्थवादी प्रवृत्ति 'मुलुकवाहिर', 'माइतघर' धरातलमा देखाउन सफल हुनु उनको महत्वपूर्ण प्राप्ति हो । फ्रान्समा चित्रकारिताको अध्ययन गर्दा अमूर्त चित्रकलाबाट प्रभावित कलालाई 'लङ्गडाको साथी' उपन्यास मार्फत अतियथार्थवादी उपन्यासको रूपमा प्रथम ऐतिहासिकता कायम गरे । यसै गरी रेम्ब्रान्टको जीवनलाई उपन्यासको काँचमा प्रस्तुत गरी जीवनीमूलक उपन्यास लेखनका प्रथम प्रभोक्ता बन्न सफल देखिन्छ । उनका उपन्यासमा मानवतावदी चेत, मनोवैज्ञानिकता, करूणा र दुखान्त तथा निराशाको छायाँ परेको स्पष्ट देखिन्छ । उसका अतिरिक्त आफ्ना सम्पूर्ण उपन्यासहरूको धरातल नेपाली वाहिरको नै रहेको छ । वास्तवमा 'मुलुकवाहिर' को धरातल वाडदेलको औपन्यासिक परिवेश देखिन्छ । नवीन शिल्पसञ्जा स्वभाविक भाषा आदिको प्रयोग उनको उपन्यासकला हो । जसमा चित्रात्मक शैलीमा प्रकृतिको सूक्ष्मतम चित्रण गरिएको पाइन्छ ।

यसरी वाडदेलका कला साधनमा दुःखान्त नाटकीय भावभूमी, करूणामयता, प्रकृति, तादारम्यता मानसिक अन्तर्द्वन्द्व, कटु सामाजिक यथार्थ, कलात्मक लेखन, लघु शारीरिक संरचना निम्न-मध्यमताप्रति उदाङ्गता र सबैको मनमा पराले भुप्रोतिर दृष्टि दिने फुर्सद मिलोस भन्ने मानवीय भावना आदि उनका प्रवृत्तिगत प्राप्ति छन् ।

## अध्ययन-तीन

### नेपाली उपन्यासको विकास क्रममा लेनसिंह वाङ्देलको स्थान

#### ३.१ पृष्ठभूमी :

नेपालीको इतिहासमा शाहकाल प्रारम्भ भएपछि मात्र नेपाली भाषामा लामा आख्यानहरू लिपिवद्ध हुन थाले । आधुनिक समीक्षक शास्त्र अनुसार कथा उपन्यास दुवै आख्यान अर्थात् अंग्रेजीको फिक्शन अन्तर्गत पर्ने हुनाले नेपाली कथा भै नेपाली उपन्यासको ऐतिहासिकता पनि वि.सं. १८२७ को शक्तिबल्लभ अर्ज्यालको महाभारत विराटपर्वबाट शुरू गर्नु पर्ने हुन्छ । नेपाली उपन्यासको प्रारूप पहिल्याउने क्रममा प्राचीन गद्यख्यान परम्परालाई नेपाली उपन्यासको पृष्ठभूमी स्वीकार्दै नेपाली उपन्यासको काल विभाजन विभिन्न विद्वानहरूबाट भएको छ । विद्वानहरूमा काल विभाजनको समय विन्दुको विषयमा मत भिन्नता पाइन्छ । यहाँ डा. दयाराम श्रेष्ठले गरेको काल विभाजन र नामाकरणलाई आधार मानी नेपाली उपन्यासको विकासक्रमलाई प्रस्तुत गरिएको छ :

- क) प्राथमिक काल (वि.सं. १८२७ देखि १९४५ सम्म)
- ख) माध्यमिक काल (वि.सं. १९४६ देखि १९९० सम्म)
- ग) आधुनिक काल (वि.सं. १९९१ देखि हालसम्म)

#### ३.१.१ प्राथमिक काल (१८२७ देखि १९४५ सम्म) :

उपन्यासको पृष्ठभूमिकालमा औपन्यासिक कृति नभएर पनि नेपाली उपन्यासको पूर्वाधार भन्ने निश्चय नै मानिन्छ । उपन्यास लगायत अन्य आख्यानिक विधाको पूर्वाधारको रूपमा नेपाली उपन्यासमा सर्वप्रथम शक्तिबल्लभ अर्ज्यालको 'महाभारत विराटपर्व' (वि.सं. १८२७) र उनकै नाटयकृति 'हास्यकदम्ब' (वि.सं. १८८५) रचना भएको देखिन्छ । तत्पश्चात भानुदत्तको 'हितोपदेश मित्रलाभ' (वि.सं १८८३) संस्कृतबाट यथेष्ट प्रभावित देखिन्छ र त्यस्तै महाभारतबाट उद्धृत गरिएको लक्ष्मी धर्म संवाद (वि.सं. १८५१) द्वारा रामचन्द्र उपाध्यायले आख्यानलाई केही अघि बढाएको पाइन्छ भने वि.सं. १८७२ मा भवानी दत्त पाण्डेद्वारा लिखित मुद्राराक्षस सुन्दरानन्द वाँडाको त्रिरत्न सौन्दर्यगाथामा आख्यानको गतिशील परम्परालाई थप बल प्रदान गरेको देखिन्छ । ऐतिहासिक दृष्टिबाट हेर्दा पृष्ठभूमी कालमा वि.सं. १८७५ को

दशकुमार चरित्र पछि यही अध्यात्म रामायणले नै नेपाली उपन्यासका पृष्ठभूमि तयार पारेको देखिन्छ । यस प्रकार जम्मा ११८ वर्षको समयावधिमा उपन्यासको जन्मको आधार परेका साना-ठूला आकारको आख्यानहरूले नेपाली उपन्यासको विकासमा जग बसालेको देखिन्छ ।

### ३.१.२ माध्यमिक काल (१४४६-१९९०) :

धेरै जसो साहित्यका इतिहासकारहरूका अनुसार 'वीर सिक्का' को प्रकाशन मिति वि.सं. १९४६ हो । यसै कृतिदेखि 'रूपमती' (१९९१) सम्मको समयावधिलाई नेपाली उपन्यासको निर्माणकाल वा माध्यमिककाल भनिन्छ । 'वीर सिक्का' कृतिबाट नेपाली आख्यानको क्षेत्रमा नयाँ प्रकाशनको युगको उदय भयो । यो कृति औपन्यासिक विशेषता भएको कृति नभए पनि नेपाली साहित्यको आख्यान विधा अन्तर्गतको उपन्यास विधालाई निर्माण गर्ने मद्दत मिलेको देखिन्छ । यसपछि सदाशिव शर्माद्वारा सम्पादित उपन्यास ज्ञानभङ्ग तरङ्गिणी वि.सं. १९५९ भन्ने उपन्यासप्रधान पत्रिकाले कालको इतिहास नै तयार गरेको पाइन्छ । यस्तै पत्रिका शिवदत्त शर्माकै 'महेन्द्रप्रभा' (वि.सं. १९५९) लाई पहिलो मौलिक उपन्यास मानिन्छ । यसै समयमा बेनामीको अदभुत मिलाप (वि.सं. १९५८) पं. नरदेव पाण्डे अनूदित 'मेरिना चरित्र' (वि.सं. १९५९), ऋषभदेव शर्माको 'किस्सा सुकसारिका' (वि.सं. १९४९) प्रकाशमा आए पनि महेन्द्रप्रभा नै उत्कृष्ट देखिन्छ ।

यसैगरी माध्यमिक कालिन उपन्यासको विकासमा गिरीशबल्लभ जोशीको वीर- चरित्र (वि.सं. १९६०) उपन्यासको महत्वपूर्ण योगदान दिएको पाइन्छ । यस कालको उपन्यास विधालाई उर्वर पार्न विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूले पनि महत्वपूर्ण योगदान दिएको देखिन्छ र गोरखापत्र (१९५८) सुन्दरी (१९८३) गोर्खाली (१९७२) चन्द्र (१९७३) चन्द्रिका (१९७४) जन्मभूमी (१९७९) गोर्खा संसार (१९६३) लगायतका पत्रपत्रिकाहरूमा प्रकाशित रचना र धारावाहिक उपन्यासले यस्ता अवधिका उपन्यासको विकासमा महत्वपूर्ण योगदान दिएका छन् ।

नेपाली उपन्यासको माध्यमिक कालले पौराणिक, धार्मिक रोमाञ्चक र औपदेशिक उपन्यासहरू देखिन्छन् । हरिहरशर्माको शुकबहत्तरी (१९६४) दीर्घमानको सत्यनारायण व्रतकथा (१९४८) चिरञ्जीवि शर्माको सुखर्णव (१९५०) बेनामी एकादशी महात्मय (१९५२), रामकृष्ण शर्माको गोर्खाहास्य मञ्जरी (१९५२), शिवदत्त शर्माको वीर-सिक्का दोस्रो भागदेखि सम्पूर्ण (

१९५२) गंगाधर शास्त्रीको सर्वसंग्रह (१९५३) देवकी नन्दन खत्रीको चन्द्रकान्ता (१९५६), ऋद्धि बहादुर मल्लको शर्मिष्ठा (१९८५) आदि औपन्यासिक कृतिहरू महत्वपूर्ण देखिन्छन् । करिब साढे चार दशकको निर्माण कालमा नेपाली उपन्यासले धेरै प्रगति गरिसकेको देखिन्छ । यसै अवधिका उपन्यासकारहरूले विस्तारै आधुनिकताको झलक दिन थालेको देखिन्छ ।

### ३.१.३ आधुनिक काल (१९९१ देखि हाल सम्म) :

वि.सं. १९९१ मा प्रकाशित रूद्रराज पाण्डेको 'रूपमती' मा सर्वप्रथम सामाजिक यथार्थवाद पाउनु नै आधुनिकताको लक्षण थियो । परिवेशगत चेतना र मानवीय मूल्यको अन्तर्भाव पाउनु यस चरणको चरणगत विशेषता रहेको देखिन्छ । विकासको क्रमिक इतिहासभित्र अनेक प्रकृति तथा परम्परागतको स्थापना भइरहेको देखिन्छ । पाण्डेको रूपमतीबाट आधुनिकताको वरण भएपछि आधुनिक कालसँगै आदर्शोन्मुख यथार्थवादहरूको जन्म भएको पाइन्छ । विचारको उत्तरोत्तर विकासको क्रममा आधुनिक नेपाली उपन्यासले धेरै विचारधाराको जन्म दिदै गइरहेको देखिन्छ । यसकाललाई यथार्थवादी धारा, आदर्शवादी धारा, स्वच्छन्दतावादी धारा, सामाजिक यथार्थवादी धारा, अर्थात् आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारा, आलोचनात्मक यथार्थवादी, नवचेतनावादी धारा, अर्थात् आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारा, आलोचनात्मक यथार्थवादी, नवचेतनावादी धाराको विकास हुँदै गइरहेको छ । यिनीहरूको संक्षिप्त परिचय दिनु यहाँ सान्दर्भिक देखिन्छ ।

### ३.२ आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा देखापर्ने विभिन्न धाराहरू :

#### ३.२.१ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारा :

रूद्रराज पाण्डेद्वारा लिखित रूपमती (१९९१) उपन्यास प्रकाशित भए पश्चात् आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धाराको सुरुवात भएको हो । यस्ता धारामा आदर्श र मर्यादाको पाठहरू समावेश गरिएका हुन्छन् । यस धाराको केही उपन्यासकारहरू र तिनका उपन्यासहरू यस प्रकार छन् :

रुद्रराज पाण्डेको 'चप्पाकाजी' (१९९३) प्रयाश्चित (१९९३) 'प्रेम' (२००५) यस्तै टुकाराज मिश्रको 'शजवन्धकी' (१९९३) रामकृष्ण कुँवर राणा (१९९९), मोहन बहादुर मल्लको समयको हुरी (२०१५) आदि आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धाराका नेपाली उपन्यासहरू छन् ।

### ३.२.२ स्वच्छन्दतावादी धारा :

आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारापछि स्वच्छन्दवादी धाराको सुरूवात भयो । यस धाराको सुरूवात रूपनारायण सिंहको 'भ्रमर' (१९९३) उपन्यास भए पछि भएको हो । यस धारालाई मलजल गर्ने अन्य उपन्यासहरूमा रूपनारायण सिंहकै 'विजुली र अर्पणा' (२००६) आच्छाराई रसिक, लगन (२०१२), शिवकुमार राई 'डाक बङ्गला' (२०६३) आच्छाराई रसिक, लगन (२०१२), शिवकुमार राई 'डाक बङ्गला' (२०१३) हिरणय भोजपुरे छिट्टेन (२०५४) होमराज 'आचार्यको निर्दोष कैदी' (२०५४) आदि प्रमुख देखिन्छ ।

### ३.२.३ सामाजिक यथार्थवादी धारा :

वि.सं. २००४ सालमा आएर लैनसिंह वाड्देलको 'मुलुकबाहिर' उपन्यास संगसंगै आधुनिक उपन्यास परम्परामा सारा जीवन जस्तो छ त्यस्तो चित्रण गर्नु सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासको प्रमुख प्रवृत्ति हो । यस धारामा लैनसिंह वाड्देल 'माइतघर' (२००५) मोहन बहादुर मल्ल 'उजेली छाया' (२००८) लिल बहादुर क्षेत्री 'बसाई' (२०१४) लीलाध्वज थापा 'मन' (२०१५) ईद्र सुन्दास 'मङ्गली' (२०१५), तुलसिराम कुँवर 'रने' (२०१८) इद्र बहादुर राई 'आज रमिला छ' (२०२१), तारानाथ शर्मा 'ओभ्केल पर्दा' (२०२३) जगदीश घिमिरे 'लिलाम' (२०२७) बानिका गिरी 'कारागार' (२०३५) आदिले यस धारालाई मलजल गर्ने काम गरेका छन् ।

### ३.२.४ ऐतिहासिक यथार्थवादी धारा :

आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा सामाजिक यथार्थवाद पछि ऐतिहासिक यथार्थवादको थालनी भएको देखिन्छ । यस धाराको प्रारम्भ डायमण्ड शमशेरले गरेका छन् । यस धाराका उपन्यासकारहरू डायमण्ड समशेको 'सेतो वाघ' (२०३०) प्रतिवद्ध (२०३४), केशवराज पिडालीको एकादेशकी महारानी (२०४६), श्रीकृष्ण श्रेष्ठको 'जङ्गबहादुर' (२०५१)

दौलतविक्रम विष्टको 'फाँसीको फन्दामा' (२०५३) आदि ऐतिहासिक यथार्थवादी धाराका महत्वपूर्ण उल्लेख्य हुन् ।

### ३.२.५ अति यथार्थवादी धारा :

अतियथार्थवादी धारा भन्नाले यथार्थ भित्रको पनि यथार्थ भित्रको पनि यथार्थ खोज्नुलाई अतियथार्थ भनिन्छ । यथार्थको अतिक्रमण गर्ने र आन्तरिक पक्षलाई उदाङ्गो पार्ने साहित्यिक सिद्धान्तलाई अतियथार्थवाद भनिन्छ । नेपाली उपन्यासमा वाड्देलको 'लङ्गडाको साथी' (२००८) लाई प्रथम प्रयोग भएको मानिन्छ भने गोठालेको 'पल्लो घरको भ्याल' (२०१६) अर्जुन निरौलाको 'घाम डुबेपछि' (२०३३) आदिमा यस धाराको आंशिक प्रभाव पाईन्छ ।

### ३.२.६ आलोचनात्मक यथार्थवादी धारा :

अतियथार्थवादी धारा पछाडि आलाचनात्मक यथार्थवादी धाराको प्रारम्भ भएको पाइन्छ । यस धाराको उपन्यास 'स्वास्ती मान्छे' (२०११), 'एकचिहान' (२०१७) यस प्रकारका उपन्यास हुनु भने अरू उपन्यासहरूमा दौलत विक्रम विष्टको 'मञ्जरी' (२०१६) एक पालुवा अनेकौ याम (२०३५) 'बिग्रिएको बाटो' (२०३२) तानानाथ शर्माको 'मेरो कथा' (२०३५) 'ओभ्केल पर्दा' (२०३६) कविताराम श्रेष्ठको 'वकपत्र' (२०२६) आदि यस धारामा आधारित उपन्यासहरू हुन् ।

### ३.२.७ नारीवादी धारा :

पुरुष प्रधान देश नेपालमा पुरुषको सेरोफेरोमा नै नाचेको उपन्यासको भन्दा फरक फरक नारीहरूको हितका लागि चलाइएको औपन्यासिक भाववेग नै नारीवादी हो । यस धाराका उपन्यासहरूमा कृष्णचन्द्र सिंह प्रधानको 'स्वास्ती मान्छे' (२०११), विजय मल्लको 'अनुराधा' (१०१८७) वि.पी. कोइरालाको 'तीन घुम्ती' (२०२४) आदि मुख्य देखा पर्दछन् ।

### ३.२.८ मनोविश्लेषणवादी धारा :

यस धाराको थालनि वि.सं. २०१६ मा प्रकाशित 'पल्लो घरको भ्यालबाट' भएको हो । मनमा चेतना अवचेतन र यौनमनो विश्लेषण गर्नु यस धाराको मुख्य विश्लेषण हो । यस

धाराले मानिसका आन्तरिक निरीक्षण विश्लेषण अवलोकन र उसको मानचित्र नजरलगाउने काम गर्छ । यस धाराका परिचित उपन्यासकारहरू निम्न रहेका छन् :

गोविन्द बहादुर मल्ल गोठालो “पल्लो घरको भ्याल” (२०१६) विजय मल्ल ‘अनुराधा’ (२०१८) वि.पी. कोइराला ‘तीनघुम्ती’ (२०२५) भवानी भिक्षु ‘पाईप नं. २’ (२०३४) आदि रहेका छन् ।

### ३.२.९ विसङ्गतीवादी धारा :

विसङ्गतीवादी धाराको प्रारम्भ मनोविश्लेषणवादी धारा पछाडि भएको हो । यस नेपाली उपन्यासका क्षेत्रमा विसङ्गतिवादी धाराको आरम्भ इन्द्रबहादुर राईको ‘आज रमिता छ’ (२०२१) बाट भएको पाइन्छ । त्यसपछि पारिजातका ‘शिरिषको फूल’ (२०२२) र ‘महत्ताहीन’ (२०२५) ध्रुवचन्द्र गौतमको ‘अन्त्य पछि’ (२०३४) आदि उपन्यासहरूले यस धारामा रहेर जीवनको निस्साता र शून्यतालाई अभिव्यक्त गरेका छन् ।

### ३.२.१० अस्तित्ववादी धारा :

यस धाराको सुत्रपात पारिजातको ‘शिरिषको फूल’ (२०२२) बाट भएको मानिन्छ । अस्तित्ववादको मूल सिद्धान्त व्यक्ति सन्त्रास वा अस्तित्वको खोजी हो । यो विसंगतिका विचारबाट मान्छेले आफ्नो अस्मिता र अस्तित्वको खोजी गर्न थालेको देखिन्छ । आफ्नो जीवनको अर्थ आफै खोज्नु पर्छ भन्ने वारेमा निहित रहेको हुन्छ । यस धाराका उपन्यासकारहरू पारिजातको ‘शिरिषको फूल’ (२०२२) विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाको तीनघुम्ती (२०२४) ‘ध्रुवचन्द्र गौतमको अन्त्य पछि’ (२०२४) ‘डाँपी’ (२०३३) ‘अलिखित’ (२०४०) आदि यस धारामा महत्वपूर्ण उपन्यासहरू हुन् ।

### ३.२.११ प्रगतिवादी धारा :

यस धाराको सुरुवात वि.सं. २०११ मा प्रकाशित ‘स्वास्नीमान्छे’ बाट भएको हो । मार्क्सैली द्वन्द्वात्मक भौतिकवादलाई आधारमानी शोषणका विरुद्ध संघर्ष विशेषता हो । यस

धाराका प्रवर्तक हृदयचन्द्र सिंह प्रधान हुन् । यस धारामा प्रसिद्ध उपन्यासकारहरू निम्न रहेका छन् ।

हृदयचन्द्र सिंह प्रधान 'स्वास्तीमान्छे' (२०११) मुक्तिनाथ तिमिसनाको 'अछुत' (२०११) खड्ग बहादुर सिंह 'विद्रोह', १ (२०११) लीलाध्वज थापा 'पूर्वस्मृति' (२०१६) दौलत विक्रम विष्ट 'मञ्जरी' (२०१६) पारिजात 'महताहीन' (२०२५), ईस्माली 'सेतोआतङ्ग' (२०४०) रमेश विकल 'अविरल वगदछ इन्द्रावती' (२०४०) आदि रहेका छन् ।

### ३.२.१२ मिथकीय धारा :

आधुनिक नेपाली उपन्यासको विकास परम्पराको पछिल्लो चरणमा मिथकीय धारामा लेखिएका उपन्यासहरू पनि देखा पर्दछन् । मिथक भनेको सम्पूर्ण मानव संस्कृतिकको दस्तावेज र मानव प्रकृतिको अन्वेषण गरिएको प्रतिकात्मक अभिव्यक्ति हो । यस धारालाई अगाडि बढाउने काम सर्वप्रथम उपन्यासकार विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाको 'सुम्निमा' (२०२७) उपन्यासबाट भएको हो । त्यसपछि उनकै 'मोदिआइन' (२०२६), 'हिटलर र यहूदी' (२०४०), देखा पर्दछन् । त्यसै अर्को मिथकीय उपन्यासहरूमा मदनमणी दीक्षितको 'माधवी' (२०३९) र 'त्रिदेवी' (२०५१), ध्रुवचन्द्र गौतमको 'अग्निदत्त' (२०५२) राजेश्वर देवकोटाको 'द्वन्द्वको अवसान' (२०४१), दौलत विक्रम विष्टको 'ज्योति ज्योति महाज्योति' (२०४४) आदि महत्वपूर्ण उपन्यासहरू हुन् ।

### ३.२.१३ प्रयोगवादी धारा :

नेपाली उपन्यासमा वि.सं. २०२० देखि विविध प्रयोगहरू भएका छन् । कथ्य र शिल्पगत नवीन प्रयोग यस धाराको प्रमुख विशेषता हो । आधुनिक नेपाली उपन्यासको विकास मात्रामा छैटौँ दशकको मध्यान्हबाट नै प्रयोगवादी उपन्यासको रूपमा देखापरेका प्रयोगशिल नेपाली उपन्यासहरूको उपन्यासहरूमा ध्रुवचन्द्र गौतमको 'अन्त्यपछि' (२०२४) बालुवा माथि (२०३०) मञ्जुलको छेकुडोल्मा (२०४४) कवितारामको 'बकपत्र' (२०४६) गोविन्द भट्टराईको 'सुकरातका पाईला' (२०६३) आदि प्रमुख रहेको देखिन्छ ।

### ३.२.१४ नवचेतनावादी धारा :

प्रयोगवादीधारा पछाडि देखा परेका धारा नवचेतनावादी धारा हो । यस नवचेतनावादी धारालाई अगाडि बढाउने काम शंकर लामिछाने भैरव अर्याल, चन्द्र बहादुर राय, ध्रुवचन्द्र गौतम हुन् । यस कालका उपन्यासहरूमा सृजनात्मक लेखनलाई आजको अपेक्षित सत्य बनाइएको छ । यसै पक्षमा अभिमुख भएर सिर्जना गरिने कार्य अबका लेखनको मौलिक पहिचान बन्न गएको छ । यस धारामा केही उपन्यास र उपन्यासहरू तेजराय खतिवडा 'ट्रेष्टयुव बेबी' (२०५६) थाहा अभै उस्ते छ (२०५३) भयविधाहरू र रातको वाह बजे (२०५५), सर्वणा (२०५३) उपन्यासहरू कृष्ण धारावासी शरणार्थी (२०५६) राधा (२०५६) उपन्यासहरू सरूभक्तको त्रासदी (२०५८) आदि ।

### ३.३ वाडदेलका औपन्यासिक यात्राका चरणहरू स्थान :

वाडदेलले नेपाली साहित्यको उपन्यास क्षेत्रमा 'मुलुकबाहिर' (२००४) मार्फत यथार्थवादको प्रवर्तन गरेका छन् । यसपछि 'माइतघर' (२००६) मार्फत स्वच्छन्द प्रकृतवाद यथार्थको प्रयोग गरेका छन् भने लङ्गडाको साथी (२००७) मार्फत अतियथार्थवादको प्रयोग गरेका छन् र यस पछि रेब्रान्ट (२०२३) मा कलाकारको जीवनीसँग सम्बद्ध भएर जीवनीमूलक उपन्यास लेखेका छन् । यिनै चार उपन्यासका प्रकाशन र प्रवृत्तिका आधारमा वाडदेलको औपन्यासिक यात्रालाई यसप्रकार वर्गीकरण गर्न सकिन्छ ।

- क) प्रथम चरण (२००४-२००६)
- ख) द्वितीय चरण (२००६-२०२२)
- ग) तृतीय चरण (२०२३ देखि यता)

#### क) प्रथम चरण (२००४-२००६)

यस प्रथम चरणमा कथा लेखनमार्फत साहित्यमा प्रवेश गरेका वाडदेलले 'मुलुकबाहिर' (२००४) र 'माइतघर' (२००६) जस्ता दुईवटा स्तरीय उपन्यास लेखेका हुन् । गद्य लेखको विस्तृत औपन्यासिक लेखन यात्रामा प्रथम चरण मै उनी उत्कृष्ट उपन्यासकार हुन सक्षम भएका छन् । मुलुकभिन्नको यथार्थ स्थिति र मुलुकबाट बाहिरिएका काम र मामको खोजीमा

नेपालीहरूको जीवनको यथार्थलाई औपन्यासिक कलामा यथार्थवादी ढङ्गले प्रस्तुत गरेर उनी प्रथम यथार्थवादी उपन्यास लेखनका प्रवर्तनकर्ता भएका छन् । यति मात्रै होइन माइतघर मार्फत संस्कारले जगडिएको नेपाली समाजमा नैसर्गिक सहज स्वच्छन्द प्राकृत प्रेमलाई कुण्ठित पारेर प्रेम बीनाको बैवाहिक जीवन बिताउनु पर्ने र प्रेमको मार्मिक पक्षलाई प्रस्तुत गर्दै समाजले दाइ भने पनि मनमा भएको अतृप्त प्रेमले मुरली बजाएको कृष्ण नै देखेको छ । यी दुई उपन्यासको आधारमा प्रथम चरणका वाडदेल सामाजिक यथार्थवादका प्रयोगका र प्रकृतवादी यथार्थका प्रयोक्ता भएका छन् र यस रूपमा यिनको लेखन शिप र शैली एवं प्राप्ति उत्कृष्ट र उच्च स्थानमा रहेको छ ।

### ३.३.२ द्वितीय चरण (२००६-२०२२ सम्म)

प्रथम चरणमा औपन्यासिक लेखनको उत्कृष्ट स्थान प्राप्त गरेका वाडदेलको यस दोश्रो चरणमा पनि प्रसिद्ध उपन्यास लङ्गडाको साथी (२००७) लेखेर उत्कृष्ट बनि उच्च स्थान ओगटन सफल भए । हत भागी माग्ने लङ्गडाको जीवनको मार्मिक करूणिक चित्रण गर्दै मान्छेमा मानवता हराएको र लङ्गडाका लागि मान्छेमा हैन कुकुरमा प्रेम रहेको दृष्टि प्रस्तुत गर्दै मानवीय विघटन अवस्थाप्रति कटु व्यंग्य सभ्य संभ्रान्त समाजको खोक्रो आडम्बरको धज्जी उडाउदै लङ्गडाको मर्म मानवीय व्यंग्य सन्देश प्रसारित गर्दै मानवताको कारूणिक पक्ष र त्यसले निम्त्याएको यथार्थ हैन अतियथार्थको मार्मिक उद्घाटन गरेका छन् । समग्रमा मानवीय अतियथार्थको सवल प्रयोग नै यस चरणका वाडदेलको ठूलो प्राप्ति हुनु पुगेको छ ।

त्यसैले यस चरणमा लङ्गडाको साथी (२००७) मार्फत अतियथार्थवादको प्रयोग गरेको छ र उनको यस चरणमा औपन्यासिक स्थान उच्च रहेको ।

### ३.३.३ तृतीय चरण (२०२३-हालसम्म)

वाडदेलको प्रथम चरण सामाजिक यथार्थवाद र प्रकृत यथार्थवादका दृष्टिले द्वितीय चरण अतियथार्थवादका दृष्टिले र त्यो तृतीय चरण जीवनमूलक उपन्यास लेखनका दृष्टिले गरी तीनवटै लेखन चरण महत्वपूर्ण प्राप्तिका भएका छन् । यस चरणको महत्वपूर्ण कृति हो रेम्ब्रान्ट (२०२३) यसमा स्पेनिश प्रसिद्ध चित्रकार रेम्ब्रान्टले जीवनमा अनेक दुःख, कष्ट र संघर्ष भेलेर पनि कलाको संसारलाई केही दिन खोज्ने भावको त्याग, धैर्य र सेवामय दुःखान्त जीवन

भोगेको यथार्थको जीवनलाई औपन्यासिकीकरण गरेर नेपाली उपन्यासमा प्रथम जीवनीमूलक उपन्यासको थालनी गर्दछ । यसरी प्रथम चरणमै उत्कृष्ट र तृतीय चरणमा भन्नु सफल बन्दै अघि बढेका भेटिन्छन् । यसरी यी तिनवटा चरणका चारवटा उपन्यास लेखनमा वाङ्देल एक पछि अर्को लेखनमा भन्नु सिद्धान्त हुँदै अघि बढेका छन् । समग्रमा हेर्दा लैनसिंह वाङ्देल उपन्यास लेखन मार्फत नेपाली उपन्यासको क्षेत्रमा एक वरिष्ठ उपन्यासकारका साथै उनको स्थान नेपाली उपन्यासको जगत्मा उच्च स्थानमा रहेको छ ।

### ३.३.४ निष्कर्ष :

आर्थिक अभावका कारण केही कमाई होला कि भन्ने आशामा प्रवासिएको वाङ्देलको परिवारले दार्जिलिङ्गको पर्यावरणमा शिक्षित हुने मौका पायो । इमान्दार प्रतिभावान तथा लगनशील वाङ्देललाई सफलता प्राप्त गर्ने गरिबीले हेरेन । कलकत्ता गभर्मेन्ट कलेज अफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्समा प्रथम श्रेणीमा बंगाल प्रथम भएका वाङ्देललाई पेरिसमा आर्ट्स पढ्ने मौका मिल्यो । पाश्चात्य कलाको क्षेत्रमा उच्च मानिने पेरिसमा उनको प्रतिभाले फस्ट्याउने मौका पायो र विश्वभरि नै उनको कलाले ख्याति पायो ।

नेपाली साहित्यको विविध विधामा कलम चलाए पनि उनको मुख्य साहित्यिक विधा उपन्यास नै हो । नेपाली उपन्यास परम्परामा छुट्टै मोड प्रदान गर्न सफल उनको मुलुकबाहिर (२००४) उपन्यास फ्रान्सेली यथार्थवाट प्रभावित देखिन्छ । नेपाली समाजको यथार्थ चित्रण गर्न अत्यन्तै सफल मुलुकबाहिर एक नौलो प्रस्तुति हो । यसै चरणमा उनको अर्को सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास 'माइतघर' (२००६) प्रकाशित भयो । उनको दोस्रो चरणमा प्रतिनिधित्व गर्ने 'लङ्गडाको साथी' (२००८) उपन्यासले नेपाली साहित्यमा यथार्थवादलाई चित्र्याउन सफल भयो । रेब्रान्ट (२०२३) वाङ्देलको औपन्यासिक यात्राको तेस्रो चरणको प्रतिनिधित्व गर्ने उपन्यास हो । यसले वाङ्देलको जीवनीपरक उपन्यास लेखनको प्रवृत्तिलाई नमूनाको रूपमा प्रस्तुत गर्न सफल भएको छ ।

पाश्चात्य साहित्य रचनाको प्रभाव नेपाली गद्य लेखनमा ल्याएर सामाजिक यथार्थलाई मूल प्रयोग बनाउँदै नौलो आयामिक साहित्य लेखनको सुत्रपात गर्ने वाङ्देलका सबै रचनाहरूले आ-आफ्नो स्थानमा उच्चता प्राप्त गरेका छन् ।

अतः लैनसिंह वाड्देलको स्थान नेपाली साहित्यको जगतमा उच्च र अवस्मरणीय रहेको छ । लैनसिंह वाड्देलले नेपाली साहित्यको उपन्यास विधामा नयाँ मोड र योगदान दिन सफल भएका छन् । जसको कारण लैनसिंह वाड्देलको स्थान नेपाली साहित्यमा उच्च रहेको छ ।

### ३.४ साहित्यका अन्य विधाका तुलनामा उपन्यास

साहित्यका विभिन्न विधाहरूमध्ये उपन्यास पनि एउटा सशक्त विधा हो । साहित्यका अन्य विधाका तुलनामा उपन्यासको के-कस्तो सम्बन्ध रहेको छ भन्ने कुरा छुट्याउन यस शीर्षकको प्रमुख उद्देश्य हो । अन्य विधाका सापेक्षतामा उपन्यासलाई कुन-कुन रूपमा अलग मान्न सकिन्छ र कुन-कुन विन्दुमा समान मान्न सकिन्छ, सो देखाउनुपर्ने भएकोले विधाका वीचमा भएका भिन्नता र समानता केलाउने सम्बन्धमा कथा, आत्मकथा, नाटक र महाकाव्य विधालाई अधिसार्न सकिन्छ ।

#### ३.४.१ उपन्यास र कथा

गद्य साहित्यका आधुनिक विधाहरूमध्ये लोकप्रिय विधाका रूपमा देखिएका कथा र उपन्यास दुबै स्वतन्त्र छन् । यी दुबैलाई एक-अर्कासँग तुलना गरेर हेर्दा केही समानता र केही असमानताहरू देखिन्छन् । समानताले दुबैलाई निकटमा ल्याउँछन् भने असमानताहरूले दुबैलाई अर्काबाट छुट्याउँछन् । त्यसैले यी दुबैका समानता तथा भिन्नतालाई निम्नानुसार देखाउन सकिन्छ ।

#### ३.४.१.१ समानता :

- १) कथा र उपन्यास दुबै विधा गद्यमा लेखिन्छन् ।
- २) यी दुबै आख्यान हुन् ।
- ३) दुबै विधामा काल्पनिकता प्रयोग हुन्छ । कुनै घटना आदिको चर्चा गर्दा वा ऐतिहासिक विषयलाई आधार बनाउँदा पनि कल्पनालाई नै महत्व दिएको पाइन्छ ।
- ४) कथा र उपन्यास दुबैको उद्देश्य सामाजिक जनजीवनको चित्रण गरी भाँकी प्रस्तुत गर्नु हो र मानवीय मूल्य-मान्यताको उद्घाटन गर्नु हो ।

- ५) कथा र उपन्यास दुवैमा कथानक, चरित्र, परिवेश वा वातावरण, द्वन्द्व, भाषाशैलीजस्ता आधारभूत तत्वहरू आवश्यक ठानिन्छन् ।
- ६) दुवै विधामा सामाजिक परिवर्तन तथा सुधारको अपेक्षा गरिएको हुन्छ ।
- ७) दुवै विधा वर्णनात्मक हुन्छन् । खासगरी कथा र उपन्यासमा विश्लेषण गरिएको भए पनि वर्णनात्मकता पनि पाउन सकिन्छ ।
- ८) कथा र उपन्यास दुवैलाई गद्य साहित्यको आधुनिक युगको देन मान्न सकिन्छ ।
- ९) कथा र उपन्यास दुवै विधामा सरलता, सहज र सरस बोलीचालीको गद्य भाषाको प्रयोग गरिएको हुन्छ ।
- १०) कथा र उपन्यास दुवै विधा पाठ्य श्रव्य मानिन्छन् ।
- ११) दुवै विधामा समाख्याताको उपस्थिति रहन्छ ।  
यसरी यी दुबैलाई बुँदागत रूपमा हेर्दा यी दुवै बीचमा अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध रहेको तथ्य प्रष्ट हुन आउँछ ।

### ३.४.१.२ असमानता :

- १) कथा र उपन्यास दुवै नै अलग अस्तित्व भएका स्वतन्त्र विधा हुन् । यिनीहरूका बीचमा आफ्नै मौलिकता पाउन सकिन्छ ।
- २) संरचना पक्षमा यी दुवै विधा भिन्न-भिन्न छन्, कथा कम्तीमा चार हरफदेखि लिएर बढीमा पचास-साठी पृष्ठसम्मको मात्र हुन सक्दछ भने उपन्यास चाहिँ पचास-साठी पृष्ठदेखि माथि तीन-चार हजार पृष्ठसम्मको पनि हुन सक्दछ ।
- ३) आयामका दृष्टिले हेर्ने हो भने कथामा जीवनको एउटा पक्ष वा सानो टुक्रा व्यक्तिएको हुन्छ तर उपन्यासमा जीवनको बृहत् आयामलाई समेटिएको हुन्छ । अथवा जीवनको कुनै एक खण्डको व्यापकताको प्रस्तुति भएको पाइन्छ ।
- ४) कथाले समेट्ने क्षेत्र सानो हुन्छ । वा कुनै एक क्षेत्रलाई मात्र यसले ओगटेको हुन्छ । तर उपन्यासको क्षेत्र व्यापक र विस्तृत हुन्छ । उपन्यासले सम्पूर्णतालाई ओगटेको हुन्छ ।
- ५) कथा आफ्नो निर्दिष्ट गन्तव्यस्थानमा जान ज्यादै हतारिन्छ । तर उपन्यास चाहिँ विशाल क्षेत्र र फाँटबाट चहादै सुस्त गतिले वहन रूचाउँछ ।

- ६) कथालाई पहाडबाट गड्डडाएर हतारिएर भरेको वर्षाको खहरे खोला भन्न सकिन्छ, भने उपन्यासलाई साना-ठूला खोला तथा नदीलाई समेटेर व्यापक र विशालताका साथ बहने ठूलो महासागरका रूपमा लिन सकिन्छ ।
- ७) कथाको परिधि सानो हुन्छ, जसबाट जीवनको एउटा सानो संसारमात्र देख्न सकिन्छ, तर उपन्यास विकाश आकाश हो जहाँबाट विश्व ब्रह्माण्ड देख्न सकिन्छ ।
- ८) कथामा पात्रहरूको उपस्थिति ज्यादै कम हुन्छ । यसमा एउटै मात्र पात्रले पनि जीवनको मार्मिक पक्षको उद्घाटन गर्न सक्दछ, तर उपन्यासमा पात्रको खचाखच उपस्थिति रहन्छ ।
- ९) कथालाई एक थुङ्गा फूलका रूपमा लिन सकिन्छ, जसबाट मात्र वासना लिन सकिन्छ, तर उपन्यास एउटा विशाल उद्यान हो जहाँ विभिन्न किसिमका फूलहरू फुलेका हुन्छन् र विभिन्न किसिमका फूलहरूको वासना लिन सकिन्छ ।
- १०) कथामा एउटा मात्र मूल कथा हुन्छ, तर उपन्यासमा धेरै उपकथा पनि जोडिएका हुन्छन् ।
- ११) कथामा उद्देश्य एउटै रहन्छ, तर उपन्यासमा बहुउद्देश्यीय हुन्छ ।
- १२) प्रस्तुतीकरणका दृष्टिले हेर्दा कथा चाहिँ एकै बसाइमा पढेर सकिने विधा हो तर उपन्यास विस्तृत रूपमा वर्णन गरिएको विशाल आयाम बोकेको समयको सीमा नभएको गद्य रचना हो ।

### ३.४.२ उपन्यास र आत्मकथा

#### ३.४.२.१ समानता

- १) उपन्यास र आत्मकथा दुवै नै रोचक हुन्छन् ।
- २) यी दुवै आख्यान हुन् ।
- ३) उपन्यास आत्मकथात्मक पनि हुन्छ, त्यस्तै आत्मकथामा पनि औपन्यासिकता हुन्छ ।
- ४) उपन्यास र आत्मकथा दुवै नै आयामका दृष्टिले बृहत् संरचना भएका विधाहरू हुन् ।
- ५) उपन्यास र आत्मकथा दुवैमा गद्य भाषाको प्रयोग गरिन्छ ।
- ६) दुवैमा चारित्रिक महत्वलाई दर्शाइएको हुन्छ ।

७) दुवै आधुनिक युगका अत्यन्त लोकप्रिय विधाका रूपमा परिचित छन् ।

### ३.४.२.२ असमानता

- १) उपन्यासमा कुनै व्यक्तिको चारित्रिक विशेषताका बारेमा चर्चा-परिचर्चाका साथै जीवनको व्यापकताको चर्चा गरिएको हुन्छ । तर आत्मकथामा लेखकले आफ्नो इतिहासलाई अघि सारेको हुन्छ, जसले व्यापकतालाई नसमेट्न पनि सक्दछ ।
- २) उपन्यास प्रथम पुरूषका अतिरिक्त अन्य पुरूषमा पनि लेखिएको हुन्छ तर आत्मकथा प्रथम पुरूषमा नै लेखिनुपर्दछ ।
- ३) उपन्यासमा विषयवस्तुको प्रस्तुतीकरण गर्दा आफ्नो वा अर्काकै बारेमा पनि हुन सक्दछ तर आत्मकथामा केवल आफ्नैबारेमा मात्र हुन सक्दछ ।
- ४) उपन्यासमा विषयवस्तु वा कथ्यवस्तुलाई अघि बढाउन (नायक-नायिका) मूल पात्र र सहायक पात्रहरूको छनोट गरिएको हुन्छ, तर आत्मकथामा नाटक वा मुख्य पात्र आफै हुन्छ ।
- ५) उपन्यासमा पात्रहरूको चारित्रिक विशेषताको उल्लेख गर्न सकिन्छ तर आत्मकथामा आफ्नै कुरा हुने भएकोले राम्रा कुराहरू मात्र देखाएर नराम्रा कुराहरू हटाउन पनि सकिने हुन्छ ।

### ३.४.३ उपन्यास र नाटक

#### ३.४.३.१ समानता

- १) उपन्यास र नाटक दुवै नै गद्य रचनामा आधारित गद्य विधा हुन् अथवा आधुनिक युगमा यी दुवैलाई गद्यमय भाषाद्वारा नै व्यक्त गरिन्छ ।
- २) यी दुवै विधा आख्यानात्मक र साहित्यिक रूपमा बराबर रहेका छन् ।
- ३) यी दुवै विधामा आधारभूत तत्वको समानता पाइन्छ, अथवा उपन्यासमा पाइने औपन्यासिक तत्व कथानक, पात्र, संवाद, कथोपकथन, परिवेश तथा भाषाशैली समानरूपमा आउँछन् ।
- ४) यी दुवैमा विचारको प्रवाह शृङ्खलित र व्यवस्थित हुन्छ ।

### ३.४.३.२ असमानता

- १) उपन्यास परिच्छेद वा अध्यायमा विभाजित हुन्छ भने नाटक चाहिँ अङ्क वा दृश्यमा विभाजित हुन्छ ।
- २) उपन्यासमा सुरुमै अनुच्छेद हुन्छ तर नाटकमा अङ्कपछि मञ्चन अनि निर्देशनपछि मात्र संवादको व्यवस्था हुन्छ र पात्रले बोल्न सुरु गर्दछ ।
- ३) उपन्यास र नाटकमा स्पष्ट रूपमा पाउने भिन्नता के हो भने उपन्यास पढ्दा विगतका कुनै घटना वा विषयवस्तुको अध्ययन गरेजस्तो अनुभव हुन्छ तर नाटकमा चाहिँ पात्रहरूद्वारा मञ्चन गरी देखाइने भएकोले भूतकालिक कुराहरू भए पनि वर्तमानमा घटिरहेको घटनाजस्तो लाग्दछ ।
- ४) उपन्यासको प्रस्तुतीकरण अप्रत्यक्ष हुन्छ तर नाटकमा पात्रहरूले प्रत्यक्षरूपमा उभिएर वा अभिनय गरेर प्रस्तुतीकरण गर्दछन् ।
- ५) उपन्यास पाठकद्वारा पढिने विधा हो त्यसैले यसलाई श्रव्य भेदका रूपमा लिइन्छ तर नाटक मञ्चमा मञ्चन भएको दृश्य हेरिने भएकाले यसलाई दृश्य भेदका रूपमा लिइन्छ ।
- ६) उपन्यासमा संवाद त हुन्छ तर त्यो ऐच्छिक रूपमा प्रस्तुत हुन्छ तर नाटकमा चाहिँ पात्रहरूले मञ्चमा उत्रिएर अनिवार्य रूपमा संवादको प्रयोग गर्नुपर्दछ ।
- ७) आकार-प्रकारका दृष्टिले उपन्यास जति लामो पनि हुन सक्दछ अथवा यो असीमित हुन्छ तर नाटक चाहिँ असीमित नभएर सीमित आकारको हुन्छ ।
- ८) उपन्यास वर्णनात्मक शैलीमा लेखिन्छ तर नाटक चाहिँ कार्यात्मक हुन्छ ।
- ९) उपन्यासलाई पाठकले घरैमा बसी बसी पढ्न, बुझ्न तथा मनोरञ्जन गर्न सक्दछ तर नाटकका लागि नाट्यघरमा पुग्नुपर्दछ अनि मात्र उसले नाटकको मर्म राम्ररी बुझ्न सक्दछ ।
- १०) उपन्यास बन्धनमुक्त साहित्यिक गद्य विधा हो जसलाई जहाँ पनि र जसरी पनि पढ्न वा अध्ययन गर्न सकिन्छ । त्यस्तै यसमा कुटपिट, लुटमार, हत्या, बलात्कार, सम्भोग आदिको सहजताका साथ उल्लेख गर्न सकिन्छ । तर नाटकमा त्यस्तो कुरा देखाउन मञ्चीय दृष्टिले सम्भव देखिदैन । यसका आफ्नै सीमाहरू हुन्छन् ।
- ११) उपन्यासमा भव्य वातावरणको चित्रण गर्न सकिन्छ तर नाटकमा सकिँदैन ।

- १२) भाषाको प्रयोगको सन्दर्भलाई हेर्दा पनि उपन्यासमा सरल वा क्लिष्ट दुवैको प्रयोग हुन सक्दछ तर नाटकमा दर्शकहरूले बुझ्न सक्ने सरल भाषाको मात्र प्रयोग गरिनुपर्दछ ।

### ३.४.४ उपन्यास र महाकाव्य

#### ३.४.४.१ समानता

- १) उपन्यास र महाकाव्य दुवै नै विशाल आकारका कृतिहरू हुन् ।
- २) दुवै विधामा अडानमा स्वतन्त्रता रहन्छ ।
- ३) दुवै विधामा जीवनको व्यापकताको चित्रण गर्न सकिन्छ ।
- ४) उपन्यास र महाकाव्य दुवैमा जीवनको व्यापक विस्तृत रूपमा चर्चा गर्ने उद्देश्यले राखिएको हुन्छ ।
- ५) यी दुवै विधाले आफ्नो विस्तार भूमि समाजलाईहरू बनाएका हुन्छन् ।
- ६) यी दुवै विधामा व्यापक आयम समेटिएको हुन्छ ।
- ७) यी दुवै विधामा पात्रका माध्यमबाट विषय वा घटनालाई अघि बढाउने कार्य गरिन्छ ।
- ८) दुवै विधामा अध्याय, परिच्छेद वा सर्गको व्यवस्था हुन्छ । जो यस्ता कृतिमा आवश्यक हुन्छ ।

#### ३.४.४.२ असमानता

- १) उपन्यास र महाकाव्य भाषिक दृष्टिले देखिन्छन् कसरी भने उपन्यासमा गद्य भाषाको प्रयोग गरिन्छ तर महाकाव्य पद्यको प्रयोग गरिन्छ ।
- २) उपन्यासमा सामान्य व्यक्तिलाई प्रमुख पात्रका रूपमा अघि सारेर विषय वा कथ्यलाई डोर्याउन सकिन्छ तर महाकाव्यमा महान् व्यक्ति, राजा, राजकुमार उदात्त गुण भएका व्यक्तिको उपस्थिति हुनु अनिवार्य मानिन्छ ।
- ३) उपन्यासमा सामाजिक यथार्थताको घेराबाट बाहिर जान कठिन हुन्छ अथवा यसमा बन्धन हुन्छ तर महाकाव्यका असीमित रूपमा कतिवात्मक उडान पाइन्छ ।
- ४) उपन्यासमा साधारण बोलीचालीको भाषा प्रयोग गर्न सकिन्छ तर महाकाव्यमा बोलचालको भाषाभन्दा टाढा बसेर पात्रहरूले कवितात्मक भाषाको प्रयोग गर्नुपर्ने हुन्छ

। त्यसैले उपन्यासमा स्वाभाविकता र सरलता पाउन सकिन्छ, तर महाकाव्यमा कृत्रिम भाषाको प्रयोग भएको पाइन्छ ।

### ३.५ निष्कर्ष :

नेपाली उपन्यासको प्राथमिक काललाई केवल पूर्वाधारका रूपमा लिन सकिन्छ । शक्ति वल्लभ अर्ज्यालको 'महाभारत विराटपर्व' (२०१८) बाट प्राथमिक कालको सुरुवात भएको पाइन्छ । प्राथमिक कालमा केवल मनोरञ्जन, नीति, उपदेशले भरिएका आख्यानत्मक अनुदित रचनाहरू मात्र पाइन्छन् । यिनीहरूले कथायोजना लेखन शैली र आख्यान शिल्पविधानका दृष्टिले उपन्यासको उत्थान र विकासमा योगदान प्रारम्भ पुऱ्याएको देखिन्छ । माध्यमिक काल शिवदत्त शर्माका वीरसिक्का (१९४६) बाट भएको देखिन्छ । रोमाञ्चक तिलस्मी, जासुसी, ऐयारी उपन्यास यसकालमा लेखिए तिनले नेपाली उपन्यासको आधुनिक कालको निर्माणमा उल्लेख्य भूमिका निर्वाह गरेका छन् ।

यसरी उपन्यास विधाले नेपाली उपन्यास परम्परामा प्राथमिककालीन परम्परागत संस्कृत कथा लोक आख्यानबाट सुरु भएको नेपाली गद्याख्यानले ऐयारी, तिलस्मी जस्ता अनुवाद मूलक औपन्यासिक प्रवृत्तिबाट विस्तार हुदै आजको परिष्कृत उपन्यासको रूप धारण गर्न सफल भएको देखिन्छ । यस विधाले दिनप्रतिदिन साहित्यको एउटा महत्वपूर्ण विधाको रूपमा अगाडि बढिरहेको स्थितिमा छ । वि.सं. १९९१ बाट सुरु भएको आधुनिक नेपाली उपन्यासको परम्परामा पुग नपुग सप्त दशक पार नगर्दै विविध प्रवृत्तिका साथ यसले नेपाली साहित्यमा छुट्टै पहिचान राख्न सफल भएको छ । यसमा उपन्याससँग विभिन्न विधाको समानता र असमानता केलाइएको पाइन्छ ।

समय सापेक्ष रूपमा आदर्शवादी धाराबाट सुरु भएको उपन्यास परम्परा अन्तर्राष्ट्रिय प्रभाव र देशको बदलिदो अवस्था र जनचाहाना अनुरूप स्वच्छन्दता वादी, यथार्थवादी, मनोविश्लेषणवादी, विसङ्गतीवादी अस्तित्ववादी, प्रकृतवादी, प्रगतिवादी, नारीवादी प्रयोगवादी, आदि धाराहरूमा विकासको गतिमा अघि बढ्दो छ । सयौंको संख्यामा उपन्यासकारहरूले लेखन र प्रकाशन गरिरहेको आधुनिक नेपाली उपन्यासको परम्पराको समकालीन अवधि आशाप्रद रूपमै अघि बढेको छ र यसको भविष्य उज्ज्वल देखिन्छ ।

## अध्याय-चार

### “उपन्यासको सैद्धान्तिक परिचय”

#### ४.१ उपन्यासको परिचय

पूर्वीय तथा पाश्चात्य साहित्यमा उपन्यास विधाको अध्ययन धेरै पहिलेदेखि नै भएको पाइन्छ। संस्कृति साहित्यमा उपन्यास शब्दको प्रयोजनपरक अर्थ यसरी गरिएको छ - ‘उपपत्ति कुट्टी छि’ अर्थ उपन्यास सङ्गीतिक अर्थात् कुशलतापूर्वक विशेष थर्भ प्रकट गर्ने उपन्यास हो भन्ने अर्थ प्रवर्तन गरिएको छ। अथवा जीवनको सत्यपक्षलाई भाषाद्वारा आफ्नो नजिकमा विन्यास गरिनु उपन्यास हो। प्रस्तुती आफैमा जीवनका प्रतिरूप भएर समीपमा अभिव्यक्ति गर्दै जानु उपन्यास हो भन्ने कुरा प्रकट हुन्छ। जीवनको नालीवेली सत्यलाई अभिव्यक्त गर्ने क्रममा पश्चिमी साहित्यका इतिहासलाई पनि यहाँ स्मरण गर्नु सान्दर्भिक देखिन्छ। आख्यान विधाअन्तर्गत पर्ने उपन्यास पाश्चात्य साहित्यमा धेरै विकसित विधाको रूपमा मानिन्छ। अंग्रेजी साहित्यमा आज प्रचलित नोवेल (Novel) शब्द ल्याटिन भाषाको नोबोल्स (novels) अर्थात् नोबोलस (novallows) बाट विकसित भएको मानिन्छ। यसै ल्याटिन भाषाबाट विकसित हुँदै फ्रान्समा पुगेको नोबेल्ला (novella) शब्द उपन्यासका अर्थमा प्रयोग हुनु पुगेको छ। आज नोबेल (novel) शब्दको प्रविधिक अर्थ उपन्यास बनेको छ। यसको ल्याटिनमूलको अर्थ के हो भने नोवेल अर्थात् समाचारपत्र। समाचारपत्रलाई संकेत गर्न नोवेल्ला (Novella) शब्द प्रयोग हुन्थ्यो। त्यसको सामान्य अर्थ केवल घटनालाई समाचारको रूपमा सम्प्रेषित गर्नु भने हुन्थ्यो। तर यसको अर्थगत, प्रयोगगत प्रयोजनीयता आज अर्कै भएको छ, अथवा घटना, वस्तु, पात्र, परिवेश, कुतूहलता द्वन्द्व, प्रस्तुति विशेष समेतको आख्यानात्मक प्रतिपादनलाई उपन्यास भन्ने अर्थ दिन थालिएको छ। आज उपन्यास शब्दले गद्यात्मक आख्यानको जीवनसापेक्ष प्रस्तुती हो र नोवेल शब्दका आधुनिक उत्पत्ति हो भन्ने कुराको बोध गराउँछ।

उपन्यास साहित्यको आख्यान विधा अन्तर्गत पर्दछ। साहित्य समाजको दर्पण मानिन्छ। उपन्यासले पनि साहित्यको एक विधाको रूपमा समाजलाई चित्रण गर्दछ। उपरोक्त उपन्यासको परिचयलाई दृष्टिगत गर्दा औपन्यासिकले केही अंगहरू अंगिकार गरेको हुन्छ।

उपन्यासकार अङ्गहरू अन्तर्गत घटना, हृदय, स्थान, चरित्र, उद्देश्य आदिको संगठनबाट परिपूर्ण मनोरञ्जनात्मक व्यापक परिवेश बन्धनहीनता, जीवन र जगत्को निकटतम् चित्रण हुनाले बढी यथार्थ प्रयोगगद्यमै सम्भावनाले गर्दा सधै नवीन अतिगहण र सूक्ष्म साहित्यिक विधा नै उपन्यास हो भन्न सकिन्छ ।

## ४.२ “पूर्वीय मान्यतामा उपन्यासको व्युत्पत्तिगत अर्थ”

‘अस’ धातुमा ‘उप’ नि उपसर्ग र हास् (अ) प्रत्यय जोडिएर उपन्यास शब्दको निर्माण भएको छ । उपन्यासको योगबाट बनेको यो शब्दको ‘उप’ को अर्थ नजिक र ‘न्यास’ को अर्थ ल्याएर राख्नु भन्ने हुन्छ । माथि कै व्युत्पत्तिगत अर्थले मात्र उपन्यासको अर्थ स्पष्ट हुदैन उपन्यासको व्युत्पादन प्रकृत्यालाई बुझ्न यसको गहिराइसम्म पुग्नु पर्ने हुन्छ । त्यसैले उपन्यासको व्युत्पत्ति सम्बन्धमा विभिन्न विद्वानहरूले प्रकट गरिएका धारणालाई यहाँ समेटिएको छ ।

‘उपन्यास’ शब्द ‘उप’ र ‘नि’ उपसर्ग ‘अस्’ धातु र ‘धञ्’ प्रत्ययको योगबाट बनेको हो । यसरी कुनै वस्तुलाई कसैको नजिक राख्नु नै उपन्यास कै अर्थ हुन आउँछ ।

पूर्वीय साहित्यमा उपन्यासको अर्थ प्रसन्न गराउनु हो । उप (असीम) न्यास (राख्नु) अर्थात् अतियुक्त कलात्मक ढङ्गले कुनै वस्तुलाई गद्यमा सरल बनाउन राख्नु उपन्यास हो ।

संस्कृत साहित्यमा उपन्यासलाई विभिन्न अर्थमा प्रयोग गरिएको छ । भरत मुनिले कुनै अर्थलाई मुक्तिगत रूपमा प्रस्तुत गरिने नाटकको प्रतिमुख सन्धिको एउटा उपभेदका रूपमा लिएका छन् । (पराजुली)

‘अमरकोष’ मा उपन्यासलाई बाङ्मयका प्रयोग गरिएको छ । काव्यलङ्कारमा विन्यास तथा स्थापना, काव्य दर्पणमा स्थापना वा ज्ञापन महाभाष्यमा कथन, किराँतर्जुनिभमा उदाहरण र अभिज्ञान शाकुन्तलमा कल्पित कथनको अर्थमा प्रयोग गरिएको छ । औपन्यासिक प्रयोगका दृष्टिले आधुनिक उपन्यासको शास्त्रीय रूपमा प्रतिष्ठापन नभई नजेलसम्म पूर्वीय साहित्यमा उपन्यास एक प्रकारको घटना र विषयवस्तु नियोजन भएको अनुभव हुन्छ ।

### (प्रतापसिंह प्रधान)

उपरोक्त धारणालाई नियाल्दा पूर्वीय साहित्यमा उपन्यासको शाब्दिक र आर्थिक एकरूपता नभएको देखिन्छ । औपन्यासिक अर्थले आज कोलाई समेट्न सकेको छैन । आजको उपन्यासको गद्य साहित्यको एउटा छुट्टै विधाको रूपमा स्थापित भइसकेको छ ।

### ४.३ उपन्यासका परिभाषाहरू

उपन्यास विधाको जन्मकालदेखि हालसम्मको परिभाषाहरूमा एकरूपता पाईदैन । समयको परिवर्तन संगसंगै उपन्यासको परिभाषामा पनि बदलिदै गएको देखिन्छ । केही पूर्वीय तथा पाश्चात्य शब्दकोषका परिभाषाहरूलाई अध्ययन गर्दै निष्कर्षमा पुग्नु यस सन्दर्भमा उपयुक्त देखिन्छ ।

क) बृहत् आकार भएको गद्याख्यान अथवा वृत्तान्त जस अन्तर्गत वास्तविक जीवनको प्रतिनिधित्व गर्ने पात्र चरित्र र कार्यको कथानकका आधारमा चित्र गरिएको हुन्छ ।

-न्यू इङ्लिस डिक्सनेरी

ख) “बृहत् र बहतर आख्यानात्मक रचनाको प्रस्तुति उपन्यास हो”

- क्याम्ब्रिज इन्साइक्लोपिडिया

ग) “उपन्यास (Novel) साहित्यको अठारौँ शताब्दीपछि गद्यात्मक आख्यानलाई बुझाउने अभिधात्मक शब्द हो । यसमा मानव जीवनको व्यापक पक्ष समेटिएको हुन्छ । उदारणका लागि रबिन्स क्रुसो ताम्जोम्स जस्ता बृहत् उपन्यास र चार्ल्स डिकेन्स बात्जाक जोला र दस्तोभस्की जस्ता स्रष्टाका आख्यान रचना सफल उपन्यासहरू हुन ।

विश्व युनिभरसिटी इनसाइक्लोपिडिया

घ) “म उपन्यासलाई मानव जीवनको चित्र मान्छु । मानवीय माथि प्रकाश पार्नु र जीवनको रहस्यलाई उद्घाटन गरिदिनु उपन्यासको मूल काम हो”

प्रेमचन्द हिन्दी साहित्यकोश

ड) “उपन्यासले कल्पनाका आधारमा एउटा संसार खडा गरिन्छ, कहिलेकाँही त उपन्यासमा यति सबल क्रम प्राप्त हुन्छ-हामी त्यसै भित्र हराएर सन्तोष प्राप्त गर्न पुग्दछ” - डा. गोपाल राय

च) “उपन्यास जीवन र जगत्प्रति नै एक विहङ्गम दृष्टि हो । जसलाई बुझ्ने, केलाउने र चित्रण गर्ने र प्रयत्न यथार्थिक हुन्छ । यथार्थको उद्घाटन मात्र नभएको यो एक महत्वपूर्ण मनुष्य जीवित मनुष्यको संसार हो ।”

-कृष्णचन्द्र सिंह प्रधान

छ) “उपन्यास भनेको जीवनको यथात्लाई भाषामा उतार्ने विधा हो । जीवनको प्रतिबिम्बन गर्न सक्ने आख्यानात्मक सूचना उपन्यास हो र साँचो एवं सफल उपन्यास जीवनको मार्गदर्शक बन्न सक्छ ।”

- इन्द्रबहादुरराई

(ज) “कुनै शाश्वत मानवीय कर्मको अविस्मरणीय कलात्मकताले नै उपन्यासलाई महान् बनाउँछ ।”

- समालोचक डा.वासुदेव त्रिपाठी

(झ) “बहुविध संरचनात्मक एकाईद्वारा हरेक अंग तथा व्यापक श्रृङ्खलावद्ध भई निश्चित मूल्य प्राप्त गरेका तथा व्यापक परिधि भरिएको समय र स्थान भित्र विस्तारित भएको कलासौर्न्ययुक्त गद्यलाई उपन्यास भनिन्छ ।”

-दयाराम श्रेष्ठ र मोहनराज शर्मा

(ञ) “पूर्वीपर तारतम्यमा सुसम्बद्ध गरेर लेखिएका आख्यात्मक रचनालाई उपन्यास भनिन्छ ।”

- राजेन्द्र सुवेदी

(ट) “उपन्यासको सीमा असिमित हुने हुनाले यसको रचनाको गर्दा लेखकले आफ्नो स्वतन्त्रताको मनग्ये प्रयोग गर्न पाउँछ । अरू विधामा आकार, शिल्प तथा शैलीको बन्धन नमानी हुन्छ । तर उपन्यासका निमित्त कुनै किसिमको छेकवार छैन । त्यसैले यसमा महाकाव्यको उदात्तता, प्रबन्धको, निबन्धको निजात्मकता नाटकको सक्रियता, गीति काव्यको तीक्ष्णता, व्यङ्ग्यकाव्यको सरलता ती सबै विशेषता समावेश भएको हुन्छ ।”

-ईश्वर बराल

उपरोक्त उपन्यासका परिभाषाहरू अध्ययन मनन गर्दा उपन्यास साँचिकै एउटा जीवनको यथार्थ पक्षलाई तारतम्य मिलाएर प्रस्तुत गर्ने रचना हो । यसले समाजको सामाजिक

आर्थिक, साँस्कृतिक, राजनीतिक आदि पक्षलाई उद्घाटन गर्दै विधि मुताबिक विभिन्न शिल्प, विचार र परिवेशलाई समेटेको हुन्छ । जीवनको जटिलता, समाजको उपभोगिता आदिको स्वभाविक परिवर्तन संगसंगै उपन्यासको पनि समय सापेक्ष आफ्नो आवरण, आद्यान, परिभाषाजस्ता रूपहरू या नवीनता थप्दै गएको हुन्छ ।

#### ४.४ उपन्यासका तत्वहरू

उपन्यासका तत्वहरू भन्नाले उपन्यास निर्माण गर्नमा आवश्यक पर्ने उपकरणहरू बुझिन्छ । उपन्यास निर्माणका उपकरणहरू प्रयोग भएन भने विद्यागत रूप, उद्देश्य तथा प्रभाव दिन सक्दैन । उपन्यास निर्माणको आधुनिक मान्यता अनुरूप निम्नानुसार तत्वहरूको संक्षिप्त चर्चा यहाँ गरिएको छ ।

#### ४.५ कथानक

कथानक भन्नाले उपन्यासमा घटनाहरूको श्रृङ्खलित रखाइ भन्ने बुझिन्छ । कथानकले उपन्यासको ढाँचा निर्माण गर्न प्राथमिक तत्वको काम गर्दछ । घटनालाई परस्परमा उनेर सम्बन्ध जोड्ने र सुसंगठितलो प्रदान गर्ने काम कथानकले गर्दछ । कथानकमा चरित्र, विचार बुद्धि, कल्पनाजस्ता विशेषता रहेको हुन्छन् । कथानकले उपन्यासलाई प्रारम्भिक तहबाट क्रमशः अन्तिम चरण तिर लग्ने गर्दछ ।

कथानक निर्माणको लागि सामाजिक, ऐतिहासिक अनुभव, मिथक, स्वैरकल्पना, आदि स्रोतहरू लिन सकिन्छ । कथानकमा विभिन्न अङ्ग, उपअङ्गहरू समायोजनहरू भई भरिपूर्ण अवस्थाहरूमा रहेको कथानकमा आरम्भ, सङ्घर्ष विकास, उत्कर्ष, उत्कर्षह्रास र उपसंहार गरी पाँच चरण हुन सक्दछन् । त्यसैगरी कथानकलाई रैखिक र वृताकारीय ढाँचामा निर्माण गर्न सकिन्छ भने कथानकलाई आदि, मध्य र अन्त्यलाई जोड्न सरल रेखाढाँचा अगालिएको छ भने त्यसलाई रैखिक ढाँचा भनिन्छ भने कथानकलाई पूर्वादिति शैलीमा घुमारएर क्रमबद्धतामा विचलन ल्याइन्छ भने त्यसलाई वृताकारीय ढाँचा भनिन्छ । कथानक मुख्य र सहायक सुसंगठित र सुव्यवस्थित, सरल र संयुक्त सुखान्त र दुःखान्त, व्यङ्ग्यात्मक र रागात्मक गरी धेरै प्रकारका हुन्छन् ।

## ४.६ चरित्र वा पात्र विधान

उपन्यासको विभिन्न उपकरणहरूमध्ये चरित्र पनि महत्वपूर्ण मानिन्छ । चरित्र उपन्यासभित्र मानवीय वा मानववेतर पनि बन्न सक्छ । चरित्रलाई कतै पात्र क्रियाकलाप र कार्यव्यापार आदिको नामबाट पनि चिनाउने प्रयास गरिन्छ । मानव जीवनको व्यापक भाव उत्तार्ने तत्व नै चरित्र हो । सामाजिक संरचनाको भित्र पनि चरित्रले नै उत्तार्ने गर्दछ । इतिहास र समाज प्राप्त र देशान्तर प्रवृत्ति र पुस्ता जाति र सभ्यता परिस्थिति अनुसार चरित्रकै माध्यमबाट प्रकट हुने गर्दछन् । व्यक्तिका अन्तर र बाह्य दुवै संरचना चरित्रकै रूपमा प्रकट हुदा सामाजिक तत्वमा रूपान्तरित हुन्छ र व्यक्ति अन्तरपक्षमा संकुचित हुदा उसको चरित्र मनोविज्ञानमा रूपान्तरित हुन्छ । आ-आफ्नो प्राकृतिक र भौगोलिक प्रभावबाट निर्मित हुन्छन् तिनको क्रियाकलाप अभिव्यक्ति नै चरित्र भएर देखा पर्दछ । यी विविधताका कारणले मान्छे, मान्छेमा व्यक्तिकताको निर्माण हुन्छ र तिनै विभिन्न व्यक्तिकताले मान्छेलाई मौलिकता प्रदान गर्दछ ।

यस प्रकार चरित्र भन्ने कुरा उपन्यासमा कुनै पनि परिवेश वातावरण, संस्कृति र परम्पराबाट टिपिएको मानवीय वा मानववेतर साधन नै सिङ्गो समाजको वर्गको, परिवेशको विशेषता बोकेका प्रतिनिधित्व गरेको हुन्छ । उपन्यासमा उपस्थित भएको चरित्रकै माध्यमबाट समाजमा प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपमा राम्रा नराम्रा असरहरू पर्न गएका हुन्छन् र तिनै चरित्र र चरित्रबाट मिश्रित विचारहरूको सहयोगमा उपन्यासकारहरू उपन्यासको निर्माण गर्दछन् । उपन्यासका पात्रहरूलाई लिङ्ग प्रकृति स्वभाव जीवनचेतना आदिका आधारमा वर्गीकरण गर्ने सकिन्छ । गतिशील गतिहीन यथार्थ आदर्श अन्तर्मूखी बहुमूखी आदि चरित्रका विभिन्न प्रकाहरू छन् ।

## ४.७ संवाद वा कथोपकथन

पात्र वा चरित्रहरूबीच परस्पर हुने कराकानीको आदानप्रदान नै संवाद भनिन्छ । पात्रका आन्तरिक वा बाह्य जगतका जटिलता कुण्ठा वितृष्णा आकर्षण र उत्साहका प्रसङ्गहरू उपन्यासका पात्रहरूको संवादबाट व्यक्त हुदै जान्छन् । पात्रअनुकूलका संवाद र आत्मसंलाप मान र सङ्गत अन्तर्मूखी प्रवृत्तिका मूल्यहरू पनि कथोपकथन को माध्यमबाट व्यक्त हुन्छन् ।

कथोपकथनको प्रमुख कार्य औपन्यासिक चरित्रको चित्रण गर्नु घटनाहरूलाई नाटकीकरण गरेर अगाडि लैजानु हुन्छ । कथोपकथन एक नाटकीय तत्व हो । नाटकमा अभिनयद्वारा बताउने कुरा उपन्यासमा संवादद्वारा चित्रित गरिन्छ । भन्ने कथन सर्वथा सत्य हो । संवादकै माध्यमबाट पाठकलाई कौतुहुलता रोचकताको भाव उत्पन्न गराउँछ 'अत' संवाद उपन्यासमा नभई नहुने एक प्रमुख उपकरणको रूपमा मानिन्छ ।

#### ४.८ अन्तर्द्वन्द्व

उपन्यासमा कथावस्तुसंग जोडिएर पात्रहरूबीच वैचारिक उतारचढावलाई द्वन्द्व वा संघर्ष भनिन्छ । द्वन्द्वलाई पनि विभिन्न तहमा विभक्त गर्ने सकिन्छ । मान्छेका बाह्य जीवनमा आईपर्ने विसङ्गतिका कारण देखा पर्ने द्वन्द्व मान्छे, मान्छेसँगका विषमताका कारणले दुवैमा वैमनस्य जन्माउने द्वन्द्व र मान्छेको आफैभित्र देखा पर्ने दवावमूलक द्वन्द्व र पात्रहरूमा विभिन्न कारणले हुने गर्दछ ।

#### ४.९ परिवेश

कुनै काम हुनकालागि उपयुक्त मानिएको स्थान उपन्यासको कार्यपीठिका हो । यही कार्यपीठिका के बोल्नुपर्ला-नपर्ला त्यस विषयमा पात्रहरू सचेत रहनु पर्ने हुन्छ । साथै साहित्य समाजको दर्पणको जस्तो काम गर्ने हुनाले उपन्यासमा परिवेशमा समेटिएन भने कुरा कुन समयको, कस्तो स्थिति रहेको छ भन्ने विषय जानकारी प्राप्त हुन सक्दैन ।

#### ४.१० उद्देश्य

स्रष्टाले कुनै न कुनै विचार राखी साहित्यको सिर्जना गर्ने गर्दछ । यसै विचारमा नै साहित्यको सिर्जना हुने स्थिति पनि आएको हुन्छ । यसले लेखकको जीवन दर्शनको सार पनि वहन गरेको हुन्छ । उपन्यासमा लेखकको जीवनप्रति दृष्टि प्रत्यक्ष र परोक्ष गरी दुई प्रकारबाट व्यक्त भएको हुन्छ । प्रत्यक्ष विधिमा लेखकले औपन्यासिक कथा, घटना, पात्र र कथ्यप्रति विभिन्न टीकाटिप्पणी र विश्लेषण गरेको हुन्छ भने परोक्ष विधिमा प्रयत्न उपन्यासकारले कुनै पात्र घटना आदिको वारेमा वर्णन गरेको हुँदैन । उपन्यासमा खासगरी सामाजिक समस्या र

व्यक्तिका जीवनमा विभिन्न पक्षको विस्तृत अध्ययन हुनाले त्यसमा चित्रित जीवन र समस्याहरू यथातथ्य वर्णन मात्र नभएर तिनीहरूले प्रकट गरि रहेका हुन्छन् । स्रष्टा आफूले भोगेका, भेलेका, बुझेका कुरावाट प्रभावित भई पाठक वा सवैको हितमा दिने मार्गदर्शन नै विचार उद्देश्यको रूपमा जाहेर गरेको हुन्छ ।

#### ४.११ कौतुहलता

पाठकमा जिज्ञासु भावना जगाइराख्नु मूल र गौण प्रसङ्गहरूलाई मूल कथासंग जोडेर पढ्ने अभिरूचि पाठकमा जगाई राख्नु मद्दत गर्ने तत्वको नाम नै कौतुहलता हो । 'हत्तेरी' यस्तो पो, अनि के थियो त ? आमै नि, अनि के भयो होला ! भन्ने कुराको तरङ्गमा जगाइराख्नु सक्ने तत्वको निरन्तर सन्निवेशले नै उपन्यासलाई जीवन्त बनाउँछ ।

उपन्यासको आकृति ठुलो हुन्छ । त्यसमा मूल घटनाको साथ-साथै सहायक घटनाहरू पनि समावेश रहेका हुन्छन् । पाठकलाई यस पछि के भए होला ? भन्ने किसिमको मनमा प्रश्न उठ्नु मानवीय प्रवृत्ति नै हो । प्रश्न गर्नु, जान्न खोज्नु, चित्त नबुझेको कुरामा किन संस्कृति अर्थात कुनै कुरा किन कसरी कहाँ भन्ने किसिमको जिज्ञासाले सम्बन्धित विषयमा मात्र पाठकले स्पष्ट विषयवस्तु वारे बुझ्ने सक्छ । तसर्थ उपन्यासमा कौतुहलता हुनु आवश्यक मानिन्छ ।

#### ४.१२ दृष्टिविन्दु

उपन्यासमा लेखकले कुन स्थानमा रहेका कसको कथा भनिरहेको छ भन्ने कुरा दृष्टिविन्दुले जनाउँछ । दृष्टिविन्दु वाह्य वा द्वितीय पुरुष आन्तरिक वा प्रथम पुरुष गरी दुई प्रकारका हुन्छन् । वाह्य दृष्टिविन्दुमा कथायिता नै सम्पूर्ण कुराको ज्ञाता हुन्छ, भन्ने आन्तरिक दृष्टिविन्दुमा कथायिताले घटना र पात्रको वर्णन गर्दा आफूलाई पनि उपन्यासभिन्न संलग्न गर्छ । दृष्टिविन्दु पनि एक महत्वपूर्ण औपन्यासिक तत्व मानिन्छ ।

#### ४.१३ भाषाशैली

कुनै पनि व्यक्तिको मनमा उब्जेको भावहरू अभिव्यक्ति गर्ने माध्यम भाषा हो । भाषाले नै साहित्यिक विधाको मूर्त रूप प्रदान गरेको हुन्छ । उपन्यासले गद्य भाषाको प्रयोग गरेर

समाजका सबै वर्गका विचारहरूलाई समेटेको हुन्छ । अन्य विद्याभन्दा जीवनको विस्तृत आयामलाई समेट्ने हुँदा यसमा भाषाको सम्पूर्ण शक्तिको प्रयोग पनि गरिन्छ । उपन्यासमा विशिष्ट किसिमको भाषाको प्रयोग पनि हुन सक्दछ । साथै यसमा भाषिकाहरूको पनि प्रयोग हुन सक्दछ । भाषाको माध्यमबाट विभिन्न भाव वा विचार अभिव्यक्ति गर्ने भिन्न ढङ्ग र विधि नै शैली हो । उपन्यासमा विभिन्न अलङ्कारहरूको प्रयोग पनि पात्रहरूको संवादबाट भएको हुन्छन् । उपन्यासमा व्यास शैली र समासशैली गरी दुई प्रकारका शैलीहरू प्रयोग हुन्छन् । वाक्य गठनका दृष्टिले शैली सरल र गुम्फित गरी दुई प्रकारका हुन्छन् । यी दुवै शैलीको प्रयोग उपन्यासमा गरिएको हुन्छ । भाषाभाषाको अभिव्यक्ति गर्ने माध्यम भएको हुनाले उपन्यासको निर्माणमा नभइनुहुने तत्वको रूपमा मानिन्छ ।

#### ४.१४ प्रतीक र बिम्बविधान

कनै मूर्त वस्तुको माध्यमबाट अमूर्त भाषाको उल्लेख गर्ने वस्तु वा घटना नै प्रतीक हो । पनि उपन्यास पनि आफैमा एक भाषिक प्रतीक हो । जसमा विभिन्न घटनावस्तु प्रतीकका रूपमा व्यक्त भएका हुन्छन् ।

बिम्ब भनेको कुनै वस्तुको मस्तिष्कमा पर्ने छाँया हो । उपन्यासमा यस्ता छाँया बसाउने माध्यम भाषा हुन्छन् । शब्दका माध्यमबाट पाठकका मस्तिष्कमा कुनै स्थिति, स्थान, घटना र पात्रको यथार्थ सादृश्य छाँया पारिदिने पद्धतिलाई बिम्बविधान भनिन्छ । बिम्बले भाषा र कथ्यलाई एककार पार्छ । यसप्रकार प्रतीक र बिम्बविधान उपन्यासका लागि आवश्यक हुन्छ । यसरी माथि उल्लेखित उपन्यासका विभिन्न आवश्यक उपकरणका आधारमा औपन्यासिक कृतिको रचना गर्न सकिन्छ ।

#### ४.१५ निष्कर्ष

उपन्यास शब्द संस्कृतको तत्सम शब्द भएपनि उपन्यास पाश्चात्य साहित्यको देन हो । आधुनिक आख्यान परम्परा युरोपबाट विकास भएको भएपनि आधुनिक उपन्यास एसियाको जापानमा जन्मियो, बेलायतमा हुर्कियो र त्यहाँबाट संसार भरि प्रचारित भयो । उपन्यासलाई

विभिन्न विद्वानहरूले परिभाषित गरेका छन् । ती सबै परिभाषाहरूलाई केलाएर अध्ययन गर्दा उपन्यासलाई निम्नानुसार पहिचान गर्न सकिन्छ । “जीवन र जगतमा शाश्वत मूल्यहरूलाई रागत्मक अनुभूतिले सजाएर सृजना गरिएको दीर्घ आख्यानात्मक संरचना गद्ययात्मक कृति नै उपन्यास हो । उपन्यास :- रचनाको आधारभूत तत्वका बारेमा पनि सबै विद्वानहरू एक मत छैनन् । यहाँ विभिन्न विद्वानहरूको विचारलाई मनन गर्दै :- (क) विषयवस्तु (ख) चरित्र - चित्रण (ग) संवाद वा कथोपकथन (घ) द्वन्द्व (ङ) परिवेश (च) उद्देश्य (छ) कौतुहल (ज) दृष्टिविन्दु (झ) भाषाशैली (ञ) प्रतीक र विम्ब विधान ।

माथि उल्लेखित उपन्यासका विभिन्न आवश्यक तत्वहरूका आधारमा औपन्यासिक कृतिको रचना गर्न सकिन्छ ।

## अध्याय-पाँच

### “माइतघर उपन्यासको औपन्यासिक मानक तत्वका आधारमा विश्लेषण”

#### ५.१ उपन्यासकार लैनसिंह वाङ्देल्को संक्षिप्त परिचय

लैनसिंह वाङ्देल्को जन्म आइतवार पौष कृष्णपक्षको दशमीका दिन वि.सं. १९७९ मा दार्जिलिङ भारतमा भएको थियो । पुरख्यौली घर खोटाङ जिल्लाका रावाखोला भए तापनि उनका बाजे त्यँहावाट बसाई सरी दार्जिलिङ गएका थिए । लैनसिंह वाङ्देल् पिता रङ्गलाल राई र आमा विमाला राई राईको कोखबाट जन्मेका हुन् । लैनसिंह वाङ्देल् जन्मेको अठार महिनामा उनकी आमाको निधन भएको थियो । अनि वज्जै र कान्छी आमाको हेरचाहवाट उनी सुखद् वाल्यकाल पुरा गरेका थिए । उनले कलकत्ताबाट चित्रकलामा स्नातक, पेरिसमा पाँच वर्षसम्म युरोपेली कला र साहित्यको अध्ययन गरेका थिए । वाङ्देल्ले गरेका सेवा र संलग्नतामा लन्डनमा आस्ट्राल आर्ट ग्रुपका निर्देशक (२०१७) उपकुलपति (२०३०), कुलपति (२०३५) हुन । साथै डेनिस विश्व विद्यालय र हार्वर्ड विश्व विद्यालय, अमेरिकामा कुल बाइट प्रोफ्रेसर (२०२५) नेपाल आर्ट काउन्सिलका संस्थापक र सचिव, ‘प्रभाव’, ‘हिमाल’, आदि पत्रिकाका सञ्चालक, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानका आजीवन सदस्य रहेका छन् ।

लैनसिंह वाङ्देल् चित्रकारिता र उपन्यासकारिताको क्षेत्रमा बहुचर्चित व्यक्तित्व थिए । साहित्य तर्फको अन्यन्तै ठूलो योगदान उनको उपन्यासकारिता थियो । उनले ‘मुल्कबाहिर’ (२००४), ‘माइतघर’ (२००५) ‘लङ्गडाको साथी’ (२००५) रेन्ब्रान्ट (२०२३) गरी जम्मा चारवटा उपन्यास रचेका छन् ।

लैनसिंह वाङ्देल्ले प्राप्त गरेका पुरस्कार र सम्मानमा राष्ट्रिय वीरेन्द्र स्वर्णकला पदक (२०११) डुलीचन्द्र गोल्डमेडल (२०२३), शुभराज्यभिषेक पदक (२०३१) गोरखा दक्षिणबाहु दोस्रो (२०३४) लुकरण दास गङ्गादेवी पुरस्कार (२०५२) सिक्किम साहित्य परिषद्वाट अभिनन्दन (२०५३), भुपाल मानसिंह कार्की पुरस्कार (२०५४) रहेका छन् । लैनसिंह वाङ्देल् वि.सं. २०५९ सालको असोज महिनाको २९ गते मङ्गलवार आश्विन शुक्लपक्ष विजयादशमीका दिन विहान ५:३० बजे स्वर्गीय भए ।

## ५.२ 'माइतघर' उपन्यासको विश्लेषण

'माइतघर' (२००५) लैनसिंह वाड्देलको सामाजिक उपन्यास हो । प्रगतिशील दृष्टिकोणले लेखिएको वाड्देलको यो दोस्रो उपन्यास हो । आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा सामाजिक यथार्थवादी तथा अतियथार्थवादी प्रकृतिलाई भित्र्याउने सफल उपन्यासकारका रूपमा लैनसिंह वाड्देललाई लिइन्छ । वाड्देलको उपन्यास यात्रा २००४-२०२३ उपलब्ध पूर्ण रहेको छ । यथार्थ र अतियथार्थको प्रवेश गराउने स्रष्टा व्यक्तित्व वाड्देल यस क्षेत्रमा चिरस्मरणीय रहेका छन् । मानवतावादी दृष्टिकोणले भरिपूर्ण उपन्यास हो माइतघर । समाजमा भएका वास्तविक तथ्य र सत्यलाई जस्ताको जस्तै राख्ने सन्दर्भमा वाड्देल सफल देखिन्छन् । वाड्देलले मुलुक बाहिर, माइतघर र "लंगडाको साथी" उपन्यासमा करूणाको महानदी वगाएका छन् । मुलुक बाहिरका प्रत्येक चार खण्ड त्रासदीय परिणतिमा पुऱ्याएको र 'माइतघर' तथा 'लङ्गडाको साथी' पनि वियोगान्तमा टुङ्ग्याइएको छ ।

### ५.२.१ संरचना

'माइतघर' उपन्यासका संरचना औपन्यासिक कथावस्तुको दृष्टिले राम्ररी मिलेको छ । १७ परिच्छेद र ८५ पृष्ठ सङ्ख्यामा संरचित रहेको छ । 'माइतघर' उपन्यास परिच्छेद एक देखि तीन परिच्छेदमा कथावस्तुको बीचको आरम्भ गराइएको छ । चौथो परिच्छेद देखि आठौँसम्म फल प्राप्तिको निम्ति प्रारम्भिक संडघर्ष गराइएको छ । उपन्यासको नौ र दश परिच्छेद विकासको रूपमा अगाडि बढेको छ । यी दुवै परिच्छेदमा संवादको प्रयोग बढी गराई नाटकियता प्रदान गरिएको छ । एघारौँ परिच्छेदले औपन्यासिक कथावस्तुलाई चरम विन्दुमा पुऱ्याएको छ । उपन्यासको बाह्र देखि सोह्र परिच्छेद सम्मलाई प्रतिचरमोत्कर्षको रूपमा लिन सकिन्छ । अन्तिम सत्रौँ परिच्छेदमा विवरणात्मक र संवादमय दुवै शैलीको प्रयोग गरी उपन्यासको अन्त्य त्रासदीय बनाइएको छ । माइतघर उपन्यासको संरचना सुसङ्गठित रहेको छ ।

### ५.२.२ कथानक/कथावस्तु

दार्जिलिङ्को राजवाढीगाउँमा सुवेदार बलवीर खड्का, उसकी श्रीमती सुवेदानी र छोरा हरि सहतिको एउटा सानो परिवार बसेको हुन्छ । विहेको धेरै वर्षपछि सम्म पनि सन्तान नहुँदा

भगवानको पूजा आज्ञा गरेको कारण जन्मिएकाले छोराको नाम पनि हरि राखिएको हुन्छ । चक चके छोरा हरि र छिमेकी रत्नाको छोरी सानी सँगै खेल्ने गरेको हुन्छन् । सुवेदानी रत्नाकी छोरी सानीलाई निकै प्यारो गर्छिन । तर एक दिन विहान रत्ना उनका घरमा सानीलाई लिएर इलाम जानका लागि विदा माग्न आएको बताउँछिन । त्यति खेर सानीले बूढी (सुदानी) सँगै बस्ने इच्छा गरे पनि छुट्टिनु परेको हुन्छ ।

त्यसको तेह्रवर्ष पछि साउन महिनाको एक दिन रत्ना र सानी इलामबाट पुनःत्यही सुवेदानीकै घरमा आश्रय खोज्दै आईपुग्छन् । त्यस बेला सम्म सानी तरूनी भई सकेकी र रत्नाको उमेर चाही ढलीसकेको हुन्छ । सुवेदानी र रत्ना दुवै विधुवा समेत भई सकेका हुन्छन् । धेरै वर्ष पछि भेटघाट भएकाले त्यस दिन दुवै जनाका बीच भान्सामा लामो कुराकानी चलिरहन्छ, त्यसै बेला हरिका आँखा चौवन्दी चोलो र छिट्को फरिया लगाएकी तरूनी सानीमाथि पुग्छ । सानीले पनि पछाडि बाट चियाएर हरिलाई हेरिरहेकी हुन्छे । त्यस पछि एक दिन बेलुकी सानीको हातबाट बेलुका प्याला खसेर फुटेर टुक्राटुक्रा भएकोमा रत्नाले गाली गरे पछि सानी रोइरहेको अवस्थामा हरिले सानीका पक्षमा बोलेको हुन्छ । विस्तारै विस्तारै हरिका घरको सारा काम धन्दा सानी माथि पाउँ जान्छ । एक दिन हरिलाई बिसन्चो भई खाना खान नमान्दा सानीले सुत्ने बेलामा उमालेको पानी चिस्याएर हरिका सामुन्ने राख्दै हरिको कोठालाई व्यवस्थित तुल्याउँछे । त्यस बेला सुति रहेको हरिको अनुहारलाई ऊ अतृप्त आँखाले हेरि रहन्छे । उसका मनमा कताकता शङ्का र डर लागे पनि ऊ एक चोटि हरिको निधार छाम्छे । उसको अन्तर मनमा कताकता कृतकुती लागे जस्तो मात्र भइ रहन्छ । भोलि पल्ट देखि हरिले सानीलाई पढाउन सुरु गर्छ र तीन महिना नपुग्दै लोभी कुकुरको पाठ सम्म पढाउँछ । त्यस पछि दशैं सकिएर तिहार पनि आउँछ । सानीले सुवेदानीसँग लक्ष्मी पूजाको साँभ बजारको भिल्लिमिलि हेर्ने अनुमति माग्छे । दार्जिलिङको व्यस्त सहरमा दीपावलीको राति हरि र सानी रमिता हेर्न निस्कन्छन् । छाम्न पुग्दछे । त्यतिखेर सानीका मनमा अज्ञात आनन्द र डरको अनुभूति भएको हुन्छ । त्यस दिन उसलाई आधा रात सम्म निन्द्रा हरिले मानिसहरूको भीडमा सानीलाई हात समाती डोऱ्याउँदै आधारगत सम्म रमिता देखाउँछ । तिहार सकिएको केही दिन पछि सानीलाई ज्वरो आउँछ । हरिले डाक्टर बोलाएर देखाउनु देखि लिएर सबै किसिमबाट सहयोग गर्दछ । सानी निको हुन्छ, तर उसका मनमा हरिसँगका बाल्यकालीन घटना देखि पछिल्लो तातो हातको स्पर्श घटनाहरू याद आइरहन्छन् ।

त्यसपछि एक दिन रात्रिपख सुबेदानी र रत्नाले सानीको विहेका सम्बन्धमा कुरा उठाएका हुन्छन् । अनि केही दिन पछि सुबेदानीले हरिसँग पनि त्यही कुरा चलाएकी हुन्छिन् । सानीको विहे सम्बन्धी कुराले हरिलाई पहिलो चोटी उसको हृदय पोखरीको गम्भीरतामा कसैले आएर एकाएक भड्ग गरे जस्तो अनुभूति हुन्छ । त्यस पछि सुबेदानीले धेरै पटक हरिसँग सानीको विहेका बारेमा कुरा चलाएकी हुन्छिन् । आखिरमा एक दिन हरिले सानीलाई बोलाएर उसको विहे गर्ने कुरा सम्बन्धी विचार गर्ने र बुझ्ने प्रयास गर्छ । सानी अर्काको नचिनेको घरमा नजाने भन्दै विहे गर्ने कुरा अस्वीकार गर्छ । तर, केही दिन पछि सानीको विहे गर्ने कुरा निश्चित भएरै छाड्छ । पिन्सिड खाने, सासु, एकजना देवर र चार चोटी नन्द भएको घरमा डिपू अफिसमा काम गर्ने केटासँग उसको विहे गरिन्छ । हरिले सासू ससूराका घरमा एउटी बुहारीले निर्वाह गर्नु पर्ने काम कर्तव्य बारे सम्भाउदै कठोर हृदयका साथ विदाइ दिन्छ र सानी आफ्नो घर जान्छे ।

विहे लगत्तै माघ, फागुन, चैत सम्ममा सानी दुई चोटि माइत आए पनि त्यस पछि उ दशैँमा मात्र सात वर्षकी नन्दलाई लिएर आँउछे । दुब्लो पातलो शरीर लिएर ज्वाँइबिनै एकलै आएकोमा सानीको घर परिवारमा उसलाई कुनै अप्ठ्यारो छ भन्ने कुरा सबैले आशङ्का गर्छन् । त, सानीले कुनै कुरा खुलेर सुनाएकी हुन् । ऊ नन्दलाई दशैँ पछि एकलै घर पठाएर आफू चाहि तिहार पछि मात्र घर फर्कने समाचार पठाउँछे । तिहारका दिन उसलाई गत वर्षका सबै घटनाहरू याद आँउछन् । अनि ऊ सामाजिक परम्पराप्रति एकछिन आक्रोशित हुन पुग्दछे । घर फर्कने अधिल्ला दिन उसले आफ्नो घरका सबै कुरा सुनाउँछे र भोलिपल्ट घर फर्किन्छे ।

त्यसको दुई वर्ष पछि भदौमा मात्र ऊ आमा विरामी भएकोले माइत आँउछे । उसको शरीर पहिलेको भन्दा भनै सुकिसकेको हुन्छ । सुबेदानीलाई उसको अवस्था देखेर नारीको जन्म प्रतिग्लानि हुन्छ । रत्नालाई पनि छोरीको त्यो अवस्थाप्रति दया लाग्दछ । सानीले साँभ पख खान बस्दा लोग्नेले सौता हालेको देखि लिएर सबै कुराहरू सुनाउँछे । हरिलाई सानी सँगका घटनाले आधारगत सम्म पनि निद्रा लाग्दैन । त्यसको पर्सिपल्ट विहानै रत्नाको निधन हुन्छ । गाँउलेहरू भेला भएर शोक मनाउँछन् । सानी दशैँ सम्म त्यही बस्ने निधो गर्छे । एकदिन हरि अफिसबाट भिक्टोरिया फाल्स हुँदै घर फर्किदा उसलाई सानीसँग अनेकौँ स्मरण गराउँदै पुनः घर पठाउने कुरा दोहोर्‍याउछे । हरि केही नबोली सुनिरहन्छन् । त्यस पछि दशैँ सकिएर फेरी तिहारको लक्ष्मी पूजा आउँछ । सानीले विहानै देखि माइती घर सजाएकी हुन्छे

साँभूपख हरिलेभयालबाट बाहिर हेरिरहेको देखेर सानीलाई पनि आफ्नो जीवनको सम्पूर्ण थकाइ उसमै बिसाउने इच्छा लागेको हुन्छ तर ऊ सक्दैन । त्यसको सात दिन पछि फेरी पनि सुबेदानीले हरिलाई सानीका बारेमा घर पठाउनु पर्ने कुरा दोहोर्‍याउछे । हरि पनि मुखमा जे आयो मन परि भन्ने दुनियाका कारण सानीलाई घर पठाउनु पर्ने कुरामा सहमत भए जस्तो देखिन्छ । तर, उसलाई भोलिपल्टै पठाउने कुराले चाँहि च्वाँस्स मुटु छुन पुग्दछ । ऊ सानीलाई पठाउनै पर्छ भन्ने कुरा बताउन सक्दैन । उनका मनमा सानीप्रतिको दयामात्र जाग्रित भइ रहेकै हुन्छ तर सानीले सुबेदानीको सबैकुरा सुनिसकेकी हुन्छे । त्यसबेला सानीलाई भुँइफाटेर चिरा हुन सक्ने भए आफू पनि त्यही बिलिन हुने इच्छा जाग्दछ । त्यसको महिनादिन बितिसक्दा पनि सानीका घर बाट कोही लिन नआएकोले फेरी सुबेदानीले हरिसँग सानीलाई घर पठाउनु पर्ने कुरा उठाउछे । हरिले मुटु दहो पारेर पठाउनुपर्छ भनेको सुनेपछि सुबेदानीलाई केही दया पलाएको हुन्छ । राति सुत्ने बेलामा हरिले सानीलाई अनेक किसिमबाट सम्झाउदा सानी रोइरहन्छे र आफू सुत्ने कोठातिर लाग्छे । उनलाई मध्यरातिमा कता जाँउ, कता जाँउ हुदा हुदै ऊ भिक्टोरिया फल्सको अग्लो पुलमा पुग्छे तर, त्यँहा पुगेपछि उनलाई मर्न मन लाग्दैन र माइत फकिन्छे । विहान हुनासाथ ऊ अचानक सुबेदानीसँग आज त आफ्नो पोइको घर जान्छु भन्ने कुरा राख्दै हरिको पाँउ स्पर्श गरेर निस्कन्छे । अनि रूदै मजेत्राले आँसु पुछ्छे फेरी कहिल्यै नआउने गरी आपसमा माइतघरलाई विदा दिएर आफ्नो वाटो लाग्छे कथा यही टुङ्गिन्छ ।

### ५.२.३ चरित्र चित्रण

‘माइतघर’ लघुआकार र न्यून पात्र सङ्ख्या भएको उपन्यास हो । यस उपन्यासमा मञ्चीय रूपमा सुबेदार, बलवीर सुबेदानी छोरो हरि रत्न र रत्नाकी छोरी र सानी छन् भने नेपथ्य रूपमा सुबेदारको जेठि पट्टीको छोरो सानीको बुबा सानीको लोग्ने सानीका घर पट्टीको नातेदारहरू रहेका छन् । यहाँ सानीले प्रतिकूल पात्र देखिन्छन् भने अरू अनुकूल नै छन् । सानीको उपस्थिति प्रमुख रहेकाले ति यस उपन्यासमा मुख्य मात्र भूमिकामा छन् भने सुबेदार गौण भूमिकामा देखिन्छन् । पात्र साङ्केतिक मात्र छन् । ‘माइतघर’ उपन्यासका महत्वपूर्ण पात्रहरूको चरित्र चित्रण प्रस्तुत गरिएको छ ।

## क) सानी

सानी माइतघर उपन्यासकी मुख्य पात्र अर्थात नायिका हो । हरि पात्रसंग उसको बालखेलबाट सुरु भएको उपन्यास उसकै जीवनमा देखापरेका कारुणिक घटनाले विकसित हुदै ऊ हरिका घरबाट कहिलै नर्फकने गरि निस्के पछि उपन्यास समाप्त भएको छ । यसरी उपन्यासमा सानीकै उपस्थिति सर्व प्रमुख भूमिकामा रहेकाले उसलाई यस उपन्यासकी नायिका भन्न सकिन्छ । सानी नियमतिको सिकार बनेकी एक नारी हो । ऊ उपन्यासकी रत्ना नामक पात्रकी छोरी हो । बालसखा हरिको बाल्यप्रेम र सुबेदानीको न्यानो मायाबाट टाढिएर बाबु आमा बाँसाई सरेका कारण ऊ दार्जिलिङको राज बाडीबाट इलाम आउछे । तेह वर्षको इलाम बाँसाइमा बाबुको मृत्यु भए पछि ऊ आश्रयहीन भएर आमाका साथ पुनः आश्रय खोज्दै उही पहिलाको सुबेदारको घर राजवडी पुग्छे । उहिलेका बालसखाहरूको यो वस्यक उमेरमा भेट भएपछि अमूर्त प्रेम मौलाउन पुग्छ । भाग्यले ठगिएकी सानीको अर्कै सँग लहना जुछ । उसले हरिसँग बसेको आत्मीयतालाई पन्छाउन नसकी एक दिन यसो भन्छे :- “म यही बस्छु, यहीं मेरो माइतघर यहीं बसेर आमा र बढीलाई हेर्छु, तपाइको सेवा गर्छु, जन्मभएर म यहीं घरमा बस्छु.....” ।

सानी दुःखै दुःखकी पहाड जस्ती देखिन्छे । बाबुबाट त वियोग भई नै प्रेमीबाट पनि ऊ हठात् चुँडिन्छे, लोग्नेले पनि तिरस्कार गरि सौता हाल्छ, आमाको पनि मृत्यु हुन्छ, ऊ महामारीले गाउँनै सोत्तर भएर एकलो बाँचेका मान्छे जस्ती असाह्य बन्छे । आमा विरामी भए देखि हरिकै घरमा आश्रय लिँइदै आएको उसलाई सुबेदानीले अवगालको गुण भने पछि ऊ अव विहवल भई मरेकी आमालाई सम्झदै भन्छे - “आमा ! अहिले यो भुँइ फाटेर ठुलो चिरा हुनसक्ने भए त म पनि यही पृथ्वी भित्र फाटेर विलीन हुने थिए ।”

सानी दोसहीन छैन । उसमा कमजोरी पनि छ । उसले हरि प्रति मनमा संगालेका प्रेम प्रष्ट रूपमा प्रकट गर्न सकेकी छैन । त्यही अन्तर्मुखी प्रवृत्तिले उसको जीवनलाई छिन्न भिन्न तुल्याएको छ । सायद हरिसँग ढल्केका कारणले नै उसको पति र घरलाई पनि अपनाउन सकिन र उसले त्यहाँ कसैको पनि स्नेह पाइन । ऊ हीन भावनाले ग्रस्त पात्र हो । उसलाई आफू नारी भएर जन्मनु परेकोमा हीनता बोध छ । आधारहीन भएर मन बहलाई रहेका बेला ऊ भन्छे ‘हे धर्ति माता ! अब अर्को जन्ममा त म लोग्ने मान्छे भएर जन्मेर मलाई आइमाईको

जन्म लिएर फेरी आउनु नपरोस.....! यसरी सानी सरल एवम् निश्चत हृदय भएकी दुःख सागरमा डुल्दै उत्रदैँ डुल्दैँ उत्रदैँ गरेकी र अन्तरमूखी स्वभाव भएकी पात्र हो ।

(ख) हरि

यस उपन्यासको सक्रिय पुरूष पात्रको नाम हरि हो । ऊ दार्जिलिङ्को राजवाडी गाउँमा बस्ने सुवेदार बलवीर खड्काकी कान्छी श्रीमती सुवेदार पट्टिको एकलो छोरो हो । वाल्यकालमा विहे भएको धेरै वर्ष सम्म सन्तान नभए पछि पूजा पाठ एवम् ब्रत आदिको प्रभावका कारण हरि भगवान प्रसन्न भएर सन्तान जन्मएकोले उसको नाम हरि राखिएको हो । वाल्यकालमा धेरै चक चके स्वभावको देखिए पनि ऊ पछि गएर धीर एवम् गम्भीर बनेको छ ।

उसले हाइस्कूल सम्मको अध्ययन पछि बाबुको मृत्युका कारण पढ्न पाएको छैन । उ आफ्ना स्कुले साथीहरू कलकता गएर पढ्दै छन् भन्दै आफूले पढ्न नपाएकामा सुवेदानीसँग गुनासो समेत पोख्ने गर्दछ । आर्थिक अवस्था त्यति सुदृढ नुहँदा नहुँदै पनि उसका घरमा रत्ना र सानी बस्दै आएका हुन्छन् । उसले सानैमा घरायसी जिम्मेवारी बहन गर्नु परेको थियो । ऊ दैनिक रूपमा अफिस जाने आउने गर्दछ । र सानीलाई केही दिन पढ्न र लेख्न पनि सिकाउछ । उसलको शारीरिक वनोट आकर्षण युक्त देखिन्छ । गालामा कोठी, घुम्रेको लामो केस, गम्भीर अनुसार र मोहनी जस्ता आँखा उसको सौन्दर्यका रूपमा देखिन्छ । सानीलाई उसले आफ्नो जीवनसंगति पूर्ण बनाउने साथीका रूपमा हेर्ने गरेको छ । सानी र उसका बीचमा सामाजिक मान्यताले दाजु बहिनीको व्यवहारिक सम्बन्धलाई स्पष्ट पारे पनि उसले सानीबाटै जीवन छन्दोमय भएको अनुभूति गर्ने गरेको छ । ऊ पहिलो चोटी सानीको विहे सम्बन्धी चर्चाले भस्किएको पनि देखिन्छ । तर उसले सानीप्रति दोहोरो व्यवहार दर्शाउँदै आएको हुन्छ । आमाको आग्रह र सामाजिक मान्यताका आडमा उसले सानी प्रति माइतीको धर्म निर्वाह गरे पनि उसको आन्तरिक मनोभावले सानीसंगको बसाईलाई खोजिरहेको हुन्छ । त्यसैले एकान्तमा, मानसिक तरङ्गमा र आन्तरिक चाहानमा उसले सानीलाईपनि बहिनीका रूपमा नभएर जीवन साथीका रूपमा अपेक्षा गरिरहेको देखिन्छ । त्यसै सन्दर्भमा उपन्यास भित्रका यी भनाइहरूलाई हेर्न सकिन्छ । :- “सकिन्छ, आफूलाई रोक्तारोक्तै पनि यन्त्रचालक जस्ता भएर सानीको बाहु समातेर त्यसलाई आफ्नो छातीमा टाँस्यो अनी स्नेहले आर्द्र भएर सानीको कपाल बाहुस्पर्श

गरिरह्यो अनि दुबैका आखाँबाट आँसुका अजस्र धारा बगेर भरे अनि सानीका निधारमा गालमा म्वाई खाएर आफ्नो बलियो बहुले भन् कसेर रूद्र कण्ठमा भयो” सानु किन तिमी यसरी रून्छेयौ ? नरोऊ, तिमी यसरी रोयौ भने ता हामी दुबै भ्रममा पर्ने छौ । अनि दुबैले पापको सुमन्द्रमा डुब्नु पर्नेछ ।”

यस्तै हरिले बिहे भैसकेकी सानीलाई घरबाट फर्केर आएको अवस्थामा पनि आन्तरिक रूपले आश्रय दिनु पर्छ भन्ने सोच बनाइएको हुन तर सामाजिक एवम् साँस्कृति मान्यताका आधारमा ऊ सानीलाई बस्नु भन्न सक्दैन र जानु पर्छ नै भन्छ ।

यसरी हरिले सामाजिक मान्यताका आधारमा सानीप्रति नैतिक चरित्र देखाए पनि उसले एउटा अन्तर्मूखी मुकप्रेमीको भूमिकामा समेत निर्वाह गरेको देखिन्छ । जो उतरदायित्वको बोभले थिचिएको छ र जसले सानीप्रतिको प्रेमलाई कातरताका कारण प्रकट गर्न सकिएको छैन । ऊ स्थिर प्रकृतिको सत्वर्गीय भीरू स्वभावको असफल प्रेमी हो ।

#### (ग) रत्ना

रत्ना ‘माइतघर’ उपन्यासकी सहायक पात्र हुन् । उनी उपन्यासकी नायिका सानीकी आमा हुन । उपन्यसमा सहायक भूमिकामा उनको परिस्थिति रहेको छ । सुवेदारको परिवारसंग आत्मीयतिका साथ बसेकी रत्ना लोग्नेको बसाँइ हिड्ने निर्णय संगै इलाम पुग्छन् । लोग्ने वर्षौ थलिएर मृत्यु भए पछि विचलीमा परी उनी तेह्र वर्ष पछि सुवेदानी कहाँ आइपुग्छन् र उनी असहाय र निरीह छिन् उनी लोग्नेको असामयिक निधनले यात्रा अवधिमाै सर्वस्व लुटिएर विचलीमा परेको यात्रुभै भएकी छिन । उनमा सहनशीलता र मिलनसारिता रहेको पाइन्छ । उनी अर्काको घरमा धैर्यले जीवन गुजारी रहेकी छिन् भने एकै घरमा दुई परिवार वस्नु परे पनि उनको कसैसंग नराम्रो भएको छैन । उनी निरीह पात्र देखिन्छिन् । परिस्थितिले उनको जीवनमा ल्याएका बज्रपातलाई उनले सहेर टार्नु सिवाय अरू केही उपाय देखिदैन । सानीले भोगेका दुःखका केही अंश उनले पनि भोगेकी छिन् । सानीभै नियतिकै सिकार बनेकी रत्नाको सुवेदानीकै घरमा मृत्यु हुन्छ ।

### (घ) सुबेदानी

सुबेदानी माइतघर उपन्यासकी सहायक पात्र हुन् । प्रस्तुत उपन्यासमा यी पात्रको भूमिका पनि उल्लेख्य छ । सुबेदार बलबीरको श्रीमती यी सुबेदानी उपन्यासको नायक हरिकी आमा हुन् । यी पदले जसरी आमा छिन् यसैगरी यिनको व्यवहारमा नि मातृत्व भल्कन्छ । यिनमा मातृवात्सल्य प्रचुर छ । रत्नाकी छोरी भए पनि यिनी सानीलाई औधी माया गर्छिन् । त्यति मात्र कंहा हो र लोग्ने मरेर बिचल्लीमा परी छोरी सहित आएकी रत्नालाई हार्दिकताका साथ आश्रय दिन्छिन् । लोग्ने मरेर विधुवा जीवन बाँचि रहेकी उनी रत्नाकी छोरीको आफ्नै हातले विवाह गरि दिन्छिन् भने सानीकी आमा रत्नाले पनि उनकै आश्रयमा देह त्याग गर्छिन् ।

सुबेदानी सानीलाई बाल्यकाल देखि नै ज्यादै माया गर्छिन् । सानीले विवाह पश्चात अत्यन्त दुःख पाएको प्रसङ्गले उनलाई भन्नु भावद्रवित तुल्याउँछ । सानीप्रति सुबेदानीको यत्रो स्नेह भए पनि विहे भएकी छोरी माइतै बसिरहे लोकको अवगाल खप्नु पर्ने डरले उनी सानीलाई घर फर्काउन प्रयत्न गर्छिन तापनि सानीलाई बलपूर्वक घरवाट निकाल्ने उनको मनसाय छैन । बरू सानीले मान्दै नमाने आश्रय दिइरहने विचार उनी प्रकट गर्छिन । यसरी सुबेदानी अर्काको पीर मर्का बुझ्ने एवम् करुणा र दयाकी प्रतिमूर्ति पात्रका रूपमा उपस्थित देखिन्छन् ।

### (ङ) अन्य पात्रहरू

हरिका बाबु सुबेदार उपन्यासका सुरूका दुई परिच्छेदमा देखा परी दिवङ्गत भएको पाइन्छ । ती दुई परिच्छेदवाट उनलाई सेवा निवृत्त एक भलादमी बाबुका रूपमा लिन सकिन्छ । हरिको नोकर परिच्छेद चारमा मात्र देखा परेको छ । ऊ निम्न बर्गीय पात्र हो । उसको संवाद एक ठाउँमा मात्र रहेको छ । भाषिक प्रयोगमा मध्यम वर्गको पात्र हो । उपन्यासको अन्य ठाउँमा नोकरको उपस्थिति छैन । बाहुनी बूढीको उपस्थिति परिच्छेद दसमा मात्र छ । बाहुनीबूढी सानीको विहे हुने परिवारको बारेमा चासो देखाउने पात्र हुन् । यिनी परम्परावादी सचेत पात्र हुन् । परिच्छेद दस बाहेक अन्य कुनै ठाउँमा उपस्थिति देखिदैन । माइतघर उपन्यासमा सानीको विवाहको समयमा बाहेक कतै पनि सानीको पति उपस्थिति भएको देखिदैन । तापनि उपन्यासकी प्रमुख नारी पात्र सानीको जीवनसंग बढी सम्बन्धित भएको हुनाले उसको पतिको उल्लेख गर्न आवश्यक देखिन्छ । सानीसंग विवाह भइसके पछि फेरी

उसको पतिले दोस्रो विवाह गरेको देख्दा ऊ असत्यपात्रको रूपमा हाम्रो सामु देखिन आउँछ तर सानीको आन्तरिक मनोदशा हेर्दा उसले यो पतिलाई सुख शान्ति नदिएर अर्को विवाह गर्न बाध्य तुल्याएर हो कि भै लाग्दछ । यदि सानी नै उसको अर्को विवाहको उत्प्रेरक बनेको हो भने सानीको पतिलाई असत्पात्र हुन् । तापनि उनीहरू असत् हुनुमा समेत केही रूपमा सानीको आन्तरिक मनोदशाको कारण नै देखिन आउँछ । यदि सानीको मनस्थिति स्वच्छ भइ दिएको भए उसले घरमा सासू ससूरा र पति सबैलाई रिभाउन पनि सक्थी होली तर उसको आन्तरिक इच्छा विपरीत विवाह भएकोले घरमा कसैलाई पनि रिभाउन सकिएन र पतिले अर्को विवाह गर्नु पर्दा सानीका सासू, पति, सौता सबै नै असत्पात्रको रूपमा उपस्थित हुन आए ।

#### ५.२.४ पर्यावरण/परिवेश

यस उपन्यासमा देश, काल वातावरण आदिको सन्दर्भ स्पष्ट रूपमा देखा पर्दछ । स्थानका दृष्टिले हेर्दा उपन्यासको धेरै जस्तो घटना सन्दर्भ दार्जिलिङको राजवाडी गाउँसंग सम्बन्धित रहेको पाइन्छ । प्रमुख पुरुष पात्र हरिको घर राजवाडीमै रहेको पाइन्छ । नायिका सानी पनि तेह्र वर्ष पछि पुनः इलामबाट त्यही राजवाडीमै आमासंग आएर बसेकी, उसको विहे त्यहीबाट भएको र विहे पछि घटनाक्रमको अत्यन्त सम्म पनि ऊ त्यहीं रहेकी हुँदा यस उपन्यासमा प्रमुख केन्द्रस्थल राजवाडी रहेको स्पष्ट हुन्छ । यस वाहेक लक्ष्मी पूजाका राति सजिएको दार्जिलिङ सहरको दृश्य, घुमियो र भिक्टोरिया फल्स लगायतका स्थानिय सन्दर्भहरू पनि यहाँ प्रस्तुत भएका छन् । साथै सानीको परिवार बसाइँ सरेर गएको नेपालको इलामका बारेमा पनि यहाँ सङ्केत गरिएको पाइन्छ । सुवेदार बलवीरले कुइटा छाउनीमा छँदा कवाज खेल्ने गरेको, उसको नोकर बर्मा हिउँको तथा कुइटा छाउनी, बर्मा र कलकत्तालाई पनि समेटेको देखिन्छ काल अर्थात् समयका दृष्टिले हेर्दा यस उपन्यासमा प्रत्यक्ष घटनाक्रम सत्र वर्ष सम्मको रहेको पाइन्छ । बाल्यकालमा राजवाडीबाट इलाम गएको सानी तेह्र वर्षपछि त्यही आउँछे, माघमा उसको विहे हुन्छ, ऊ घरबाट दशैंमा माइत आएर तिहारमा फकिन्छे पुनः दुई वर्ष पछि रत्ना विरामी हुँदा ऊ माइत आउँछे र आमाको मृत्यु पछि तिहार सकिएर मात्र निस्कन्छे । यी घटनाक्रमका आधारमा सत्र वर्षको लामो समयावधिलाई उपन्यासको स्पष्ट सङ्केत गरेको देखिन्छ । अझ सुवेदार बलवीरकी अधिल्लो स्वास्नी परलोक भएको छ

छब्बीस वर्ष पछि हरि जन्मिएको कुरा बताएका आधारमा हेर्दा यसभित्र भन्डै साढेचार दशक लामो समयावधिको सङ्केत गरिएको स्पष्ट हुन्छ । त्यसैगरी उपन्यास भित्रको तत्कालीन बातावरणलाई हेर्दा यसमा प्रवासी नेपाली समाजमा अझै पनि आर्थिक अवस्था सृष्ट हुन नसकेको सैनिक जीवनको प्रभाव हटिनसकेको दशैं तिहार जस्ता चाडवाडहरू यथावत् रूपमा मनाउदै आएको पूजा पाठ र भाकलमा विश्वास रहने गरेको सौता हाल्ने प्रथा कायमै रहेको, दुना टपरी गास्ने र विहे गर्ने प्रथा विद्धमान् रहेको र प्रवासी नेपालीले सानोतिनो जागिर समेत खान थालेको तर अन्धविश्वासले भरिएको कुप्रथाप्रति विरोध गर्न नसकिरहेको इत्यादि सन्दर्भहरू देखा पर्दछन् । साथै दार्जिलिङको स्थानीय प्राकृतिक वातावरण र ऋतुचक्रको परिवर्तनलाई पनि उपन्यासभित्र स्पष्ट रूपमा उल्लेख गरिएको पाइन्छ । भाषामा फरक फरक रूपहरू रहेका हुन्छन् ।

### ५.२.५ दृष्टिविन्दु

‘माइतघर’ उपन्यास तृतीय पुरुष दृष्टिविन्दुमा संरचित छ । उपन्यासको समख्यान यहाँ म पात्रवाट नभई उपन्यासकार वाटै भएको छ । पात्रहरू उपन्यासकारबाटै डोच्याएका छन् । उपन्यासकार घटनाहरूको द्रष्टा भएर त्यसको वर्णन गरेका छन् । यसरी उपन्यासको समख्यान म पात्रवाट नभई उपन्यासकार वाटै भएकाले यस ‘माइतघर’ उपन्यासको दृष्टिविन्दु तृतीय पुरुष रहेको पाउन सकिन्छ ।

### ५.२.६ सारवस्तु

माइतघर उपन्यासको प्रवासी नेपाली समाजको चित्र उतारेको छ । यसमा दार्जिलिङको राजबाडी गाउँमा बस्ने सुवेदारको परिवार र रत्नाको परिवारसँग गाँसिएको घटना सन्दर्भहरू आएका छन् । दुवै परिवारका सदस्यहरू बीच घटेका घटनाहरूका आधारमा उपन्यासलाई विश्लेषण गरिएको छ ।

#### ५.२.६.१ असफल प्रेमलाई दर्साउछ

यस उपन्यासको एउटा महत्वपूर्ण उद्देश्य भनेको सानी र हरिका माध्यबाट असफल प्रेमलाई दर्साउन रहेको छ । राजबाडी गाउँबाट बसाइँ सरेर इलाम पुगे पनि तेह्र वर्षपछि पुन

त्यही फर्किएको सानी बालसखा हरिप्रति अनुरक्त रहेकी हुन्छे । उसलाई सबेदानीको एक्लो छोरा हरिले पनि आन्तरिक रूपमा प्रेम गरेको हुन्छ । यसरी दुवै पात्र एक अर्कामा अनुरक्त देखिए पनि दुवै मध्ये कसैमा पनि सामाजिक बन्धनलाई तोड्ने सामर्थ्य नदेखिएकाले अभ्र हरिमा त भन् हिम्मत समेत नभएका कारण दुवैका बीचको प्रेम असफलतामा पुगेको हुन्छ । यस किसिमको घटना सन्दर्भका आधारमा प्रस्तुत उपन्यासको असफल प्रेमलाई दर्साउने उदेश्य रहेको स्पष्ट देखिन्छ ।

### ५.२.६.२ करूणा पक्ष वा त्रासद पक्षलाई दर्साउनु

रत्ना र सुवेदानी दुबैले श्रीमानको अकालमा मृत्यु भएका कारण कष्टकर जीवन वाँच्नुपरेको अर्थात् 'नारीको जन्म हारेको कर्म अर्कैको सुसारे' भने भैँ बैधव्य जीवन गुजार्नु परेको कारण घटनालाई पनि यसमा दर्साइएको पाइन्छ । यसरी उपन्यास भित्र त्रासद पूर्ण अथवा कारूणिक अवस्था सिर्जना हुनुमा चारित्रिक कमजोरी, सामाजिक बन्धन, नैतिक भीरुता र नियति नै प्रमुख कारण रहेको तथ्य पनि अधि सारिएको देखिन्छ । यी बाहेक प्रस्तुत उपन्यासमा सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश प्राकृतिक रमणीयता र मानवीय समवेदना जस्ता विषयहरू माथि प्रकाश पार्ने काम गरिएको छ ।

### माइतघर उपन्यासको पात्रहरूको शैलीगत वैज्ञानिक अध्यय

| क्र.स. | आधार पात्र          | लिंग  |        | कार्य  |       |     | प्रकृति |          | स्वभाव |       | ऋसंनता |        | प्रतिबद्ध |     |
|--------|---------------------|-------|--------|--------|-------|-----|---------|----------|--------|-------|--------|--------|-----------|-----|
|        |                     | पुरुष | स्त्री | प्रमुख | सहायक | गौण | अनुकूल  | प्रतिकूल | गतिशील | स्थिर | नेपथ्य | मञ्चीय | बद्ध      | मुल |
| १      | सानी                | -     | +      | +      | -     | -   | +       | -        | +      | -     | -      | +      | +         | -   |
| २      | हरि                 | +     | -      | +      | -     | -   | +       | -        | -      | +     | -      | +      | -         | +   |
| ३      | सुवेदानी            | -     | +      | +      | -     | -   | +       | -        | -      | +     | -      | +      | +         | -   |
| ४      | सुवेदार             | +     | -      | -      | +     | -   | +       | -        | +      | -     | -      | +      | +         | -   |
| ५      | रत्ना               | -     | +      | +      | -     | -   | +       | -        | -      | +     | -      | +      | +         | -   |
| ६      | सानीको वुवा         | +     | -      | -      | -     | +   | +       | -        | -      | -     | -      | -      | +         | -   |
| ७      | हरिको नोकर          | +     | -      | -      | +     | -   | +       | -        | +      | -     | -      | +      | -         | -   |
| ८      | लामीछाने बहिनीहरू   | -     | +      | -      | -     | +   | +       | -        | -      | -     | -      | -      | -         | -   |
| ९      | डाक्टर              | +     | -      | -      | +     | -   | +       | -        | -      | +     | -      | +      | -         | -   |
| १०     | छिमेकी आइमाइहरू     | -     | +      | -      | +     | -   | +       | -        | -      | +     | -      | +      | +         | -   |
| ११     | गाउँका केटा केटीहरू | +     | +      | -      | -     | +   | +       | -        | -      | -     | +      | -      | -         | -   |
| १२     | सानीको नन्द         | -     | +      | -      | +     | -   | +       | -        | -      | +     | -      | +      | -         | +   |

|    |              |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|----|--------------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३ | जन्ती        | + | + | - | - | + | - | - | - | - | - | + | - | - |
| १४ | छिमेकीहरू    | + | + | - | - | + | - | - | - | + | - | - | - | + |
| १५ | घाँसी        | - | + | - | - | + | + | - | - | + | + | - | - | - |
| १६ | सानीका सासू  | - | + | - | - | + | - | + | - | + | - | - | + | - |
| १७ | सानीको पति   | + | - | - | - | + | - | + | + | - | - | - | + | - |
| १८ | सानीको सौता  | - | + | - | - | + | - | + | - | + | - | - | + | - |
| १९ | सानीको ससुरा | + | - | - | - | + | + | - | - | + | - | - | + | - |
| २० | बहुनी बूढी   | - | + | - | + | - | - | + | - | + | - | + | + | - |

## अध्याय-छैठौ

### सामाजिक, भाषिक, सैद्धान्तिक आधारमा माइतघर उपन्यासको निरूपण

#### ६.१ परिचय

वर्ग, लिङ्ग, उमेर र शैक्षिक स्तरका आधारमा व्यक्तिहरूको समन्वय समाजमा फरक-फरक किसिमको हुन्छ। विभिन्न वर्गहरूले गर्दा समाजमा भाषिक भेद निर्माण भएको हुन्छ। एउटा जीवन्त भाषामा क्षेत्रीय, सामाजिक, प्रयोजनपरक जस्ता विभिन्न किसिमका भेदहरू रहेका हुन्छन्। जसमा सामाजिक भेद वर्गीय समाजका कारणले निर्मित जटिल भेद हो, एउटै क्षेत्र र एउटै क्षेत्र र एउटै समाजभित्र आ-आफ्नै परम्परा र मान्यतमा आधारित धेरै समुदाय रहन्छन्। र तिनको बोलीमा पृथकीकरण रहन्छ यहाँ नै भाषिक विविधता हो, सामाजिक भाषिका समुदायहरूको जातजाति, लिङ्ग, उमेर, शिक्षा, पेसा आदिका जस्ता प्रमुख कारणले सिर्जित हुने गर्दछ।

भाषामा सामाजिक भेद विभिन्न किसिमका रहेका हुन्छन्। वर्गीय तथा प्रतिष्ठाको क्रमका आधारमा उच्च भेद र निम्न भेद, औपचारिकताका आधारमा औपचारिक भेद र अनौपचारिक भेद शिक्षाका आधारमा शिक्षित भेद र अशिक्षित भेद, लिङ्गका आधारमा पुरुष, र स्त्रीको भाषिक भेद, पेसाका आधारमा पनि पेसागत विशिष्टता भाषामा पाइने गर्दछ। उमेरका आधारमा बाल, युवा, पौढ, वृद्ध रहेको हुन्छन्। कुलीनता, जातीयका आधारमा समेत भाषिक भेद सिर्जना भएको हुन्छ।

सामाजिक भेद विभिन्न आधारमा देखिने हुँदा एउटा आधारमा एक किसिमको देखिए पनि अर्को आधारमा अर्कै भाषिक भेद देखिन सक्छ। सामाजिक संरचनाका आधारमा सिर्जित हुने सामाजिक भेदमा विविधता पाइन्छ, क्षेत्रीय भाषिकामा भाषिक भेदको एउटै तह र दिशा हुन्छ भने सामाजिक भेदमा एउटै भेद भित्र पनि विभिन्न तहका भेदहरू फेला पर्दछन्। त्यसकारण सामाजिक भेदलाई क्षेत्रीय भेद भन्दा जटिल र बहुआयामिक मानिन्छ, क्षेत्रीय भाषिका स्थानका आधारमा विभेदित हुन्छ भने सामाजिक भाषिका समाजका विभिन्न वर्ग, जातजाति, व्यवसाय, उमेर, लिङ्ग, शिक्षा, शक्ति आदिका आधारमा विभेदित हुन्छ।

यसरी भाषिक संरचना समाज सापेक्ष हुन्छ । सामाजिक संरचनाका अनुसार भाषामा विभिन्न भेद पाइन्छन् । सामाजिक संरचनाका विभिन्न पक्षहरूका अन्तर वस्तुका कारणबाट विभेदित हुने सामाजिक भेदको प्रभाव 'माइतघर' उपन्यासमा कसरी परेको छ अर्थात् 'माइतघर' उपन्यासमा के कस्तो सामाजिक भाषिक स्थिति रहेको छ भन्ने कुराको अध्ययनका लागि वर्गगत, लिङ्गगत, जातिगत र शैक्षिक अवस्थाका आधारमा उपन्यासको कथानकका पात्रहरूले प्रयोग गरेको भाषिक पक्षको अध्ययन विश्लेषण गर्ने कार्य यहाँ गरिन्छ ।

## ६.२ 'माइतघर' उपन्यासका प्रयुक्त समाज :

लैनसिंह वाङ्देल्वाट लिखित 'माइतघर' उपन्यास प्रगतिशील दृष्टिले लेखिएको सामाजिक उपन्यास हो। यस उपन्यासले अँगालेको स्थान नेपालको पूर्वी सीमाको मेची नदी भन्दा पारिको भारतीय पहाडी भु-भाग दार्जिलिङ र त्यसैका संसर्गमा नेपालको मेचीवारिको नेपाली पहाडी क्षेत्र इलामको पृष्ठभूमि लिइएको छ । दार्जिलिङको स्थानीय भाषाको प्रचुर मात्रामा प्रयोग भएको छ ।

वि.सं. २००५ साल (सन् १९५०) को दार्जिलिङको नेपाली समाज विभिन्न सामाजिक अवस्थाहरूको चित्रण 'माइतघर' उपन्यासमा गरिएको पाइन्छ । त्यसवेला भारतमा सन् १९४७ मा भइसकेको राष्ट्रिय आन्दोलन स्वतन्त्रता प्राप्ति र नेपालमा २००७ सालको क्रान्तिको समयमा सो उपन्यास रचियता पनि यसमा सीधा राजैनितक प्रभाव छैन तर त्यसले समाजमा परेको सूक्ष्म रूपले प्रभाव यहाँ देखिन्छ । यो प्रभाव खास गरी नेपाली समाजको परम्परा र नवीनताको मसिनो सङ्क्रमणको माध्यमबाट देखा पर्न आउँछ । 'माइतघर' उपन्यासमा उपन्यासकार वाङ्देल्वाले दार्जिलिङको नेपाली समाजको तीन पुस्ताको चित्रण गरेका छन् । प्रथमतः आमाबाबुको भूमिका निर्वाह गर्ने नरनारीले पौढ पुस्ताको प्रतिनिधित्व गरेका छन् भने छोराछोरीको रूपमा रहेका हरि र सानीले किशोर किशोरी पुस्ताको र युवा युवतीको पुस्ताको प्रतिनिधित्व गरेका छन् । नयाँ पुस्ता र पुराना बीच भएको वैचारिक भिडन्त एकातिर देखिन्छ भने अर्कोतिर क्रान्ति अघि र पछि को भारत र नेपालको सङ्क्रमणकालीन सामाजिक स्थितिको चित्रण पनि भएको पाइन्छ । माइतघर उपन्यासमा पैतृक आधार त्यति प्रबल नभएको देखिन्छ । दुवै परिवारले वर्गीय नेपाली समाजको प्रतिनिधित्व गरेको देखिन्छ । उपन्यासकारले सुरुदेखि अन्त्य सम्म हरि र सानीलाई प्रस्तुत गरे । उनीहरूमा विकसित

भएको प्रणयवाट प्रेम सम्बन्धी नवीन दृष्टिकोण देखाउन खोजेका छन् तर एकै घरमा बस्नु परेकाले बनाइएका दाजु बहिनीको सामाजिक दायित्व बोध यहाँ परम्परागत बाधा अड्चनको रूपमा आएको छ । माइतघर उपन्यासका पात्रमा नयाँ विचार धाराले छोए पनि त्यो पराजित भएको छ र पुरानो विचार धारावाढीले विजयी प्राप्त गरेको छ । लेखकले उपन्यासमा आर्दशवादी मान्यतालाई महत्व दिएको भए उनले हरि र सानीको नयाँ विचारलाई विजयी बनाउन सक्थे तर उनी यर्थाथवादी भएकोले तत्कालीन सामाजिक परम्पराको प्रबलताले गर्दा नयाँ सोचाई पराजित भएको यर्थाथ छ तर करूण सामाजिक दृश्य देखाउनु नै उनले उपयुक्त ठानेका छन् । प्रेम प्रणयमा आधारित कथाबस्तु भए पनि कर्तव्य र प्रेमका अधिल्तर कर्तव्य नै बलवान हुन्छ र त्यो समाजका निम्ति औपचारिकता हो भन्ने कुरा माइतघर उपन्यासमा देखाएको छ । विवाहितता नारी सौता पाएकी अबहेलित नारीले अनेक त्रासद पूर्ण घटनाको समन गर्नु परे पनि लोक मर्यादाका लागि जीवन गुजारा गर्नु परेको यर्थाथ चित्रण उपन्यासमा गरिएको छ । शताब्दी देखि विकसित रहेको पुरानो पुस्ताको अगाडि भर्खर भर्खर मात्र थालनी भएको नयाँ पुस्ताको विवशतावस घुडाँ टेक्नु परेको देखाउनु त्यस ग्रामिण सन्दर्भमा यथार्थनै देखिन्छ ।

### ६.३ वर्गीय आधारमा 'माइतघर' उपन्यासका पात्रहरूले प्रयोग गरेको सामाजिक भाषाका विश्लेषण

जहाँ समाज रहेको हुन्छ त्यहाँ वर्ग पनि रहेको हुन्छ । वर्गीय संरचनामा समाजले आफ्नो पूर्ण अस्तित्व खोजिरहेको हुन्छ । समाजमा रहेको वर्गले सामाजिक भेदलाई देखाउछ । एउटा वर्गमा उसको पारिवारिक स्तर वा आर्थिक स्तर संगै व्यावसायिक पेसा पनि जोडिने गर्दछ सामाजिक स्तर संगै भाषाको स्तर पनि मिल्ने गर्दछ । भाषाको सामाजिक भेद वर्गीकरण गर्ने क्रममा इङ्ल्याण्डको भाषिक परिवर्तनको अध्ययन गर्दा ट्रेजिनले मध्यम वर्ग र निम्न मध्यम वर्ग, उच्च मजदुर वर्ग, निम्न मजदुर वर्ग र उच्च वर्ग गरी पाँच वर्गमा विभाजन गरेको पाइन्छ । नेपालको सन्दर्भमा खासगरी उच्च घरानिया (राज घरानिया) उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग र निम्न वर्ग गरी चार प्रकारका सामाजिक तह निर्धारण गरी भाषिक भेदलाई अध्ययन गर्न सकिन्छ ।

अतः : 'माइतघर' उपन्यासका पात्रहरूले प्रयोग गर्ने भाषालाई वर्गीय आधारमा विश्लेषण गर्नु पर्ने हुँदा यसमा रहेको समाज, यहाँ रहेको वर्गीयप तह र पात्रको स्थितिलाई प्रथमतः : कोट्याउनु आवश्यक छ । 'माइतघर' उपन्यासमा प्रस्तुत सामाजिक र उक्त समाजमा देखिएको वर्गीय अवस्थालाई दुई वर्गमा राखेर अध्ययन गर्न सकिन्छ, जुन निम्नानुसार छन् :-

### ६.३.१ मध्यम वर्गीय पात्रहरूको सामाजिक भाषिक विश्लेषण

'माइतघर' उपन्यास प्रवासी नेपालको यथार्थ चित्रण गरिएको कृति हो । उपन्यासमा नेपाली जन-जीवनको यथार्थता झल्किएको छ । 'माइतघर' उपन्यासमा मध्यम वर्गीय नेपालको भौगोलिक स्थिति इलाम जिल्ला मेचीनदी वारिको स्थानलाई लिइएको छ । उपन्यासमा प्रयुक्त पात्रहरू मध्ये मध्यम वर्गीय पात्रहरूमा हरि, सुवेदार सुवेदानी, बाहुनी वुढी, डाक्टर, छेमेकीहरू, छिमेकी आईमाईहरू, जन्ती सानीको पति, सानीको सासू, सानीको ससुरा रहेका छन् । हरि उपन्यासको नायक हो । हरि जागिरे व्यक्ति पनि हो । हरिको बाबुको मृत्यु भए पछि घर व्यवहार चलाउने भार हरिमा रहेको छ । उपन्यासमा हरिले प्रयोग गरेको भाषा यस्तो रहेको छ :-

#### (क) हरिको संवाद :-

“ओहो, कान्छी आमा पो आइपुग्नु भएछ ! किन नचिन्नु ? देख्ने वितिकै ठम्याइहालौं नि ।” पृ (१८)

“किताब ल्याइदिए भने तिमी पनि पढ्छ्यौ सानु ?” पृ (२६)

‘हो, अर्काकी भएर गएपछि तिमीले लोग्नेको घरमा आफ्नो सम्भन्नु पर्छ । यो माइतघरलाई विर्सिदिनु पर्छ .....।’ पृ(४७)

माथिको उदाहरणले हरि मध्यम वर्गको पात्रको रूपमा प्रस्तुत हुन्छ । उसको भाषाले कर्तव्यमूखी व्यक्तिको रूपमा प्रस्तुत गराएको छ । आफू भन्दा ठूलालाई हजुर छ भने सानालाई तिमीको सम्बोधनले मध्यम व्यक्तिको रूपमा देखा परेको छ । हरिको संवाद उपन्यासमा २८ ठाउँमा रहेको छ ।

(ख) सुवेदारको संवाद :-

: “के चलन गर्दै छस् हरि ?” पृ (२)

: “सानी ! अबदेखि परेवा हाल्छेस् कि हान्दिनस !” (२)

: “होइन, यस्तो जामा लाएको बेला देखि सानीलाई यस्ती राम्री देख्छ्यौ, तर यसले जहिले देखि फित्कौली छुन, परेवा हान्न्, उपद्रव गर्न छाडेकी छ उसै बेलादेखि सानीलाई म त ज्यादै मन पराउन थालेको छु । अब ता सानीले फित्कौली पनि देखाउदिँन अनि परेवा पनि हान्दिन, होइन त सानी ? (७)

माथिको संवादले सुवेदार मध्यम वर्गीय पात्रको रूपमा देखा परेका छन् । उनको भाषामा सानी र हरिलाई ‘त’ को प्रयोग र श्रीमतीलाई ‘तिमी’ को प्रयोग गरेका छन् । यस्तो सम्बोधन नेपाली समाजको मध्यम वर्गको भाषा हो । सुवेदार किताब पढन मन पराउने सेवा निवृत्त व्यक्तिका रूपमा देखा परेका छन् ।

सुवेदारले ९ ठाउँमा संवाद गरेका छन् ।

(ग) सुवेदानीको संवाद :-

: के भयो ? के भयो हं ? हरिले के उपद्रव गर्‍यो र घरभित्रकुनामा यो लुकिरहेको छ ?

ओहो, अनि सानी नि .....।’ पृ (३) : ‘ओहो आज त सानी पुतली पो भइछस । पृ(६)

: ‘हो मेरो छोरा गाँउ घरका केटाकेटीको राजा थियो ।’ पृ (१७)

: ‘खादैन रे ! खादिन भन्छ ! कपाल दुख्यो भन्छ .....त्यो विरामी भयो कि मेरो त आधा जीउ हुन्छ ।’ पृ (२४)

माथिको संवादबाट सुवेदानी मध्यम वर्गको पात्रको रूपमा भूमिका रहेको छ । सुवेदानीले उपन्यासमा सबैभन्दा बढी संवाद गर्ने व्यक्तिको रूपमा देखा परेकी पात्र हुन् । सुवेदानीले उपन्यासमा ६५ ठाउँमा संवाद गरेको पाइन्छ । यी संवादमा प्रयोग गरेको भाषाले सचेत तर मध्यम वर्गको भाषाको प्रयोगकर्ता हो ।

(घ) बाहुनी बूढीको संवाद :

: ‘दुलाहा नि ?’ पृ (४२)

: 'उमेर कतिको छ ? दाँवल मिल्छ के ? कसैका भाग्यमा ता उमेर नमिलेर लोग्ने स्वास्नी हिँडदा पनि बाबु छोरी हिँडेजस्तो देखिन्छ ।' पृ (४२)

माथिको संवादले बाहुनी बूढी मध्यम वर्गको पात्र हुन् । सामाजिक परम्परामा समेत व्यक्तिको रूपमा बाहुनी बूढीलाई लिन सकिन्छ । उपन्यासमा बाहुनी बूढीको जम्मा चार ठाउँमा संवाद उपस्थित देखिन्छ । यसरी मध्यम वर्गका पात्रमा हरि, सुबेदार, सुबेदानी, बाहुनी बूढीको उपन्यासमा संवाद रहेका छन् । यी पात्रले प्रयोग गरेको भाषाको आधारमा मध्यम वर्ग मान्न सकिन्छ । अन्य पात्रमा डाक्टर, छिमेकीहरू, छिमेकी आइमाईहरू, जन्ती, सानीको पति, सानीको सासू, सानीको ससुरा छन् । यी पात्रमा संवाद कुनै ठाउँमा छैन तर उपन्यासमा देखिएको व्यवहारले यिनलाई मध्यम वर्गको पात्रको रूपमा राखिएको छ । उपन्यासमा मध्यम वर्ग र निम्न वर्गको भाषाको मिश्रण छ । एउटै पात्रले कतै मध्यम र कतै निम्न वर्गको भाषा प्रयोग गरेको पनि देखिन्छ । मध्यम वर्गको रूपमा उपन्यासमा आफ्नै विभिन्न फरक चरित्र बोकेका पात्रहरू रहेका छन् । मध्यम वर्गीय प्रतितिधि पात्रहरूको संवाद एवम् बोलीचालीलाई विश्लेषण गर्दा मानक रूपमा बोलिने भाषाकै बढी प्रभाव देखिन्छ । आफूभन्दा तल्लो वर्गका मान्छेसंगको व्यवहार अहम्वादी एवम् हैकमपरक नभई स्वभाविक देखिन्छ ।

यस उपन्यासमा आफूभन्दा ठूलो मान्नु पर्ने मान्छेलाई आफूसरहलाई पनि सम्मान सानालाई सामान्य शब्दको प्रयोग गरिएको छ । मध्यम वर्ग र निम्न वर्गमा तुच्छ शब्द प्रयोग भएको देखिन्छैन । सहज र सामान्य शब्दको प्रयोग गरेको छ । यसले सामाजिक भाषालाई मानक रूपको भाषाको प्रयोग भएको मान्न सकिन्छ ।

### ६.३.२. निम्न वर्गीय पात्रहरूको भाषिक विश्लेषण :

'माइतघर' उपन्यासमा कारुणिक देखाएको छ । यस उपन्यासमा निम्न वर्गीय पात्रको प्रयोग भएको छ । निम्न वर्गमा सानी, रत्ना, सानीको बाबु, हरिको नोकर, लामिछानेका बहिनीहरू, गाउँका केटाकेटीहरू, एक घाँसी, सानीको सौता, सानीको नन्द रहेका छन् ।

#### (क) सानीको संवाद :

'हरि दाज्यु फित्कौली बनाएर परेवा हान्न लागेको थियो । अनि वडा आएर..... मेरो कान.....।' पृ (४) 'बढी, मलाई चिन्नु भएन ?।' पृ(१५)

'हरि दाज्यु भात खाँदैनेरे !' पृ (२४)

‘हरि दाज्यू, म त बिहा गर्दिनँ.....म यहाँ वस्दा के तपाईलाई पीर लाग्छ ? बडी पनि देखिसहनु हुन्न अनि तपाई पनि देखिसक्नु हुन्न भन्ने बसिन्दनँ । जान्छ, जान्छु टाढै जता यो गोडाले लाग्छ । पृ (४०)

‘ज्वाइँ नआएर साहिँली नन्द म सित आ‘की’ पृ (५३)

‘तिहारमा आउनु भनेको छ ।’ पृ(५६)

‘बडी आज ता म आफ्नो पोइको घर फर्कन्छु है’ पृ (८४)

‘हरि दाज्यू ! हरि दाज्यू ! उठ्नुहुन्न ?’ पृ (८४)

‘माइतघर उपन्यासकी मुख्य नायिका सानी हो । सानी एउटा कारूणिक जनजीवनलाई संघर्ष गर्दै अगाडि बढि रहेकी पात्र हो । वर्गका आधारमा निम्न वर्गमा पर्ने पात्र हो । सानोमा हरिसंग खेल्ने पनि हरिको घरमा बस्ने पात्र हो । नेपाली समाजमा रहेको परम्परालाई नेपाली नारीले कसरी सामना गर्दछन् भन्ने कारूणिक पक्षलाई राखिएको छ । सानीको व्यवहारले सानीलाई निम्न पात्रमा राखिएको छ तर वाल्यकालमा रहेको भाषा पछि आदरको रूपमा पुगेको छ । उपन्यासमा सानीको जम्मा ३७ वटा संवाद रहेका छन् । यी संवाद कतै आदरार्थी देखिन्छ भने कतै आदरार्थी देखिन्छ भने कतै आदर गर्ने व्यक्तिलाई पनि आदर नगरेको माथिको उदाहरणले देखाएको छ । सानीको संवाद भाषिक विभेद छ । यसले व्यक्तिको वर्गले पनि भाषामा प्रभाव पार्दछ भन्ने हो ।

(ख) रत्नाको संवाद :

‘बडीलाई दोगिदनस् सानू ?’ पृ (९)

‘यो के गर्नु भएको दिदी ?’ पृ (१२)

‘मलाई चिन्छौ के बाबु ?’ पृ (१८)

‘ज्वाइँ किन आएन त ?’ पृ (५२)

‘माइतघर’ उपन्यासकी निम्न वर्गीय पात्र रत्ना हुन् । रत्ना बसाइँ सरेर इलाम जन्चे र श्रीमान गुमाए पछि सुवेदानीको घरमा सरन लिन पुगिछन् । श्रीमान वीना आफ्नो जीवनलाई सार्थक बनाउन छोरीलाई हुर्काउने काम गरेकी छिन् माथिको संवादवाट भाषामा आदरको भाव संगै अनादरको भाव पनि गरेको छ । सुवेदानीले छिमेकीलाई आदर गर्नु तथा ज्वार्यलाई आदर नगरेको देखिन्छ । भाषालाई कतै सरल तरीकाले प्रयोग गरिएको छ भने कतै असचेत

रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । रत्नाले संवाद गर्दा सचेत अवस्थामा आदर भावको प्रयोग गरेको छ । भने कतै त्यसलाई बेवास्ता गरिएको छ । रत्ना वर्गीय आधारमा निम्न वर्गीय भए पनि भाषा प्रयोग भने मध्यम वर्गको छ । उपन्यासमा २६ वटा संवाद रहेको छ । व्यक्तिको परिवेश अनुसार भाषा पनि फरक रहेको छ ।

(ग) नोकरको संवाद :

‘कहाँवाट आउनु भएको आमै ?’ पृ (१४)

‘होइन कहाँवाट आउनुभएको ?’ पृ (१४)

‘सुवेदानी हुनुहुन्छ ?’ पृ (१४)

‘सुवेदानी ता ?’ पृ (१४)

‘ओहो, परारको सालै परलोक हुनु भयो ! वाहिर कति उभिरहनु हुन्छ । आमै, म भित्र खबर गरिदिउँ है ?’ पृ (१४)

माथिको संवाद अनुसार निम्न वर्गको व्यक्तिले पनि भाषामा मध्यम वर्गले प्रयोग भाषाको प्रयोग गरेको छ । नोकर भाषिक प्रयोगमा सचेत गरेको छ । असल स्थानीय संवादको प्रयोग गरेको छ । उपन्यासमा ५ वटा संवाद नोकरका रहेका छन् यस पात्रको घरमा काम गरे पनि उसले प्रयोग गर्ने, भाषामा ऊ सचेत पात्र हो ।

सानीको बावु, लामिछानेको बहिनीहरू, गाउँका केटाकेटीहरू, एक घाँसी, सानीको नन्द यी पात्रको कुनै संवाद रहेको छैन । संवाद रहेका पात्रमा वर्गीय आधारमा निम्न वर्गमा पर्ने मात्र रहेका छन् । निम्न वर्गका व्यक्ति भए पनि भाषामा तुच्छ, संवाद प्रयोग भएको छैन । कतै आदरको कमी भए पनि धेरै ठाउँमा आदर शब्दको प्रयोग भएको छ ।

यसरी समाजमा देखिने भाषिक भेदलाई ‘माइतघर’ उपन्यास भित्र वर्गीय रूपमा पात्रहरूका माध्यमबाट स्पष्ट छुट्याउन सकिदैन सवै पात्रले प्रयोग गर्ने भाषा एउटै जस्तो लाग्छ । धेरै जस्तो भए पनि कतै न कतै भने फरक भेद देखिन्छ । पात्रहरूले प्रयोग गरेको भाषाको आधारमा स्थानीय भाषिकाको प्रयोग रहेको छ । भाषागत भेद अनुसार सामाजिक भेद र भाषिक भेद पनि रहेको छ । पात्रले गरेको भाषाबाट थाहा पाउन सकिन्छ, कि वर्गीयताका कारण भाषिक प्रयोगमा प्रभाव पर्दछ ।

### ६.३.३. उमेरका आधारमा 'माइतघर' उपन्यासमा रहेका पात्रहरूको वर्गीकरण

'माइतघर' उपन्यासलाई वर्गीकरण गर्ने क्रममा उमेरको आधार पनि एउटा आधार हो । उपन्यासमा रहेका पात्रलाई बाल, युवा, प्रौढ, वृद्ध गरी वर्गीकरण गर्नु उमेरको आधारमा वर्गीकरण हो । 'माइतघर' उपन्यासमा उमेर छुट्याइएको छैन तर पात्रहरूले प्रयोग गरेको भाषा र देखाएको व्यवहार आधारमा पात्रलाई वर्गीकरण गरिएको छ । पात्रलाई बाल, युवा प्रौढ, वृद्ध गरी चार प्रकारमा वर्गीकरण गरिएको छ । उपन्यासमा रहेका पात्रलाई तालिकामा यसरी देखाउन सकिन्छ :-

#### “उमेरको आधारमा पात्रगत वर्गीकरण”

तालिका नं. १

| क्र.सं. | पात्रको नाम        | बाल | युवा | प्रौढ | वृद्ध |
|---------|--------------------|-----|------|-------|-------|
| १       | सानी               |     | +    |       |       |
| २       | हरि                |     | +    |       |       |
| ३       | सुवेदार            |     |      | +     | +     |
| ४       | सुवेदानी           |     |      | +     |       |
| ५       | रत्ना              |     |      | +     |       |
| ६       | सानीका बाबु        |     |      | +     |       |
| ७       | हरिको नोकर         | +   |      |       |       |
| ८       | लामिछोका बहिनीहरू  |     | +    | +     |       |
| ९       | डाक्टर             |     |      | +     |       |
| १०      | गाउँका केटाकेटीहरू | +   |      |       |       |
| ११      | छिमेकी आइमाईहरू    |     |      | +     |       |
| १२      | जन्ती              |     |      | +     |       |
| १३      | सानीको नन्द        | +   |      | +     |       |
| १४      | छिमेकीहरू          |     |      |       |       |
| १५      | एकघाँसी            |     | +    |       |       |

|    |              |  |   |   |   |
|----|--------------|--|---|---|---|
| १६ | सानीको पति   |  | + |   |   |
| १७ | सानीको सासु  |  |   | + | + |
| १८ | सानीको ससुरा |  |   | + | + |
| १९ | सानीको सौता  |  | + |   |   |
| २० | बाहुनी बूढी  |  |   | + | + |

माथिको तालिकाका आधारमा उपन्यासमा बीस पात्रहरू रहेको छन । दस पात्र नारी छन भने दस पात्र पुरुष छन् । उपन्यासमा नारी र पुरुष पात्र समानुपातिक रूपमा रहेका छन् । उपन्यासमा बाल पात्रको भूमिका पनि रहेको छ । बाल पात्रमा हरिको नोकर गाउँका केटाकेटीहरू, सानीको नन्द गरी तीन जना रहेका छन् । बालपात्र पनि उपन्यासलाई पूर्णता दिने काम गरेका छन् । माइतघर उपन्यासमा अर्को भूमिका युवाको रहेको छ । युवा वर्गले नै उपन्यासलाई अगाडि बढाउने काम गरेका छन् । हरि र सानी सुरूमा बाल पात्रको रूपमा देखा परेका छन् र पछि युवा पात्रको रूपमा रहेका छन् । युवा पात्रको भूमिका प्रमुख भएकोले हरि र सानीलाई युवा वर्गमा राखिएको छ । उमेरका आधारमा युवा वर्गमा पर्ने पात्रहरू छ जना रहेका छन् । युवा पात्रमा हरि, सानी, लामिछानेका बहिनीहरू घाँसी सानीको पति, सानीको सौता रहेका छन् । युवा वर्गमा पर्ने पात्रहरूले उपन्यासलाई चरम रूपमा पुऱ्याउने काम गरेका छन् । यस्तै गरी 'माइतघर' उपन्यासमा प्रौढहरूको पनि बाहुल्य रहेको छ। माइतघर उपन्यासमा प्रौढ पात्रको सङ्ख्या ११ जना रहेका छन् । उमेरका आधारमा सबै भन्दा धेरै पात्र प्रौढ रहेका छन् । प्रौढ पात्रमा सुबेदार, सबेदानी रत्ना, सानीका बाबु, डाक्टर, छिमेकी, आइमाईहरू, जन्ती, छिमेकीहरू, सानकी सासू, सानीको ससुरा, बाहुनी बूढी रहेका छन् । यी पात्रले उपन्यासलाई अगाडि बढाउन काम गरेका छन् । यसरी 'माइतघर' उपन्यासका पात्रको उमेरका आधारमा वर्गीकरण गरीएको छ ।

उपन्यासमा रहेका पात्रहरूले माइतघर उपन्यासमा भाषिक प्रयोग उमेरको आधारमा गरेका छन् । जसरी उमेर बढ्दै गएको छ । पात्रले गरेको व्यवहारका बाल, युवा, प्रौढ, बृद्धमा वर्गीकरण गरिएको छ ।

### ६.३.४ लैङ्गिक आधारमा 'माइतघर' उपन्यासका पात्रहरूले प्रयोग गरेको सामाजिक भाषाको विश्लेषण

विषयवस्तुका आधारमा भाषाको फरक प्रयोग भए जस्तै लिङ्गका आधारमा पनि भाषा प्रयोगमा विभिन्नता देखिन्छ । एउटै समाज र एउटै परिवारभित्र पनि महिला र पुरुषले प्रयोग गर्ने बोलीमा विभेदहरू भेटिन्छन् । भाषिक प्रयोगकै हिसाबबाट प्राय भाषामा महिला हो कि पुरुष हो छट्याउन सकिने हुन्छ । यसका साथै ध्वन्यात्मक गुण रङ्गको विवेक गर्ने क्षमता र शब्द भन्डारका दृष्टिले धेरै जस्तो भाषामा महिला र पुरुषको भाषा प्रयोगमा विविधता देखाउन सकिन्छ ।

'माइतघर' उपन्यास भित्रको लैङ्गिक अवस्थाका कारण देखिएको भाषिक भेदलाई समेत यहाँ देखाउने प्रयास गरिएको छ । 'माइतघर' उपन्यासमा रहेका पात्रहरूको लैङ्गिक अवस्थालाई यसरी देखाउन सकिन्छ ।

#### तालिका नं. २

#### पात्रगत भाषिक विश्लेषण

| क्र.सं | पुरुष पात्रहरू     | क्र.सं. | महिला पात्रहरू      |
|--------|--------------------|---------|---------------------|
| १      | हरि                | १       | सानी                |
| २      | सुवेदार            | २       | सुवेदानी            |
| ३      | सानीको बाबु        | ३       | सानीकी आमा रत्ना    |
| ४      | हरिको नोकर         | ४       | लामिछानेका बहिनीहरू |
| ५      | डाक्टर             | ५       | छिमेकी आइमाई        |
| ६      | गाउँका केटाकेटीहरू | ६       | सानीको नन्द         |
| ७      | जन्ती              | ७       | छिमेकीहरू           |
| ८      | घाँसी              | ८       | सानीको सासू         |
| ९      | सानीको पति         | ९       | सानीको सौता         |
| १०     | सानीको ससुरा       | १०      | बाहुनी बूढी         |

उल्लेखित तालिकाले 'माइतघर' उपन्यासमा रहेका पात्रहरूको लैङ्गिक अवस्थालाई स्पष्ट पारेको छ । यी उल्लेखित पात्रहरू मध्ये पनि उपन्यासका प्रमुख पात्रका रूपमा पुरुष

प्रमुख पात्रमा हरि र महिला पात्रमा सानी, रत्ना र सुबेदानी रहेका छन् । यस्ता पात्रले उपन्यासलाई अगाडि बढाउने काम गरेका छन् । उपन्यासका प्रमुख पात्रका रूपमा रहेका छन् । उपन्यास भित्रको भाषिक पक्षलाई डोच्याउने काम गरेको छन् । यी पात्रहरूको संवादका क्रममा भाषामा समेत लैङ्गिक प्रभाव परेको पाउन सकिन्छ ।

### ६.३.५ शब्द भण्डारका दृष्टिले भाषाको लैङ्गिक विश्लेषण

भाषिक प्रयोगका क्रममा कुनै पनि महिला र पुरुष बीचमा देखिने विभेदीकरणलाई लैङ्गिक रूपमा विश्लेषण गर्दा शब्द भण्डारलाई प्रमुख आधार मान्नु पर्छ । शब्द प्रयोगका क्रममा देखिने विभेदीकरण जुन लैङ्गिक कारणले हुने गर्दछ त्यो नै शब्द भण्डारगत विविधता हो । उपन्यासमा प्रयुक्त लैङ्गिक विभेद देखाउने शब्दहरू यस प्रकार देखाउन सकिन्छ ।

तालिका नं.

#### उदाहरणको रूपमा उपन्यासमा प्रयुक्त केही शब्दगत वर्गीकरण

| सि.नं | प्रयुक्त शब्द | पुरुष | स्त्री | आदर | अनादर | एक वचन | बहु वचन | प्रथम पुरुष | द्वितीय पुरुष | तृतीय पुरुष | मनव मुख्य रूप |
|-------|---------------|-------|--------|-----|-------|--------|---------|-------------|---------------|-------------|---------------|
| १     | गर्दैछस       | +     | -      | -   | +     | +      | -       | -           | +             | -           | गर्नु         |
| २     | हान्दिनस्     | +     | -      | -   | +     | +      | -       | -           | +             | -           | हान्नु        |
| ३     | लाउँछेस्      | -     | +      | -   | +     | +      | -       | -           | +             | -           | लगाउनु        |
| ४     | लुकिरहेको     | +     | -      | -   |       | +      |         |             | -             | +           | लुकिरहनु      |
| ५     | गर्दिन        | -     | +      | -   |       | +      |         |             | +             | +           | नर्गनु        |
| ६     | पाउँछे        | -     | +      | -   | +     | +      | -       | -           | -             | +           | पाउनु         |
| ७     | जम्मेकी       | -     | +      | -   | +     | +      | -       | -           | -             | +           | जम्मानु       |
| ८     | गरेको         | +     |        | -   | +     | +      | -       | -           | -             | +           | गर्नु         |
| ९     | आउँछे         | -     | +      | -   | +     | +      | -       | -           |               | +           | आउनु          |
| १०    | पुग्छे        | -     | +      | -   | +     | +      | -       | -           |               | +           | पुग्नु        |
| ११    | गर्थिन        | -     | +      |     | -     | +      | -       | -           | -             | +           | गर्नु         |
| १२    | दुब्लार्दैछस  | +     | -      | -   | -     | +      | -       | -           | -             | +           | दुब्लाउनु     |
| १३    | नदिएकी        | -     | -      |     | -     | +      | -       | -           | -             | -           | नदिनु         |
| १४    | अएकी          | -     | +      |     | -     | +      |         | +           | +             | -           | आउनु          |
| १५    | भइसकिछस्      | +     | +      | -   | +     | +      |         | +           | +             | +           | भइसक्नु       |
| १६    | भइछस्         |       |        |     |       |        |         |             |               |             | हुनु          |
| १७    | मान्दिन्      | +     | +      | -   | +     | +      | +       | +           | -             | +           | नमान्नु       |
| १८    | सकिन          | +     | +      | -   | +     | +      | +       | -           | -             | -           | नसक्नु        |

|    |        |   |   |   |   |   |   |   |   |   |       |
|----|--------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|-------|
| १९ | गयो    | + | + | - | + | + | + | - | - | + | गर्नु |
| २० | आउँछ   | + | + | - | + | + | + | - | - | + | आउनु  |
| २१ | गर्दछस | + | + | - | + | + | + | - | + | - | गर्नु |

माथिको उदाहरणवाट भाषिक भिन्नता देखाउने शब्दको प्रयोग भएको छ । यसले उपन्यासमा प्रयोग भएको शब्दको भिन्नतालाई देखाउने गर्दछ । उपन्यासमा भएका शब्द प्रयोगको आधारमा भाषिक प्रयोगमा भिन्नता छ । आदर र अनादर शब्दको प्रयोग बढी भएको छ । वचनको पनि भाषा प्रयोगको सन्दर्भमा भिन्नता देखिन्छ । एक वचन र बहुवचनमा एक वचनको संख्या बढी रहेको छ र पुरुषको आधारमा पनि प्रयुक्त शब्दहरूमा फरक पाइन्छ, यसरी उपन्यासमा रहेका शब्दलाई लिङ्गगत आधारमा फरकपन देखा परेको छ । उपन्यासमा रहेका पात्रहरूलाई लिङ्गगत आधारमा फरकपन देखा परेको छ । उपन्यासमा रहेका पात्रहरूलाई लिङ्गगत आधारमा फरक भए जस्तो शब्दको प्रयोगमा पनि फरक पात्र देखा परेको छ । यसरी 'माइतघर' उपन्यासमा लिङ्गगत विभेद रहेको र शब्द प्रयोग गर्ने आधारमा पनि देखा पर्दछ । यसरी उपन्यासमा भिन्नता रहेको छ । यसले गर्दा शब्द प्रयोगमा भिन्नता रहेको छ । यसले गर्दा शब्द प्रयोगमा भिन्नता देखिन्छ । लिङ्गगत आधारमा माइतघर उपन्यासमा भिन्नता रहेको छ ।

#### ६.६. शैक्षिक अवस्थाका आधारमा 'माइतघर' उपन्यासको भाषिक विश्लेषण

शिक्षित व्यक्ति र अशिक्षित व्यक्तिको भाषाको प्रयोगमा फरक पाइन्छ । भाषिक भेदको प्रमुख कारक शिक्षालाई पनि मानिन्छ । शिक्षा प्राप्त गर्ने व्यक्तिहरूले प्रयोग गर्ने भाषामा धेरै अन्तर भेटिन्छ । उदाहरणको रूपमा गाउँमा बस्ने व्यक्तिले प्रयोग गर्ने भाषा र शहरमा बस्ने व्यक्तिले प्रयोग गर्ने भाषामा धेरै भेद देखिन्छ ।

समाजमा प्रयोग गर्ने भाषालाई सूक्ष्म रूपमा केलाएर मात्र शिक्षित र अशिक्षितले प्रयोग गर्ने भाषालाई छुट्याउन सकिन्छ । शिक्षित परिवार र अशिक्षित परिवारले प्रयोग गर्ने भाषामा फरक पाउन सकिन्छ । शिक्षा प्राप्त गर्ने तह पनि फरक रहेको हुन्छ । कोही विद्यालय स्तरको तह प्राप्त गरेको, कोही स्नातक भनेको कोही, माथिल्लो तहको शिक्षा प्राप्त गरेको हुन्छ । शिक्षा प्राप्त गरेको तह अनुसार व्यक्तिले प्रयोग गर्ने भाषा पनि फरक रहेको हुन्छ । जस्तो

स्नातकोत्तर तहको शिक्षा प्राप्त गरेको व्यक्ति र विद्यालय तहको शिक्षा प्राप्त गरेको व्यक्तिको भाषाको प्रयोग फरक रहेको हुन्छ । निश्चित शैक्षिक तह र अवस्था संग सम्बन्धित वक्ताको भाषिक उच्चारण शब्दचयन, शैली र विषय बस्तुको प्रतिपादन प्रक्रिया आदि विभिन्न तहबाट भाषिक भेदको अवस्था छुट्टयाउनु पर्ने हुन्छ र रहन्छ पनि ।

भाषिक दृष्टिले 'माइतघर' उपन्यास अध्ययन गर्दा यहाँ लेख्य भाषाको रूपमा स्तरीय भाषाको भएको छ । कथ्य भाषाको रूपमा दार्जिलिङ क्षेत्रमा बोलिने स्थानीय जनजातीले प्रयोग गर्दा लेखक तेस्रो व्यक्तिको रूपमा एक दर्शकी बनेर उपन्यासका पात्रहरूको विषयमा वर्णन अथवा प्राकृतिक विवरण दिइएको देखिन्छन् । कथ्य भाषाको निमित्त पात्र, पात्राहरूबीच संवाद गराएर प्रस्तुत गर्दछन् । लेख्य भाषा स्थानीय वातावरण र त्यहाँको त्यहाँको भाषिकाबाट प्रभावित भएको छैन ।

'माइतघर' उपन्यासलाई शैक्षिक दृष्टिले अध्ययन गर्ने गरिएको छ । 'माइतघर' उपन्यास वि.सं. २००६ साल (सन् १९५०) को दार्जिलिङको नेपाली समाजको विभिन्न सामाजिक अवस्थाको चित्रण गरिएको उपन्यास हो । भारतमा सन् १९४७ मा भइसकेको २००७ सालको क्रान्तिको समयमा सो उपन्यास रचियता पनि यसमा सीधा राजनैतिक प्रभाव छैन तर त्यसले समाजमा पारेको सूक्ष्म रूपको प्रभाव यहाँ देखिन्छ । नेपाली समाजको परम्परा र नवनिताको मसिनो सङ्क्रमण खास गरी गरी पुस्तागत रूपमा चित्रित भएको छ ।

'माइतघर' उपन्यासमा हरि, सानी, सुवेदानी, रत्ना प्रमुख पात्रको रूपमा रहेका छन् । यिनीहरूको दार्जिलिङको स्थानीय भाषाको प्रयोग गरेका छन् । पात्र अनुसारको भाषा पनि प्रयोग भएको छ । दार्जिलिङमा बोलिने भाषिकामा पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्गको आदरार्थीको प्रयोग साना र ठूलामा एकै किसिमको क्रियापदको प्रयोग भएको छ । समान आदरार्थी भाषाको प्रयोग गरिएको छ ।

शैक्षिक दृष्टिकोणले हरिले प्रयोग गरेको भाषा शिक्षित व्यक्तिले प्रयोग गरेको भाषा हो । हरि एउटा जागिरे पढे लेखेको व्यक्ति हो । हरिलाई शिक्षित व्यक्तिले रूपमा लिइन्छ । 'माइतघर' उपन्यासमा रहेका पात्रले प्रयोग गरेको संवादका आधारमा छुट्टयाउदा :

#### शिक्षित पात्रहरू :

१. हरि २. सुवेदार ३. सानीको ससुरा ४. सानीको पति ५. छिमेकीहरू ६. सानीको बाबु ७. जन्ती ८. डाक्टर हुन् ।

### अशिक्षित पात्रहरू :

१. सानी २. सुबेदानी ३. रत्ना ४. हरिको नोकर ५. सानीको नन्द ६. बाहुनी वूढी ७. लामिछानेका बहिनीहरू ८. गाउँका केटाकेटीहरू ९. एक घाँसी १०. सानीको सासू ११. सानीको सौता १२. छिमेकी आईमाईहरू

‘माइतघर’ उपन्यासमा शिक्षित पात्रहरूले प्रयोग गरेका संवादहरू

#### (क) हरिको संवाद :

: ‘कान्छी आमा धेरै वर्ष पछि पो आउनु भयो त ?’ (१९)

‘ओहो ! अहिले सम्म तिमी खान गएकी छैनौ सानु ?’ (२४)

#### (ख) सुबेदारको संवाद :

: ‘के चलन गदै छस् हरि ?’ (२)

: ‘सानी अब देखि परेवा हान्छेस् कि हान्दिनस् !’ (२)

माथिको संवादको आधारमा हरि शिक्षित पात्र हो । उसले सानीलाई तिमीको सम्बोधन गरेको छ भने कतै ‘तँ’ पनि प्रयोग भएको छ । हाम्रो समाजमा आफू भन्दा सानालाई तिमी र तँ को सम्बोधन सामान्य व्यक्तिले प्रयोग गर्ने शब्द हो । हरिले आफूभन्दा ठूलालाई तपाईंको सम्बोधन गरेको छ । हरि जागिरे भएकोले घरको हेर फेर पनि गर्दछ । ऊ पढेलेखेको व्यक्ति हो भने सानीलाई पनि पढ्न प्रेरित गर्ने गर्दछ उसको अन्य व्यवहारले पनि शिक्षित व्यक्ति हो भन्ने सकिन्छ । साथै हरिको बुवा सुबेदार पनि शिक्षित व्यक्ति हुन् । सेवा निवृत्त भएका र उपन्यास पढ्न मन पराउने व्यक्तिको रूपमा रहेका छन् । सुबेदारको संवादमा छोरा छोरीलाई प्रयोग गर्ने भाषाको प्रयोग भएको छ । उनको संवाद व्यवहारको आधारमा शिक्षित व्यक्तिको रूपमा देखा पर्दछन् । अन्य पात्रमा सानीको ससुरा, सानीको पति, छिमेकीहरू, सानीको बुवा, जन्ती, डाक्टरको संवाद छन् तर उनीहरूको उपन्यासमा देखिएको भूमिकाको आधारमा शिक्षित व्यक्तिको रूपमा देखा पर्दछन् । यसरी शिक्षित र अशिक्षित पात्रको आधारमा उपन्यासमा रहेका पात्रको आधारमा शिक्षित पात्र आठ जना मात्र रहेका छन् । जब कि उपन्यासमा जम्मा बीस जना पात्र रहेका छन् ।

‘माइतघर’ उपन्यासमा रहेका अशिक्षित पात्रहरू सानी, सुवेदानी, रत्ना, हरिको नोकर, सानीको नन्द, बाहुनी बूढी, लामिछानेका बहिनीहरू, गाउँका केटाकेटीहरू, एक घाँसी, सानीको सासू, सानीकोको सौता, छिमेकी, आइमाईहरू रहेको छन् ।

‘माइतघर’ उपन्यासमा रहेका अशिक्षित पात्रहरू सानी, सुवेदानी, रत्ना, हरिको नोकर, सानीको नन्द, बाहुनी बूढी, लामिछानेका बहिनीहरू, गाउँका केटाकेटीहरू, एक घाँसी, सानीको सासू, सानीको सौता, छिमेकी, आइमाईहरू रहेका छन् ।

‘माइतघर’ उपन्यासमा रहेका अशिक्षित पात्रले प्रयोग गरेको संवाद यस प्रकार रहेको छ :

(क) सानीको संवाद :

:‘हरि दाज्युले फित्कौली बनाएर परेवा हान्न लागेको थियो अनि’ (११)

:‘ज्वाइँ आएन । यी साहिँली नन्द मसित आ की ! पृ (५३)

:‘तिहारमा आउछु भनेको छु ।’ पृ (५६)

(ख) सुवेदानीको संवाद :

:‘आज कस्तो काममा आयौ त बहिनी ?’ पृ (१०)

:‘वीसासय आयु होस ! पृ (६)’

:‘खदिन रे ! खाँदिन भन्छ ! कपाल दूख्यो भन्छ, यो विरामी भयो कि मेरो त आधा जिउ हुन्छ !’  
पृ (२५)

:‘अँ सासू ससुरा सबै छन् , देवर पनि छन् । देवर एक जना नन्द, पचार जना । के हाम्रो सानुले दुःख त पाउँदिन् ! त्यति जहान के ठूलो जहान हो र ? ऊ ससुरा पराई पिलसिड खाँदै बस्दै छन् । ससुरा त देउता छन् भनेको सुन्छु !’ पृ (४१)

(ग) रत्नाको संवाद :

:‘हेर त कस्तो भाँचिएको !’ पृ (२०)

: ‘हेर त यति जाबो पनि उठाएर लान नसक्ने : पछि पोइको घर गएर के गरी खान्छे ? यस्ती अभागिनीले आफ्नो भाग्य खान्छे ।’ पृ (२०)

:‘ज्वाइँ किन आएन त ? ’ पृ (५३)

(घ) हरिको नोकरको संवाद : ण

:' कहाँवाट आउनु भएको आमै ?' पृ (१४)

:' ओहो, परारको सालै परलोक हुन्भको ! बाहिर कति उभिरहनुहुन्छ आमै, म भित्र खबर गरिदिउँ है ?' पृ (१४)

(ङ) बाहुनी बूढीको संवाद

:'हाम्री सानीले कस्तो पोइ पाउँछे नि !' पृ (४१)

:'अँ सासू ससुरा, नन्द, देवर को छन् । रे ? कति जनाको जहान छ ?' पृ (४१)

:'उमेर कतिको छ ? दाँवल मिल्छ के ? कसैको भाग्यमा त उमेर नमिलिने लोग्ने स्वास्नी हिँड्दा पनि बावु पनि बावु छोरी हिँडेजस्तो देखिन्छ ।' पृ (४२)

माथिको संवादको आधारमा सानी अशिक्षित पात्र हो । उसले बाल्यकालमा दाइलाई आदर नगरेको देखिन्छ भने पछि गएर तँपाईं भने पनि अन्य ठाउँमा सम्बोधन आदर गर्ने ठाउँमा पनि आदर नभएकोले सानी अशिक्षित पात्रको रूपमा देखा पर्दछ । सामान्य लेखपढ गरे पनि व्यवहारमा देखिदैन ।

सुबेदानीको परिवारमा पढेलेखेको परिवार भए पनि सुबेदानीको व्यवहारमा अशिक्षित देखिन्छ । सुबेदानीले प्रयोग गरेको सम्बोधनका आधारमा अशिक्षित पात्र हुन आउँछ । उनले अन्य व्यक्तिसंग प्रयोग गरेको भाषाको आधारमा अशिक्षित व्यक्ति भन्न सकिन्छ । आदर सम्मान गर्ने ठाउँमा पनि आदर छैन । रत्ना सानीको आमा हो उनले प्रयोग गरेको भाषामा पनि अशिक्षित संवाद देखिन्छ । उनले ज्वाइँ जस्तो व्यक्तिलाई पनि 'त' भनेर सम्बोधन गरेको आधारमा अशिक्षित व्यक्ति भन्न सकिन्छ ।

हरिको नोकरले प्रयोग गरेको संवाद शिक्षितको छ । उसले पढेलेखेको छैन तर उसको भाषामा सचेतनाका कारण आफ्नो मालिकालाई सम्बोधन होइन मालिकलाई मान्ने आधारमा शिक्षितले प्रयोग गर्ने भाषा प्रयोग गरेको छ ।

बाहुनी बूढी अशिक्षित पात्र हुन । समाजमा रहेको परम्परालाई पछ्याउने तर सचेत व्यक्तिको रूपमा उनी देखा परेकी छिन् । परिच्छेद दशमा मात्रदेखा परेकी पात्र हुन् । व्यवहारिक जीवनमा भोगिने काम कर्तव्य प्रति उनी सचेत रहेकी छिन् । अशिक्षित भए पनि व्यवहार प्रति चासो राख्ने व्यक्तिको रूपमा उनी रहेकी छिन् । अन्य पात्रको संवाद उपन्यासमा रहेको छैन तर उनको उपन्यासमा आएको व्यवहारले अशिक्षित व्यक्तिको सङ्केत गरेको छ ।

## ६.७ निष्कर्ष :

समग्रमा 'माइतघर' उपन्यासमा रहेका पात्रलाई शिक्षित र अशिक्षित छुट्टयाउँछ उनीहरूले प्रयोग गरेको भाषा र व्यवहारलाई आधार मानिएको छ । उपन्यासमा शिक्षित पात्र भन्दा अशिक्षित पात्र बढी भएको देखिन्छ । शिक्षित पात्रको सङ्ख्या आठ रहेको छ भने अशिक्षित पात्रको सङ्ख्या बाह्र रहेको छ । यसरी उपन्यासलाई पूर्ण रूप दिइएको छ । उपन्यासमा प्रयोग भएको पात्रको भाषा दाजिलिङको स्थानीय भाषा रहेको छ भने लेखकले प्रयोग गरेको भाषा स्तरीय नेपाली मानक भाषाको रूपमा रहेको छ । उपन्यासमा समग्र नेपाली परिवेशलाई अगाडि बढाएका छन् त्यसलाई पनि यस उपन्यासले देखाउन खोजेको छ । यसले नेपाली समाज र नेपालीले भोग्ने भोगइलाई देखाउने गरेको छ ।

यसरी भाषा नै एक अर्काको इच्छा व्यक्त गर्ने माध्यम हो । मान्छे अन्तर मनका कुरालाई अरू समक्ष व्यक्त गर्ने माध्यम भाषा भएको र यसले गर्दा मानव मन भित्रका कुरालाई करू समक्ष पुऱ्याउने काम भाषाले गर्ने गर्दछ । शिक्षाले भाषालाई परिष्कार गर्दै लैजाने काम गर्दछ । शिक्षा व्यक्तिले आफ्नो जीवनलाई सजिलो बनाउनेका लागि लिनु पर्ने एक माध्यम रहेको छ जसले गर्दा समाजमा रहेका हरेक व्यक्तिलाई शिक्षा आवश्यक पर्दछ । भाषा प्रयोगमा शिक्षित र अशिक्षितले प्रयोग गर्ने शब्द फरक फरक रहेको हुन्छ । 'माइतघर' उपन्यासमा शिक्षित व्यक्तिले प्रयोग गरेको भाषा र अशिक्षित व्यक्तिले प्रयोग गरेको भाषामा फरकपन देखा परेको छ । शिक्षित व्यक्तिले प्रयोग गर्ने भाषा आदर सम्मान गर्ने र सबैले बुझ्ने सक्ने खालको छ । शिक्षित व्यक्तिले प्रयोग गरेको शब्दमा सरलता सहजताको बढी प्रयोग भएको छ । यसले समाजमा शिक्षितको भूमिकालाई बढी प्रयोगको रूपमा ल्याउन सकिन्छ । समाज भाषिक रूपमा अगाडि बढ्दै गरेको हुन्छ । भाषा परिवर्तन हुन्छ । प्रयोग गर्दै जाँदा भाषा पनि परिवर्तन रूपमा अगाडि बढ्दै जान्छ । माइतघर उपन्यासमा शिक्षित व्यक्तिले प्रयोग गरेको भाषा र अन्य व्यक्तिले प्रयोग गरेको भाषामा फरकपन देखापर्ने गरेको छ । यसले भाषा प्रयोगमा फरकपन देखा पर्ने गरेको छ । यसले गर्दा सामाजिक भाषिक प्रयोग कर्ता फरक रहेको हुन्छ ।

## अध्याय-सात

### उपसंहार र निष्कर्ष

#### ७.१ उपसंहार :

समाज र भाषा बीचको अन्तर सम्बन्धलाई केलाउने सामाजिक सम्बन्धका आधारमा भाषाको अध्ययन गर्ने ज्ञानको नयाँ विधा सामाजिक भाषा विज्ञान भाषा विज्ञानको नवीन शाखा हो । भाषाको सैद्धान्तिक स्वरूपको अध्ययनले मात्र भाषिक प्रयोजनको वर्णन र व्याख्यापूर्ण हुन नसक्ने हुनाले भाषाको व्यवहारिक पक्ष वा प्रकार्यपरक पक्ष र संरचना वा स्वरूप पक्ष दुवैको एकै साथ अध्ययन हुनु पर्ने आग्रहका साथ सामाजिक भाषा विज्ञान अर्थात् सामाजिक भाषा विज्ञानको उदय भएको मानिन्छ । भाषा वैज्ञानिक अध्ययनको क्षेत्रमा सन् १९३० को दशकदेखि १९६० को दशकमा रूपान्तरणवादी भाषा वैज्ञानिक पद्धतिहरू र १९७० को दशक देखि सामाजिक भाषा विज्ञानको महत्व पाउन थालेको देखिन्छ ।

भाषा विज्ञानको क्षेत्रमा सामाजिक भाषा विज्ञानको अध्ययन क्षेत्र व्यापक रहेको छ । यसको मुख्य अध्ययनलाई पूर्णता दिन 'छ' अध्यायमा विभाजन गरी तिनीहरूलाई क्रमशः शोधपत्रको परिचय, साहित्यकार लैनसिंह वाड्देलको साहित्यिक रचना धर्मिताको परिचय, उपन्यासको सैद्धान्तिक परिचय, 'माइतघर' उपन्यासको औपन्यासिक मानका तत्वका आधारमा विश्लेषण, सामाजिक, भाषिक, सैद्धान्तिक आधारमा माइतघर उपन्यासको निरूपण, उपसंहार र निष्कर्ष गरि व्यवस्थित गरिएको छ । 'माइतघर' उपन्यासको सामाजिक भाषिक अध्ययनको क्रममा प्राप्त कुरालाई निष्कर्षको रूपमा निम्नानुसार प्रस्तुत गरिएको छ ।

लैनसिंह वाड्देलद्वारा लिखित उपन्यास हो 'माइतघर' । सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासको रूपमा रहेको छ माइतघर उपन्यास । प्रगतिशिल दृष्टिकोणले लेखिएको छ । यस उपन्यासमा उपन्यासकार वाड्देलले दार्जिलिङको नेपाली समाजको तीन पुस्ताको र युवा युवतीका पुस्ताको प्रतिनिधित्व गरेका छन् । यता आमा बुवाको भूमिका निर्वाह गर्ने नरनारीले प्रौढ पुस्ताको प्रतिनिधित्व गरेका छन् । उपन्यासको कथावस्तुको खास विकास कार्यमा युवा युवतीको विशेष भूमिका छ । यहाँ निर नयाँ पुस्ता र पुरानो पुस्ता बीच भएको वैचारिक भिडन्त एकातिर देखिन्छ भने अर्को तिर क्रान्ति अधि र पछिको भारत र नेपालको

सङ्क्रमणकालीन सामाजिक स्थितिको चित्रण पनि भएको पाइन्छ । उपन्यासको आदिदेखि अन्त्यसम्म आमाहरूको रूपमा रत्ना र सुवेदानी पुरानो सामाजिक विचारधारा देखिन्छ । सुरुदेखि अन्त्य सम्म सानी र हरिलाई प्रमुख रूपमा अगाडि सारिएको छ । उनीहरूमा विकसित भएको प्रणयबाट प्रेम सम्बन्धित नवीन दृष्टिकोण देखाउन खोजेका छन् तर एकै घरमा बस्नु परेकाले बनाइउका दाजु बहिनीको सामाजिक दायित्व बोध यहाँ परम्परागत बाधा अडचनको रूपमा आएको छ । यी दुई कुरालाई नै यस उपन्यासमा देखाएको छ ।

‘माइतघर’ उपन्यास वर्गीय आधारमा विभेदिन छैन । यस उपन्यासमा रहेका पात्रहरूमा वर्गीय भिन्नता रहेको छैन । सबै पात्रहरू समान रहेका छन् । हरि सानी सुवेदानी रत्ना प्रमुख पात्रका रूपमा रहेका छन् । उनीहरू एउटै समाज र परिवेशमा हुर्के बढेका पात्रको रूपमा रहेका छन् । भाषिक रूपमा लेखकले मानका भाषाको प्रयोग गरेका छन् भने दार्जिलिङ्गको स्थानीय भाषाको पनि भएको छ । स्तरीय भाषाको प्रयोग भएको पाइन्छ र लेख्य भाषा स्तरीय नेपाली भाषिकासँग कथ्य नेपाली भाषाको पनि प्रयोग भएको छ । स्थानिय भाषाको परिवेशले प्रभाव पारेको छ । उमेरका आधारमा पनि भाषा पनि फरक रहेको पाउन सकिन्छ । उमेरले पनि भाषा प्रयोगको क्षेत्रमा भिन्नता रहेको छ । उपन्यासमा रहेका पात्रले उमेरको आधारमा भाषाको प्रयोग गरेका छन् । उपन्यासमा रहेका पात्रहरू फरक परिवेशका छैनन् । एउटै समाज एउटै वरीपरीको भएकाले जातिय आधारमा भाषा प्रयोग भएको छैन ।

लैङ्गिक आधार ‘माइतघर’ उपन्यासको भाषामा स्पष्ट फरक भएको पाइन्छ । पुरूषले प्रयोग गर्ने भाषा र महिलाले प्रयोग गर्ने भाषामा स्पष्ट रूपमा फरक देखिने गरेको छ । महिलाले प्रयोग गर्ने भाषा र पुरूषले प्रयोग गर्ने भाषा विभेदीकरण छ । पुरूष पात्र हरि सुबेदारले प्रयोग र महिला पात्रका रूपमा रहेका सानी, रत्ना सुवेदानीले प्रयोग गरेको भाषामा विभेदीकरण देखिन्छ । यस्तो विभेद ध्वन्यात्मक गुण रङ्ग विभेद गर्ने क्षमता र शब्द भण्डारका दृष्टिमा एवं प्रयोगपरक भेदहरू समेत देखिएका छन् ।

शैक्षिक दृष्टिकोणले माइतघर उपन्यास लेख्य रूपमा स्तरीय नेपाली भाषाको मानक रूपको प्रयोग भएको छ भने कथ्य रूपमा दार्जिलिङ्गको स्थानीय भाषाको प्रयोग भएको छ । पात्रगत रूपमा हरिले प्रयोग गरेको भाषा शिक्षितले प्रयोग गर्ने भाषाको रूपमा रहेको छ । माइतघर उपन्यासमा शिक्षित व्यक्तिको भाषा र अशिक्षित व्यक्तिको मात्रामा मात्र भेद रहेको भाषा प्रयोगमा विभेदीकरण पाइदैन । भाषा प्रयोगमा शब्द चयन प्रयोग सरल किसिमको

रहेको छ । कतै अलङ्कार छन्दको पनि प्रयोग गरेको पाईन्छ । भाषामा मानक रूपको प्रयोग रहेको छ । परिष्कार पूर्ण रहेको छ माइतघर उपन्यास । यस उपन्यासमा भाषाको सरलीकरण रहेको छ ।

## ७.२ निष्कर्ष :

समग्रमा सामाजिक प्रगतिशील उपन्यास माइतघर समाजमा रहेका यथार्थ घटनालाई विषयवस्तु बनाएको उपन्यास हो । माइतघरले प्रवासी नेपाली समाजको चित्र उतारेको छ । यसमा दार्जिलिङ्गको राजावाडी गाउँमा बस्ने सुबेदारको परिवार र रत्नाको परिवारसँग गाँसिउको घटना सन्दर्भमा आएका छन् । दुबै परिवारका सदस्यहरू बीच घटेका घटनाहरूका आधारमा उपन्यास सरल र स्वभाविक जस्तो देखिएको छ । असफल प्रेमलाई दर्शाउनु यस उपन्यासको लक्ष्य रहेको छ ।

निष्कर्षमा 'माइतघर' उपन्यास प्रगतिशील दृष्टिकोणले लेखिएको वाडदेलेको यो दोस्रो उपन्यास हो । प्रेम प्रणयमा आधारित कथावस्तु भएपनि कर्तव्य र प्रेमका अधिलिखित कर्तव्य नै बलवान हुन्छ र त्यो समाजका निमित्त औपचारिकता पनि हो भन्ने कुरा यसमा देखाएको छ । साथै विवाहित नारी र सौता पाएकी अवहेलित नारीले अनेक त्रासपूर्ण घटनाको सामना गर्नु परे पनि लोक मर्यादाका लागि जीवन गुजारा गर्नु परेको यथार्थ चित्रण यसमा गरिएको छ । 'माइतघर' उपन्यास वर्गीय आधारमा पात्रको वर्गीकरणमा मध्यम वर्ग र निम्न वर्ग रहेका छन् । भाषा प्रयोगगत आधारमा लैङ्गिक भिन्नता रहेको छ । उमेरका आधारमा बाल, युवा र प्रौढ रहेका छन् । शिक्षाका आधारमा शिक्षित र अशिक्षित पात्रहरू रहेका छन् । उपन्यासमा असफल प्रेमलाई दर्शाउनु र करुण पक्ष वा त्रासद जन-जीवनको चित्रण गरिएको छ ।

### क) असफल प्रेमलाई दर्शाउनु :

दुवै पात्र एक अर्कामा अनुरक्त देखिए पनि दुबै मध्ये कसैलाई पनि सामाजिक बन्धनलाई तोड्ने सामर्थ्य नभएको, अझ हरिमा त भन हिम्मत नभएका कारण दुवैको बीचको प्रेम असफलतामा पुगेको हुन्छ । यस किसिमको घटना सन्दर्भका आधारमा प्रस्तुत उपन्यासले असफल प्रेमलाई देखाउने काम गरेको छ ।

ख) करूण पक्ष वा त्रासद पक्षलाई दर्साउनु :

उपन्यास चित्र त्रासदपूर्ण अथवा कारूणिक अवस्था सिर्जना हुनुमा चारिचित्र कमजोरी सामाजिक बन्धन नैतिक भीरूता र नियति नै प्रमुख कारण रहेको तथ्य पनि अधि सारिएको देखिन्छ । उपन्यासमा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, प्राकृतिक रमणीयता र मानवीय संवेदनालाई पनि प्रष्ट रूपमा देखाउने काम गरिएको छ ।

७.३ सम्भाव्य शीर्षकहरू :

- क) 'माइतघर' उपन्यासमा पाइने सामाजिक भाषिक अध्ययन ।
- ख) 'माइतघर' उपन्यासमा पाइने आञ्चलिक पक्षको विश्लेषण ।
- ग) 'माइतघर' उपन्यासमा पाइने सांस्कृतिक भाषिक पक्षको अध्ययन ।

## सन्दर्भ ग्रन्थसूची

- क) अधिकारी, रस राज र हरिहर घिमिरे (२०५६), नेपाली समाज र संस्कृति काठमाडौं : विद्यार्थी पुस्तक भण्डार ।
- ख) अधिकारी, हेमडराग (२०६७), सामाजिक र प्रायोगिक भाषा विज्ञान, काठमाडौं : रत्न पुस्तक भण्डार ।
- ग) नेपाल, धनमाया (२०६६), सिन्धुपाल्चोक जिल्लामा अध्ययनरत कक्षा सातका विद्यार्थीको कक्षागत समाज भाषिक अध्ययन (अप्रकाशित) स्नातकोत्तर शोधपत्र नेपाली भाषा शिक्षा विभाग कीर्तिपुर, काठमाडौं ।
- घ) पोखरेल, यशोदा (२०६७), दाङ जिल्लाको कक्षा ८ मा अध्ययनरत विद्यार्थीको कक्षागत समाज भाषिक अध्ययन (अप्रकाशित) स्नातकोत्तर शोधपत्र, नेपाली भाषा शिक्षा विभाग कीर्तिपुर, काठमाडौं ।
- ङ) प्रधान, नरेन्द्रराज प्रसाई (२०६३), वाङ्देलको जीवनयात्रा, दो.सं. काठमाडौं : एकता प्रकाशन ।
- च) बराल ईश्वर (२०३९), आख्यानको उद्भव काठमाडौं : साभा प्रकाशन ।
- छ) भण्डारी, पारसमणी (२०६५), सामाजिक तथा मनोभाषा विज्ञान काठमाडौं विद्यार्थी पुस्तक भण्डार ।
- ज) भण्डारी, पारसमणि (२०५४), प्रायोगिक भाषा विज्ञान केही पक्ष काठमाडौं : विद्यार्थी पुस्तक भण्डार ।
- झ) लामिछाने, यादवप्रकाश (२०६३), नेपाली कथा उपन्यास सिद्धान्त र समीक्षा, काठमाडौं : विद्यार्थी पुस्तक भण्डार ।
- ञ) वाङ्देल, लैनसिंह (२०६७), चौविसौ संस्करण) माइतघर, काठमाडौं : रत्न पुस्तक भण्डार ।
- ट) वाङ्देल, लैनसिंह (२०६७), 'माइतघर' काठमाडौं, रत्नपुस्तक भण्डार ।
- ठ) शर्मा केदार प्रसाद र माधव प्रसाद पौडेल (२०६७), नेपाली भाषा र साहित्य शिक्षण काठमाडौं : विद्यार्थी पुस्तक भण्डार ।

## शब्दकोश

- १) अनुभवी प्राध्यापकहरू (सम्पा.) सरल नेपाली शब्दकोश काठमाडौं : रत्नपुस्तक भण्डार, २०५४ ।
- २) त्रिपाठी, बासुदेव र अन्य (सम्पा.) नेपाली बहुत् शब्दकोश काठमाडौं : ने.रा.प्र.प्र., २०५२ ।
- ३) शर्मा, बालचन्द्र (सम्पा.) नेपाली शब्दकोश, काठमाडौं : रोयल नेपाल एकेडेमी, २०१९ ।